



# सुत्तनिपातो

राहुलसङ्घिञ्चानेन  
आनन्दकोसल्लानेन  
जगदीसकस्सपेन च  
सम्पादितो

उत्तमभिक्षुना पकासितो

२४८१ बृद्धवच्छरे (१९३७ A. C.)



## प्राङ्निवेदनम्

पालिवाङ्मयस्य नागरागरे मुद्रण अत्यपेक्षितमिति नाञ्जित्तिचर भारता येतिहासविबिदिषुणाम् । सम्स्कृतपाणिभाषयोरनिसामीप्यादपि यन् परस्महमेव जिनामुभयं सस्कृतज्ञेभ्य पाणिग्रन्थरास्ययगाहन दुष्परमिव प्रतिभाति तत् त्विपि भन्नादेव । एतदर्थमयमस्माकमभिनव प्रयासः । अत्र नूतना अपि पाठभन्ना निघषा दत्तासीत्स्माक मनीषा पर कालात्ययभीत्याऽत्र प्रथमभागे धम्मपदान् यत्र न तन् वृत्तमभूत् । अपाटिण्णपु सन्निगणिता पाठभन्ना । प्रायः Pali Text Society मुद्रितेभ्यो ग्रन्थेभ्य उद्धृताः ।

अथसाहाय्य जिना अस्मत्समीहितं हृदि निगूहितमेव स्यात् । तत्र भदन्तेन उत्तमम्यविरेण साहाय्यं प्रणय महदुपकृतमिति निबदयति—

कान्तिवज्जुल्लवाङ्मया  
२४८० युद्धाब्द

राहुल साहृत्यायन  
आनन्द कौस्त्यायन  
जपदीन काश्यपश्च



## सुत्त-सूची

पिट्ठको		पिट्ठको	
१—उरगवग्गो	१	२३—राहुल-सुत्तं	३४
१—उरग-सुत्त	१	२४—वगीस-सुत्त	३५
२—धनिय-सुत्त	२	२५—सम्भापरिग्वाजनिप-सुत्तं	३६
३—जगविताण-सुत्त	४	२६—धम्मिक-सुत्त	३७
४—कसिभारद्वाज-सुत्त	७	३—महावग्गो	३८
५—चुव-सुत्त	९	२७—पब्बज्जा-सुत्त	३९
६—पराभव-सुत्त	१०	२८—पपाण-सुत्त	४०
७—थत्तल-सुत्त	१२	२९—सुभासित-सुत्त	४१
८—मेत्त-सुत्त	१५	३०—सुन्दरिभाट्ठाव-सुत्त	४२
९—हेमवत-सुत्त	१५	३१—माघ-सुत्तं	४३
१०—आळवक-सुत्तं	१८	३२—समिय-सुत्त	४४
११—विजय-सुत्तं	१९	३३—सेल-सुत्त	४५
१२—मुनि-सुत्तं	२०	३४—सत्त-सुत्त	४६
२—सूळवग्गो	२३	३५—वासेट्ठ-सुत्त	४७
१३—रतन-सुत्त	२३	३६—बोवाल्ल-सुत्त	४८
१४—आमगघ-सुत्त	२४	३७—नाळ-सुत्त	४९
१५—हिरि-सुत्तं	२६	३८—द्वयानुत्तर-सुत्त	५०
१६—महामंगल-सुत्त	२६	४—अट्ठकवग्गो	५१
१७—सूचिलोम-सुत्तं	२७	३९—बान-सुत्त	५२
१८—धम्मवरिय-सुत्तं	२८	४०—माळ-सुत्त	५३
१९—आहणधम्मिक-सुत्त	२९	४१—माळ-सुत्त	५४
२०—नावा-सुत्तं	३२	४२—सुत्त-सुत्त	५५
२१—किसील-सुत्तं	३३	४३—सुत्त-सुत्त	५६
२२—उट्ठान-सुत्तं	३४	४४—सुत्त-सुत्त	५७

	पिट्ठको		पिट्ठको
४४—जरा-सुत्त	८८	५८—पुण्णवमाणवपुच्छा	१११
४५—तिस्समेत्तेय्य-सुत्त	८९	५९—मेत्तगूमाणवपुच्छा	११२
४६—पसूर-सुत्त	९०	६०—घोतकमाणवपुच्छा	११३
४७—मागविप-सुत्त	९१	६१—उपसीवमाणवपुच्छा	११४
४८—धुराभेद-सुत्त	९३	६२—न वमाणवपुच्छा	११५
४९—कल्हविवाद-सुत्त	९४	६३—हेमकमाणवपुच्छा	११६
५०—बूळवियूह-सुत्त	९६	६४—तोदेव्यमाणवपुच्छा	११७
५१—महावियूह-सुत्त	९७	६५—कप्पमाणवपुच्छा	११७
५२—तुवटठक-सुत्त	९९	६६—जतुक्खिमाणवपुच्छा	११८
५३—अत्तदण्ड-सुत्त	१००	६७—भद्रायुधमाणवपुच्छा	११९
५४—सारिपुत्त-सुत्त	१०२	६८—उदयमाणवपुच्छा	११९
५—पारायणवग्गो	१०५	६९—पोत्तालमाणवपुच्छा	१२०
५५—यत्थुगाया	१०५	७०—मौघराजमाणवपुच्छा	१२०
५६—अजितमाणवपुच्छा	११०	७१—विगियमाणवपुच्छा	१२१
५७—तिस्समेत्तेय्यमाणवपुच्छा	११०	७२—पारायणसुत्त	१२२

## सुत्तनिपातो

### उरगवग्गो

( १—उरग-सुत्त १।१ )

यो<sup>१</sup> उप्पत्तिं विनत्ति कोषं विसत्त<sup>२</sup> सप्पविसज्ज ओसधेहि ।  
मो भिक्खु जहाति ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥१॥  
या रागमुदच्छिदा अस्स भिक्खुप्फज्ज सरोरह विगम्ह ।  
सो भिक्खु जहानि ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥२॥  
यो तण्हमुच्छिन्ना असेस सरित्तीक्ष्णमर विसोस<sup>३</sup> पिचा ।  
मो भिक्खु जहानि ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥३॥  
यो मानमुदब्बधी असेस नल्लेत्तुज्ज सुदुब्बल महोघो ।  
सो भिक्खु जहानि ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥४॥  
यो नाज्झगमा भयेसु सार विचिन्त पुप्फमिच्च उदुबरेत्तु ।  
सो भिक्खु जहाति ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥५॥  
यस्स<sup>४</sup> न्तरतो न सन्ति कोपा इति मयाभवत्त च वीतिवत्तो ।  
सो भिक्खु जहाति ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥६॥  
यस्स वितवरा विपू<sup>५</sup> पिना अज्यत्त सुविक्कपित्ता अससा ।  
मा भिक्खु जहानि ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥७॥  
यो नाच्च<sup>६</sup> सारी ७ पच्चसारी राच्च अच्च<sup>७</sup> गमा इम पपञ्च ।  
सो भिक्खु जहाति ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥८॥  
या नाच्चसारी न पच्चसारी राच्चं विनयमिदंति आत्वा लोस ।  
मा भिक्खु जहानि ओरपार उरगो जिण्णमिव तच्च पुराण ॥९॥

<sup>१</sup> C यो ये

<sup>२</sup> M विसट

<sup>३</sup> C. विसेमपित्वा

<sup>४</sup> M विदुसिता

<sup>५</sup> M —नच्चसारी

<sup>६</sup> M अज्ज



यो नाचनमारी न पचनमारी मज्ज विपयमिदं हि बीजभासा ।  
 मा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं ॥१०॥  
 यो नाचनमारी न पचनमारी मज्ज विपयमिदं हि बीजभासा ।  
 मा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं ॥११॥  
 यो नाचनमारी न पचनमारी मज्ज विपयमिदं हि बीजभासा ।  
 मा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं ॥१२॥  
 यो नाचनमारी न पचनमारी मज्ज विपयमिदं हि बीजभासा ।  
 मा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं ॥१३॥  
 यस्मात्पुण्यं न सति कचि मूला अनुसन्धाय ममूहताय ।  
 सा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं ॥१४॥  
 यस्मात्पुण्यं न सति कचि ओर आगमताय पचायाय ।  
 सा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं ॥१५॥  
 यस्मात्पुण्यं न सति कचि विविजघाय पचाय हपुराणा ।  
 सा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं ॥१६॥  
 यो नीवरण पहाय पच अविषा निण्णवपययो विमत्तये ।  
 सा भिक्खु जहाति आरुपायं उरयो विण्णमिदं तथं पुराणं हि ॥१७॥  
 उरगमुत्तं निहितं ।

### ( २—धनिय सुत्त ११२ )

पक्कवन्तो दुट्ठ<sup>१</sup> पाराहमस्मि (इति धनिया गोपो ।) अनुत्तीरेमहिंया समानपातो ।  
 इत्ता कुटि आह्ति गोति अथ चे पत्थ<sup>२</sup> यसी पवस्स देव ॥१॥  
 अवराधनो विग<sup>३</sup> तविलोहमस्मि (इति भगवा ।) अनुत्तीरेमहिंयकरत्तिपातो ।  
 रिग्ग कुटि निव्वुतो गोति अथ चे पत्थ<sup>४</sup> यसी पवस्स देव ॥२॥  
 अघवमवसा न विज्जरं (इति धनिया गोपो ।) उच्छे<sup>५</sup> हल्लह्णिण चरन्ति गावा ।  
 वुण्ठि<sup>६</sup> पि सहय्य आगतं अथ चे पत्थ<sup>७</sup> यसी पवस्स देव ॥३॥  
 वद्धा हि भिसा<sup>८</sup> मुमलना (इति भगवा ।) निण्णो पार<sup>९</sup> यतो विनय्य ओय ।  
 अत्यो भिधिया न विज्जति अथ च पत्थ<sup>१०</sup> यसी पवस्स देव ॥४॥

<sup>१</sup>M उरगता      <sup>२</sup>C, B अनीघो      <sup>३</sup>M ° खितो      <sup>४</sup>M  
 पत्थयसि      <sup>५</sup>C ° योलो      <sup>६</sup>M गच्छ      <sup>७</sup>M अभिसि      M  
 ° पाता      <sup>८</sup>M पारयता

गोपी मम अस्सवा अग्रेला (इति धनियो गोपो ।) दीघरत्त सवासिया मनापा ।  
तस्सा न मुणामि किंचि पाप अथ चे पत्थयसी पवस्स देव ॥५॥

चित्त मम अस्मव विमुत्त (इति भगवा ।) दीघर<sup>१</sup>त्त परिभावित मुत्त ।  
पाप पन मे न विज्जति अथ चे पत्थयसी पवस्स देव ॥६॥

अ<sup>२</sup>त्तेवतनभतोऽहमस्मि (इति धनियो गोपो ।) पुत्ता च<sup>३</sup>मे सगानिया अरोगा ।  
तेस न मुणामि किंचि पाप अथ चे प<sup>४</sup>थयमी पवस्स देव ॥७॥

नाऽह<sup>५</sup> भतवा<sup>६</sup>स्मि वस्मचि (इति भगवा ।) निब्बिठेन चरामि सब्बलान्हे ।  
अत्थो भनिया<sup>७</sup> न विज्जति अथ चे पत्थयमी पवस्स देव ॥८॥

अत्थि वसा अत्थि धेनुपा (इति धनिया गोपो ।) गोधरणियो पवणि<sup>८</sup>यो<sup>९</sup>पि अत्थि ।  
उसभोऽपि गव<sup>१०</sup>पनी च अत्थि अथ च पत्थयमी पवस्स देव ॥९॥

नत्थि वसा नत्थि धेनुपा (इति भगवा ।) गोधरणियो पवणियोऽपि नत्थि ।  
उसभो<sup>११</sup>पि गवप तीध नत्थि अथ चे पत्थयसी पवस्स देव ॥१०॥

खीला<sup>१२</sup> निव्वात्ता अमपवेधी (इति धनिया गोपो ।) दामा मुजमया नवा सुसठाना ।  
न हि सक्कि<sup>१३</sup>न्ति धेनुपाऽपि छेतु अथ चे पत्थयसी पवस्स देव ॥११॥

उसभोरिव छत्व<sup>१४</sup> वधनानि (इति भगवा ।) नागो पूतिल्ल<sup>१५</sup>व दा<sup>१६</sup>ल्यित्वा ।  
नाऽह पुन उपेस्स<sup>१७</sup> गभसेय्य, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव ॥१२॥

निन्त च थल च पूरयन्तो महामेषो पावस्सि तावदेव ।

मुत्वा देवस्स वस्मतो इममत्थ धनियो अभासथ ॥१३॥

लामा वत नो अनप्पवा ये मय भगवन्त अहसाय ।

सरण तमुपेय चक्खुम सत्था नो होहि तुव महामुनि ॥१४॥

गोपी च अह च अस्सवा ब्रह्मचरिय सुगते चरा<sup>१८</sup>मस ।

जातिमर<sup>१९</sup>णस्स पारगा<sup>२०</sup> दुक्खस्सन्तवरा भवामसे ॥१५॥

नदत्ति पुत्तेहि पुत्तिमा (इति भारो पापिमा ।) गोमि<sup>२१</sup>को गोहि तथव नन्दनि ।

उपधी हि नरस्स नन्दना न हि सो न<sup>२२</sup>ति या निरुपधि ॥१६॥

<sup>१</sup> M जि<sup>०</sup>    <sup>२</sup> M भने    <sup>३</sup> M चेमे    <sup>४</sup> M भटको    <sup>५</sup> M

भटिया सु० भटियाऽपि पि    <sup>६</sup> M पवेनियो    <sup>७</sup> M ०ति    <sup>८</sup> M ०ति च

<sup>९</sup> C विट्ठा M विट्ठा    <sup>१०</sup> M सविसस्सति    <sup>११</sup> M छेत्या

<sup>१२</sup> C दाळ० M पदालणित्वा    <sup>१३</sup> M उपेय्य    <sup>१४</sup> B धरेमसे

इतिऽपि पाठ विरुप्येति ।    <sup>१५</sup> M जातिजरामरणस्स    <sup>१६</sup> M ०गू

<sup>१७</sup> M गोपियो, B गोमियो

मायनि पुत्तहि पणिमा (इति भयसा ।) गोवि<sup>१</sup>की गोहि तपय गोवि<sup>२</sup> ।  
उत्तरी हि मरुम मायना ७ हि मा मायनि या विहृती<sup>३</sup> ॥१७॥

धनिपुत्तं निदिता ।

( ३—संगविमाण-मुत्त ११२ )

सप्यगु भूतगु तिपाय दग्गं अविहृत्त<sup>१</sup> अज्जत्त<sup>२</sup> हि तत् ।  
न पुत्तमिच्छत्त पुत्ता सहाय एका चर संगविमाणकण्यो ॥१॥  
समगगानरम भय<sup>३</sup>णि रात्त गोहा<sup>४</sup>नयं दुक्कमि<sup>५</sup> पटो<sup>६</sup> ।  
आशनय रा<sup>७</sup>यं पवत्तमाना एको चर संगविमाणकण्यो ॥२॥  
मित्तं मूहज्जे अनूयमाना हागनि अ<sup>८</sup>यं पटि<sup>९</sup>वट्ठनिता ।  
एत्तं भम सन्धव पवत्तमाना एका चर संगविमाणकण्यो ॥३॥  
यगा विगा<sup>१०</sup>य<sup>११</sup> यया वित्तो पुत्तगु दारेणु च या अपे<sup>१२</sup>म्मा ।  
यगा<sup>१३</sup>वगीवा<sup>१४</sup>व अमज्जमाना एका चरे संगविमाणकण्यो ॥४॥  
मिगो अरज्जमि<sup>१५</sup> मया अक्कदो यनिष्ठ<sup>१६</sup> वच्छनि गो<sup>१७</sup>राय ।  
विज्ज<sup>१८</sup> नगा सरित्त<sup>१९</sup> पवत्तमाना एका चरे संगविमाणकण्यो ॥५॥  
आमत्तना<sup>२०</sup> हाति सहायम<sup>२१</sup>म गम<sup>२२</sup> एत्तं गमत चारि<sup>२३</sup>पाय ।  
अ<sup>२४</sup>नभिज्जित मेरित्त<sup>२५</sup> वेक्कमानो एको चर संगविमाणकण्यो ॥६॥  
मिड्ढा रत्ती होति सहायमज्ज पुत्तगु च रिपु<sup>२६</sup> होति पम<sup>२७</sup> ।  
मियविप्पयोग विजिगु<sup>२८</sup>त्तमाना एका चर संगविमाणकण्यो ॥७॥  
चातुदिमा अप्पटिघो च होति सन्तुत्तमानो दत्तरीनरन ।  
पणिग्गयान मणिना अल्लभी<sup>२९</sup> एत्तो चर संगविमाणकण्यो ॥८॥  
सुम्मगहा पव्वजिना<sup>३०</sup>पि एके अयो गग्गु<sup>३१</sup> परभावसन्ता ।  
अप्पोसुक्को परपुत्तगु हत्वा एको चरे संगविमाणकण्यो ॥९॥

<sup>१</sup> M गोविंकी, गोपियो

<sup>२</sup> N अहेठय

<sup>३</sup> h भवति स्नेहो

<sup>४</sup> M पटिवधचित्तो

<sup>५</sup> M °च

<sup>६</sup> C अपेक्षा

<sup>७</sup> C °वल्लारो

व०—वसवळीरो M वसकलीरो

M विज्ज

<sup>८</sup> निदे०—मेरि त

<sup>९</sup> M °न्तणा <sup>१०</sup> M वासेय्यठाने

<sup>११</sup> M अनतिच्छित्त, अनभिच्छित्त

<sup>१२</sup> वु०—अल्लभी

ओरापयित्वा गिहिव्यञ्जनानि ससीन<sup>१</sup>पत्तो यथा बोविटारो ।  
 छेवान वीरो गिहिवधनानि एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥१०॥  
 सच्च लभय निपक्व सहाय सद्धिचर साधुविहारि<sup>२</sup> धीर ।  
 अभिमुय्य सग्गानि परिस्सयानि चरय्य तनत्तमनो सतीमा ॥११॥  
 नाथ अभय निपक्व सहाय सद्धि चर साधुविहारि धीर ।  
 राजाऽव रट्ठ विजित पहाय एको चरे खग्गविमाणकप्पो ॥१२॥  
 अद्धा पसमाम सहायमपद सेट्ठा समा सविनब्धा सहाया ।  
 एतं अन्द्धा अनवज्जभोजी<sup>३</sup> एसा चरे खग्गविसाणकप्पो ॥१३॥  
 दिग्वा सुवण्णम्म पभस्सरानि वम्मारपुत्तेन मुनिट्टितानि ।  
 सपट्टमा<sup>४</sup>नानि दुवे भुजस्मि एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥१४॥  
 एव दुनियेन<sup>५</sup> सहा<sup>६</sup> मम<sup>७</sup> स्स वाषाभिलापा अभिसज्जना वा ।  
 एतं भय आर्यानि पक्खमानो एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥१५॥  
 कामा हि चित्रा मधुरा मनोरमा विरूपरूपन मयन्ति चित्त ।  
 जादीनव कामगुणमु दिग्वा एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥१६॥  
 ईती च गण्डो च उपह्वो च रोगा च सल्ल च भय च मज्झ ।  
 एतं भय कामगुणमु दिग्वा एको चरे खग्गविमाणकप्पो ॥१७॥  
 मीत च उण्ह च खुद<sup>८</sup> पिपाम वानातपे इससिरसप च ।  
 सग्गानि पत्तानि अभिगभवित्वा एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥१८॥  
 नागोऽय यूथानि विवज्जयित्वा सज्जानत्तथो पदुमी उट्ठारो ।  
 यथाभिरन्त विहरे<sup>९</sup> अरज्जे<sup>१०</sup> एको चरे खग्गविमाणकप्पो ॥१९॥  
 अट्टान<sup>११</sup> तं गगणिक्कारतस्म य पस्सये<sup>१२</sup> सामयिक<sup>१३</sup> विमुत्ति ।  
 भादिच्चत्तधुस्म वया नितम्म एको चरे खग्गविमाणकप्पो ॥२०॥  
 निट्ठिविमूकानि<sup>१४</sup> उपात्तिवत्ता पत्तो नियामं पट्ठिद्वमग्गो ।  
 उण्णन्निजा<sup>१५</sup> णाऽग्गिह सनञ्जनय्यो एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥२१॥  
 निलोत्तपो निक्कुत्तो निष्पिपामा निम्मक्खो निदन्तवमावमाहो ।  
 निरागया<sup>१६</sup> मव्वत्ताव भवित्वा एको चरे खग्गविमाणकप्पो ॥२२॥

<sup>१</sup> M सभिन्न<sup>०</sup>, सच्छिन्न<sup>०</sup>    <sup>२</sup> M धीरो    <sup>३</sup> बु-<sup>०</sup>रि    <sup>४</sup> M °जि  
<sup>५</sup> निहे-<sup>०</sup>सपट्टयनानि    <sup>६</sup> निहे-<sup>०</sup>दुतीयेन    <sup>७</sup> M सह    M ईनि  
<sup>८</sup> M खुद    <sup>९</sup> M विहरं    <sup>१०</sup> M अट्टान    <sup>११</sup> M य स्सयेप नि-  
 (Frankc)    <sup>१२</sup> M सामयिकं, सामयिक    <sup>१३</sup> M कु-<sup>०</sup>विमुत्तानि  
<sup>१४</sup> M °रन्ति    <sup>१५</sup> निहे-<sup>०</sup>निरामतो

गङ्गा गङ्गायै नमः ॥ १ ॥  
 मयं न ॥ २ ॥ गङ्गायै नमः ॥ ३ ॥  
 यद्गङ्गायै नमः ॥ ४ ॥  
 अञ्जनाय नमः ॥ ५ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ ६ ॥  
 विष्णुगङ्गायै नमः ॥ ७ ॥  
 गुप्तं च नरं गङ्गायै नमः ॥ ८ ॥  
 द्विजानं चामां गङ्गायै नमः ॥ ९ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १० ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ ११ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १२ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १३ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १४ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १५ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १६ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १७ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १८ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ १९ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २० ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २१ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २२ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २३ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २४ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २५ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २६ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २७ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २८ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ २९ ॥  
 गङ्गायै नमः ॥ ३० ॥

१ M लिङ्गारति      २ निद्रे०-त्रिभूसूत्राना      ३ R वपवानि ख  
 ४ M यतोभिक्कानि (द्र० MI 37 <sup>25</sup>note)      ५ C गलो, M गण्ठो  
 गण्ठो      ६ निद्रे०-मुत्तिमा      ७ M पदानभित्वा Fsb Nid सादालभित्वा  
 ८ C जाल भेत्वा, M जाल भित्वा जालव भित्वा      ९ R ०चखलू  
 १० C सखलू०      ११ निद्रे०-व्य०      १२ वृ०-म०-स्नेह      १३ M दुखल  
 १४ M व०-सोमनस्सदोमनस्स

पटिसत्त्थानं ज्ञानमरिञ्चमानो घम्ममु निच्च अनुघम्मचारी ।  
 आदीनव मम्मसिता भवेमु एवो चरे खग्गविसाणकप्पो ॥३५॥  
 तण्हमय पयय अप्पमत्तो जनत्तमूगा सुनवा सतीमा ।  
 सत्थानधम्मा नियतो पघानवा एस्सो चरे खग्गविसाणकप्पो ॥३६॥  
 सीहाऽव सदसु असन्तसतो वातोऽव जालम्हि असज्जमाना ।  
 पटुमऽव तोयन अलिप्पमाना<sup>१</sup> एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥३७॥  
 मीहो यथा दाठवत्री पसह्म राजा मित्तान अभिमुध्यचारी ।  
 मेवेथ पन्तानि सेनासनानि एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥३८॥  
 भेत्त उपेक्ख वरुण विमुत्ति जातेवमानो भुन्ति च कालं ।  
 सब्बन लोकेन अविस्सज्जमाना एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥३९॥  
 राग च दोस च पहाय भाह सत्तलपित्वा सयाज्जनानि ।  
 असन्तस जीविनसरयम्हि एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥४०॥  
 भजन्ति मेवन्ति च कारणत्था<sup>२</sup> निक्कारणा दुल्लभा अज्ज मित्ता ।  
 अत्तट्ठपज्जा<sup>३</sup> अमुची<sup>४</sup> मनुस्सा एको चरे खग्गविसाणकप्पो ॥४१॥

खग्गविसाणसुत्तं निद्धितं ।

### ( ४—कसिभारद्वाज सुत्त १।४ )

एकं म सुन । एकं समयं भगवा भगवसु विहरति दमिवणागिर्गिस्स  
 एवनाट्ठाव ब्राह्मणगामे । तन खो पन समयेन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स पण्ड-  
 मत्तानि तद्दालसत्तानि पयुत्तानि होन्ति कप्पका<sup>१</sup> । अथ खो भगवा पुत्र-  
 निवारत्वा पत्तचीवरमाणा येन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स कम्मत्ता  
 वमि । तेन खो पन समयेन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स परिवेसना  
 अथ खो भगवा यन परिवेसना तेनुपसवमि उपसवमित्वा एवमन्त  
 अहमा खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्त पिण्डाय ठितं । निस्स-  
 त्तप्योच-अहं खो समण । कसामि च वपामि च कसित्वा च वपित्वा च  
 त्वज्जिपि समणं वमस्सु च वपस्सु च कसित्वा च वपित्वा च भुज्जम्ह-  
 अहंपि खो ब्राह्मण कसामि च वपामि च कसित्वा च वपित्वा च

<sup>१</sup> C, M अलिप्प° (इ० २१५)      <sup>२</sup> M पदान्ति-  
 सदावित्थान    <sup>३</sup> M °त्ता    <sup>४</sup> M असत्थ-    <sup>५</sup> निह-

न खो पन मय परगाम भोना गानमग्ग युग वा नग<sup>१</sup> वा पा<sup>१</sup> वा पाचन वा  
बलिबट वा जय च पन भव गोतमो एव आह अह<sup>१</sup> पि खो ब्राह्मण वमामि च  
वपामि च वगित्वा च वधित्ता च भुञ्जामानि ।

अथ खो वसिभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्त्त गाथाय अज्जगामि—

मस्सव<sup>१</sup> पटिज्जानासि न च पस्साम त वसि ।  
वसि नो पुच्छिणो ब्रूहि यथा जानामु त वसि ॥१॥  
मढा बीज तपो बुद्धि पज्जा म युगतगल ।  
हिरि दसा मनो योल सनि मे पा<sup>१</sup>पाचन ॥२॥  
वायगुत्तो वचागुत्तो आहारे उदरे यनो ।  
सण्ण वग्गेमि निदान सोरज्ज मे पमोचन ॥३॥  
विरिय मे धुरधोर<sup>१</sup> योगक्कलमाधिवाहन ।  
गच्छति अनियसन्त यत्थ मन्त्वा न सोचति ॥४॥  
एवमेगा वसी वट्ठा सा होति अमरप्फला ।  
एत वसि वसित्वान स<sup>१</sup>दुक्खा पमुच्चतीनि ॥५॥

अथ खो वसिभारद्वाजो ब्राह्मणो मत्तिपा वसपानिया पायास बड्ढेत्वा  
भगवतो उपनामेसि—भुञ्जतु भव गातमो पायाम वस्सको भव य हि भव  
गोतमो अमरफल वसि वसतीति—

गाथाभिगीतं मे अभोजनेध्य । सपस्सत ब्राह्मण नम धम्मा ।  
गाथाभिगात पनुन्ति बुद्धा । धम्मे सनि ब्राह्मण वुत्तिरेसा ॥६॥  
अज्जेन च ववन्नि महेसि । खीणासव कुक्कुच्चरूपयन्त ।  
जघन वानन उपट्ठहस्सु । सत हि त पुञ्जपक्खस्स होनाति ॥७॥

अथ वस्म चाह भो गोतम इम पायास दम्मीनि । न खो = त ब्राह्मण  
पस्सामि मनेवक लोकं समारक सवद्दा<sup>१</sup> सस्समणब्राह्मणिपा पजाम सधम्मनुस्साय  
यसा सो पायासो भुत्तो सम्मा वरिणाम यच्छय्य अज्ज<sup>१</sup> तयागतस्म वा  
तयागतसाववस्म वा तेन हि त्व ब्राह्मण त पायाम अप्पहरिते वा छड्ढहि  
अप्पाणव<sup>१</sup> वा उदके ओपित्तापेहाति । अथ खो वसिभारद्वाजो ब्राह्मणो त पायाम  
अप्पाणव उदक ओपित्तापेमीति । अथ खो सो पायामो उदक पक्खित्ता  
विच्चिटायति चिट्ठिचिटायति स धूपायति सम्पधूपायति । सेय्ययापि नाम फालो  
त्विमसन्ततो उ<sup>१</sup> पक्खित्ता विच्चिटायति चिट्ठिचिटायति स धूपायति सम्पधूपा

यनि एवमय सा पायामा उदयं पक्वित्ता चिन्तितायति चिट्टिचिटायति गधूपायति सम्पधूपायति । अथ सो वसिभारद्वाजो ब्राह्मणो सविग्या लोमहृद्भुजातो यन भगवा तनुपसवमि उपमवमित्वा भगवता पादसु सिरमा निपतित्वा भगवन्त एतन्वाच—अभिवन्त भो गोनम अभिवन्त भो गोनम, सेय्यथापि भो गोनम निपनुज्जित वा उक्नुज्जय पटिच्छन्न वा विवरेय्य भूळहस्मवा मग्न आचिवरेय्य अधवारं वा तेल्पज्जोत धारेय्य चक्खुमन्ना रूपानि दक्खितीति, एवमेव भोता गोनमन अनेकपरियायन धम्मो पकासितो । एमाह भगवन्त गोनम सत्तण गच्छामि धम्मं च भिक्खुसप च । एभय्याह माता गोनमस्स मन्तिके पब्बज्ज लभेय्य उपसपदनि । अलत्थ सो वसिभारद्वाजो ब्राह्मणा भगवनो मन्तिके पब्बज्ज, अलत्थ उपसपद । अचिरपसम्पन्ना यो पनायस्मा भारद्वाजो एको वपवट्ठा अप्पमत्तो आनापी पठित्तो सिहरन्ना न विरस्सव यस्मत्थाय कुलपुत्ता सम्मदेव अगारस्मा अनगारिय पब्बजन्ति तन्नुत्तर ब्रह्मचरियपग्गिमासान् पिट्ठन धम्मे मय अभिज्जा मच्छिवत्वा उपसपज्ज विहासि, खीणा जानि बुमित ब्रह्मचरिय, वत्त करणीय नापर इत्यस्तायाति अभिज्जामि । अज्जतरा च खो पनायस्मा भारद्वाजो अरहन अहोगीति ।

वसिभारद्वाजसुत्त निहित ।

( ५—चुन्द-सुत्त १।५ )

पुच्छामि मुनि पठतपज्ज (इति चुन्दो वम्मारपुत्तो) बुद्ध धम्मस्सामि बीततण्ह ।

त्पिपुत्तम\* सारथीन पवर । वति लोक समणा तदिष बूहि ॥१॥

चतुरा समणा न पञ्चमत्थि\* (चुन्दति भगवा) ते ते आविक्कुरामि सस्सिपुट्ठो ।

मगगजिनो मगगसवो च मगग जीवति या च मगग दूसी ॥२॥

व मगगजिन वन्ति बुद्धा (इति चुन्दो वम्मारपुत्तो) मगगक्खायी\* कथं अदुत्तो होति ।

मगग जीवति मे बूहि पुट्ठो अथ म आविक्कुरोहि मगगदूत्ति ॥३॥

\* M द्विपुत्तम

\* R पञ्चमात्थि

\* R मगगज्यायी



या विष्णुवर्धनया विष्णोः निष्कान्तमिच्छता ज्ञानागिदा<sup>१</sup> ।  
 साहस्य मन्वेवस्य नना नां मन्त्रिने वरिच यडा ॥८॥  
 परम परम वि मोय ज्ञाना ज्ञानादि विभजति इत्येव धम्म ।  
 १ इति ॥ मीः अनत्र सुविषं भिन्नानुमाह मन्त्रिण ॥ ॥  
 या धम्मवदं मृदिमं मन्त्र जावति मन्त्रो<sup>२</sup> मन्त्राया ।  
 आकम्पयन्ति मन्त्राना नानिधं भिन्नानुमाह मन्त्र वि ॥९॥  
 छानं वर्याः सुखानं पञ्चमं कृतद्वारा पञ्चमो ।  
 मायाया अमञ्जना पञ्चमो पञ्चमन चरं न मन्त्राया ॥१०॥  
 एव च पञ्चविंश मो मन्त्रा मन्त्रा धर्मिमावरा सपञ्जना ।  
 मन्त्र नानामिच्छता ज्ञाना दिति मन्त्रा न हारति इत्येव गडा ।  
 इयं हि इत्येव अमन्त्रा मन्त्र अमन्त्रा मन्त्र वर्यादि ॥११॥

सुखानुत्तं निहितं ।

### ( १—पराभव-मुक्त १।६ )

एव मे मुनि । एवं ममयं भगवा मानमिषयं विष्णुनि अनया अनापनिगिरस्य  
 जाराम । अयं ना अञ्जनाया मन्त्रा अभिराताय रतिया अभिरातायणा  
 वपञ्चवण अनवन ओभातया वन नमरा मनुपमवमि । उमरमिना भगवान्  
 अभिवात्तता एवमना अह्नाति । एवमन्त्र मन्त्रा ना ना मन्त्रा भगवान् मायाय  
 अनमति—

परामन्त्रन् पुरित मय पुच्छाम मानम ।  
 भगवान् पुष्टमागम्य वि पराभवतो मुन ॥१॥  
 सुविज्ञानो भवं होति सुविज्ञाना पराभवा ।  
 धम्मवामा भव होति धम्मवेस्या पराभवो ॥२॥  
 इति ह्य विज्ञानाय पञ्चमो सा पराभवो ।  
 दुनिय भगवा वृष्टि वि पराभवतो मुन ॥३॥  
 अतन्नास पिया होन्ति सन्त १ कुरत पिय ।  
 अतन् धम्म रोवति त परामन्त्रता मुन ॥४॥

इति हेतु विज्ञानाम् दुतिया सो पराभवो ।  
 ततिय भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥५॥  
 निदासीली सभामीली अनुद्राता च यो नरो ।  
 अल्सो कोषपञ्जाणो त पराभवतो मुख ॥६॥  
 इति हेतु विज्ञानाम् ततियो सो पराभवो ।  
 चतुत्य भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥७॥  
 यो मातर वा पितर वा जिष्णक् गनयोञ्चन  
 पट्ट<sup>१</sup> सत्तो न भरति त पराभवतो मुख ॥८॥  
 इति हेतु विज्ञानाम् चतुत्यो सो पराभवो ।  
 पञ्चम भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥९॥  
 यो ब्राह्मण वा समण वा अञ्ज वा पि वनिञ्चक ।  
 मुसावादन वञ्चति त पराभवतो मुख ॥१०॥  
 इति हेतु विज्ञानाम् पञ्चमा सो पराभवो ।  
 छट्ठम भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥११॥  
 पङ्गवित्तो पुरितो सहिरञ्जा सभोजनो ।  
 एको भुञ्जति सादूनि त पराभवतो मुख ॥१२॥  
 इति हेतु विज्ञानाम् छट्ठमो सो पराभवो ।  
 सत्तम भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥१३॥  
 जातित्यद्धो धनत्यद्धो गोतत्यद्धो च यो नरो ।  
 न ज्ञाति अतिमञ्जेति त पराभवतो मुख ॥१४॥  
 इति हेतु विज्ञानाम् सत्तमो सो पराभवो ।  
 अट्ठम भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥१५॥  
 इत्यधुत्तो मुराधुत्ता अक्खधुत्तो च यो नरो ।  
 लद्ध लद्ध विनासेति त पराभवतो मुख ॥१६॥  
 इति हेतु विज्ञानाम् अट्ठमो सो पराभवो ।  
 नवम भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥१७॥  
 स<sup>२</sup>ि दारेहि<sup>३</sup>गन्तुद्धो<sup>४</sup> वसियामु पन्निमति ।  
 णिस्सनि परदारेसु त पराभवतो मुख ॥१८॥  
 इति हेतु विज्ञानाम् नवमो सो पराभवो ।  
 दसम भगवा ब्रूहि किं पराभवतो मुख ॥१९॥

यो विष्णुपदयो विष्णोः निष्कर्मविभक्तो ज्ञातुमिच्छा<sup>१</sup> ।  
 पारम्य सन्तारम्य नया लानि रण्यनिर्वा रति बद्धा ॥४॥  
 यत्न पदो वि योय अतया अत्राति विमज्जति इधम मम्म ।  
 त यत्तानि मुनि अनत्र दुग्घि विष्णुमातु मग्गद्वि ॥ ॥  
 या धम्मपद मुनिमि मग्ग योवति मयया<sup>२</sup> मग्गमा ।  
 अनरजानाति मयमाना नतिव भिग्गुमातु मग्गदावि ॥५॥  
 तन्म वरवा मुग्गवापि रण्यनि कुग्गुगरो पग्गमा ।  
 मायावा अग्गज्जावा पग्गमा पतिग्गेन पर म मग्गुमा ॥६॥  
 एव प पतिविग्गि या मग्गु मग्गवा अग्गिमातु मग्गज्जा ।  
 मग्ग मग्गानिमाति जग्ग दवि विग्ग म हावति मग्ग गग्ग ।  
 मग्ग हि मग्गन मग्गपुग्ग मुग्ग अग्गुग्ग मग्ग वरग्गनि ॥७॥

चुबगुत्तं निद्रितं ।

### ( ६—पराभव-मुद्रा १६ )

एवममुने । एवं समय भगवा सावत्थिय विहरति जन्वने अनाथ  
 आरामे । अथ यो अज्झानता मेक्का अभिस्तनाय रतिपा अवि  
 गवत्तरण जन्वन आभागेवा यो भगवा मनुमसमि । उगर्गवि<sup>३</sup>  
 अभिवात्ता मग्गमल अट्टासि । मग्गमल डिता मा मा मेक्का  
 अग्गमागि—

परामवल्ल गुरिस मय पुच्छाम भोतम ।  
 भगवन्त पुच्छमागम्म वि परामभवतो मुख ॥१॥  
 मुविज्जाना भव होति मुविज्जाना परामवा ।  
 धम्मवामो भव होति धम्मपेसी परामवा ॥ ॥  
 इति हत विज्जानाम पग्गमा मो परामवा ।  
 दुग्घि मग्ग कूडि वि परामज्जा मुख ॥३॥  
 अमलस्म पिपा होति सल्ल न वुरत्त पिपा ।  
 अतत धम्म रोचति त परामभवतो मुख ॥४॥

<sup>१</sup> C अननुगिद्धा

<sup>२</sup> R, C सज्जतो

एवञ्च वा द्विज वापि योऽथ पाण त्रिहिसति ।  
 यस्म पाणे दया नत्थि त जञ्जा वसलो इति ॥२॥  
 यो हन्ति परिरुधति यामानि निगमानि च ।  
 निग्गाहन्ते समञ्जाता त जञ्जा वसलो इति ॥३॥  
 गामे वा यदि वा रञ्जे य परेस ममायित ।  
 धेय्या अदिप्र आदियति तं जञ्जा वसलो इति ॥४॥  
 यो हवे णमादाय धुञ्जमानो पलायति ।  
 न हि ते इणमत्पीनि त जञ्जा वसलो इति ॥५॥  
 यो वे विञ्चिक्कवम्यता पथस्मि यजत जन ।  
 हन्त्वा विञ्चिक्कमादेति त जञ्जा वसलो इति ॥६॥  
 यो अत्तहेतु परहेतु धनहेतु च यो नरो ।  
 सस्विपुट्टो मुसा वृति न जञ्जा वसलो इति ॥७॥  
 यो ज्ञातीन सखान वा दारेभु पटिन्स्सति ।  
 महसा सपियन वा त जञ्जा वसलो इति ॥८॥  
 यो मातर वा पितर वा जिण्णं गतयोब्बन ।  
 पट्ट सन्तो न भरति त जञ्जा वसलो इति ॥९॥  
 यो मातर वा पितर वा भातर भगिनि समु ।  
 हन्ति रोमेति वाचाय तं जञ्जा वसलो इति ॥१०॥  
 यो अत्थ पुच्छितो सन्तो अनत्थमनुसासति ।  
 पटिच्छनेन मन्तेति त जञ्जा वसलो इति ॥११॥  
 यो क्त्वा पापक वम्म मा म जञ्जाति इच्छति ।  
 यो पटिच्छन्नकम्मन्तो त जञ्जा वसलो इति ॥१२॥  
 यो वे परवृत्त गत्वा भुत्वा सुचिभाजन ।  
 मागतं न पटिपूजति त जञ्जा वसलो इति ॥१३॥  
 यो ब्राह्मण वा समण वा जञ्ज वापि वनिच्च ।  
 मुमावादेन यञ्जेति ॥ जञ्जा वसलो इति ॥१४॥  
 यो ब्राह्मण वा समण वा अत्तवाणे उपट्ठिते ।  
 रोमेति वाचा न च ॥ इति त जञ्जा वसलो इति ॥१५॥  
 जसन<sup>१</sup> योऽथ पवृत्ति मोहन पाल्गुष्ठितो<sup>२</sup> ।  
 विञ्चिक्क निजिगिसानो त जञ्जा वसलो इति ॥१६॥

या चत्तान ममुत्तस प० चमनजाननि ।  
 निहानो मन मानन नं जञ्जा वग० इति ॥१७॥  
 रोमरा वन्त्रिया च पापिच्छो मच्छरी स० ।  
 अहिरिको वनोत्तणी त जञ्जा वस० इति ॥१८॥  
 यो बुद्ध परिमासनि जयवा तस्स साय० ।  
 परिव्याज गहट्ट वा त जञ्जा वग० इति ॥१९॥  
 यो व अनरहा सन्तो अरहं पञ्जाननि ।  
 धीरो मज्झव लोक् एस या वमलाधमो ।  
 एत वा वस० वुत्ता मया यो य पवासिना ॥२०॥  
 १ जच्चा वसलो होति न जच्चा हाति ब्राह्मणो ।  
 वम्मूना वमरा होति वम्मूना हाति ब्राह्मणा ॥२१॥  
 तदमिनाऽपि जानाय यथा म० निस्सन् ।  
 अण्डा०पुत्ता सापावा मागळ्ळो इति विस्सुतो ॥२२॥  
 सो यस परम पत्तो मातङ्गा य मुदुल्लभ ।  
 आगञ्छु तस्मुपट्ठान जात्तिया ब्राह्मणा बहू ॥२३॥  
 सो दवयानमाह्म विरज सो महापथ ।  
 कामराग विराजत्वा ब्रह्मलोकूपया अहु ।  
 न न जाति निवारसि ब्रह्मलोकूपपत्तिया ॥२४॥  
 अज्जायककुलं जाना<sup>१</sup> ब्राह्मणा मन्तवधुनो ।  
 ते च पापेभु वम्मसु अभिण्हमुपदिस्सर ॥२५॥  
 न्तिठव धम्मे गारह्हा सपराय च दुग्गति ।  
 न ते जाति निवारेति दुग्गच्चा गरह्हाय वा ॥२६॥  
 न जच्चा वसलो होति न जच्चा होति ब्राह्मणो ।  
 वम्मूना वसलो हाति वम्मूना होति ब्राह्मणा<sup>२</sup>ति ॥२७॥

एय वुत्त अग्गिक्कारद्वाजो ब्राह्मणो भवन्त एतवोच—अभिवरन्त भो  
 गोतम पे० धम्म च भिक्खुमय च । उपासक म भव गोतमा धारु  
 अज्जतय पाणुपत सरण मनऽति ।

## ( ८—मेत-सुत १।८ )

करणीयमत्यकुसलेन य त सन्त पद अभिसमेच्च ।  
 सक्को उज्जु च सूज्जु च भुवच्चो चस्स मुदु अनतिमानी ॥१॥  
 सन्तुम्सवो च सुमरो च अप्पकिच्चो च सल्लट्ठकवुत्ति ।  
 सन्निद्रियो च निपवो च अप्पगम्भा कुलेसु अननुगिदो ॥२॥  
 न च खुद समाचरे विज्जि येन विज्जु परे उपवदेय्यु ।  
 सुखिनो वा सेमिनो होन्तु सवे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता ॥३॥  
 ये केचि पाणभूतत्थि तसा वा यावरा वा अनवसेसा ।  
 दीघा वा ये महन्ता वा मज्झिमा रम्मकाण्णवयूला ॥४॥  
 दिट्ठा वा येव<sup>१</sup> अदिट्ठा ये च दूरे वसन्ति अविदूरे ।  
 भूता वा सभवेमी वा सव्ये सत्ता भवन्ति सुखितत्ता ॥५॥  
 न परो प<sup>२</sup> निकुब्बेय नातिमज्जय कत्थचि न कज्जि  
 व्यारोमना पटिपमज्जा नाज्जमज्जस्स दुक्कमिच्छय्य ॥६॥  
 माना यथा निय पुत्त आयुसा एकपुत्तमनुरक्के ।  
 एवमपि सच्चभूतेसु मानस भावये अपरिमाण ॥७॥  
 मेत च सम्बलोक्स्मि मानस भावये अपरिमाण ।  
 उज्ज अधो च निरिय च असवाष अवर अमपत्त ॥८॥  
 तिट्ठ चर निसिन्नो वा सयानो वा यावनस्स विगतमिदो ।  
 एत सति अधिष्ठेय्य ब्रह्ममेत विहार इधमाहु ॥९॥  
 दिट्ठि च अनुपगम्म सीलवा दस्मनेन सपत्ता ।  
 वामेसु विनेय्य<sup>३</sup> गेध न हि जानु गच्छमय्य पुनरेतीति ॥१०॥  
 मेतसुत निदिठत ।

## ( ९—हेमवत-सुत १।९ )

अज्ज पण्णरमो उपोमयो (इति सातागिरो यस्मो) ण्विया रति उपट्ठिता ।  
 अनीमनार्म सवारं हल् पस्साम मोत्तम ॥१॥  
 कज्ज मनो सुपणिहितो (इति हेमवतो यस्सो) सच्चभूतमु ताग्निो ।  
 कज्ज इट्ठे अनिट्ठे च सवप्पस्स वमीजता ॥२॥

या चत्तान समुक्कस परं चमयाननि ।  
 निहाना मन मानन १ जज्झा वसन्ता इति ॥१७॥  
 रोसका नदरियो च पापिच्छा मच्छरी सरो ।  
 अहिरिका अनोत्तप्पी स जज्झा वसन्ता इति ॥१८॥  
 या बुद्ध परिभासति अथवा तस्स सावक ।  
 परिच्चाज गट्ठु वा स जज्झा वसन्तो इति ॥१९॥  
 या ये अवरहा सन्तो अरुहं पटिजाननि ।  
 चोरो सब्रह्मच लोह एस मां वसलायमा ।  
 एत को वसला युत्ता मया वो ये पक्वामिना ॥२०॥  
 न जज्झा वसलो होति न जज्झा होति ब्राह्मणा ।  
 वम्मूना वसलो होति वम्मूना होति ब्राह्मणा ॥२१॥  
 तन्मिनापि जानास यथा मत्तं निदस्सत्तं ।  
 चण्डालपुत्तो सापाका मानझगो इति विस्सुता ॥२२॥  
 सो यस परम पत्ता मातङ्गया य मुदुत्तम ।  
 भागच्छ तम्पुपट्टान सत्तिया ब्राह्मणा बद्ध ॥२३॥  
 मो दवयानमास्य्ह विरज मो महापथ ।  
 वामराग विराजत्वा ब्रह्मलोकूपगो बह ।  
 न न जाति निवारणि ब्रह्मलोकूपपत्तिया ॥२४॥  
 जज्झायककुल जाता<sup>१</sup> ब्राह्मणा मन्तवधुना ।  
 ते च पापमु कम्मेसु अभिण्हमुपदिस्सर ॥२५॥  
 ण्ठिठव धम्मे गारयहा सपराय च दुग्गति ।  
 न स जाति निवारेणि दुग्गच्चा गरजाय वा ॥२६॥  
 न जज्झा वसलो होति न जज्झा होति ब्राह्मणा ।  
 वम्मूना वसलो होति वम्मूना होति ब्राह्मणोति ॥२७॥

एव वुत्त अग्निकमारदाजो ब्राह्मणा भगवन्त एतदवोच—अभिवन्त भो  
 गोनम वे० धम्म च भिवन्तुगध च । उपासन भ भव गोनमा धारेतु  
 अज्जतग पाणुपत्त मरण गतस्सि ।

<sup>१</sup> B 'अज्जायका कुले जाता' इत्यपि पाठ

## ( ८—मेत-सुत १।८ )

वरणीयमत्यकुसलेन य त सन्त पद अभिसमेच्च ।  
 सक्को उज्जु च सूज्जु च सुवचो चस्स भुदु अननिमानी ॥१॥  
 सन्नुस्सको च सुभरो च अप्पकिच्चो च सल्लङ्कवुत्ति ।  
 सन्तिद्वियो च निपवो च अप्पगढ्भो कुलेसु अननुगिद्धा ॥२॥  
 न च खुदु समाचरे किञ्चि येन विज्जु परे उपदेय्यु ।  
 सुग्विनो वा खेमिनो होन्तु सव्वे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता ॥३॥  
 ये केचि पाणभूतत्ति सत्ता वा पावरा वा अनवसेसा ।  
 दीघा वा ये महन्ता वा मज्झिमा रस्सवाणुवयूला ॥४॥  
 दिट्ठा वा यव<sup>१</sup> अदिट्ठा ये च दूरे वसन्ति अविदूरे ।  
 भूता वा सभवसी वा सव्व सत्ता भवन्ति सुखितत्ता ॥५॥  
 न परा पर निबुब्बेथ नानिमज्जय कत्यचि न कञ्चि  
 व्यारोसना पटिपमज्जा नाज्जमज्जस्स दुक्खमिच्छय्य ॥६॥  
 माता यथा निय पुत्त आयुसा एवपुत्तमनुरक्खे ।  
 एवअपि सव्वभूतसु मानस भावये अपरिमाण ॥७॥  
 मेत्त च सव्वलोकस्मि मानस भावये अपरिमाण ।  
 उद्ध अधो च तिरिय च असवाध अवेर असपत्त ॥८॥  
 तिदु चर निसिन्नो वा सयानो वा यावतस्स विगतमिद्धो ।  
 एत सति अधिठेय्य ब्रह्ममेतं विहार इधमाट्ठ ॥९॥  
 विट्ठि च अनुपगम्म सीलवा दस्सनेन सपन्नो ।  
 बामसु विनय्य<sup>२</sup> गेध न हि जातु गम्भमय्य पुनरेतीति ॥१०॥  
 मेत्तमुत्त निदिठत्त ।

## ( ९—हेमवत-सुत १।९ )

अज्ज पण्णरसो उपायघो (इति सातागिरो यस्तो) दिव्या रत्ति उपट्ठिता ।  
 अनामनाम सत्वार हन् परस्साम गोणम ॥१॥  
 वज्जि मनो गुणणिहितो (इति हेमवनो यक्खो) सव्वभूतेसु ताग्गो ।  
 वज्जि इट्ठे अनिट्ठे च सक्खम्म वसीवत्ता ॥२॥



मातो धम्म मुत्तलिता (इति मातागिरा यत्ता) धम्ममुत्तलिता ।  
 अयो न्हि न्हि व मन्थम्म मन्थम्म ॥२॥  
 कच्चि अन्ति तन्ति (इति ह्रस्वतो यत्ता) कच्चि तन्ति मन्थम्म ।  
 कच्चि आग पमारम्हा कच्चि ज्ञात न तन्ति ॥३॥  
 न सो अन्ति अन्ति (इति मातागिरा यत्ता) अयो मन्थम्म मन्थम्म ।  
 अयो आरा ममारम्हा बुद्धा ज्ञात न तन्ति ॥ ४ ॥  
 कच्चि मुत्ता न मन्ति (इति ह्रस्वतो यत्ता) कच्चि न मन्ति मन्थम्म ।  
 कच्चि वेम्भुत्ति ना कच्चि मन्थम्म न मन्ति ॥५॥  
 मुत्ता व सो न मन्ति (इति मातागिरा यत्ता) अयो न मन्ति मन्थम्म ।  
 अयो वेम्भुत्ति ना मन्ति मन्थम्म मा मन्ति ॥६॥  
 कच्चि न मन्ति मन्थम्म (इति मन्थम्म यत्ता) कच्चि मन्ति मन्थम्म ।  
 कच्चि मोह अन्ति मन्थम्म कच्चि धम्ममुत्तलिता ॥७॥  
 न सो मन्ति मन्थम्म (इति मातागिरा यत्ता) अयो मन्ति मन्थम्म ।  
 मन्थम्म मोह अन्ति मन्थम्म बुद्धा धम्ममुत्तलिता ॥८॥  
 कच्चि विज्जाय मन्थम्म (इति ह्रस्वतो यत्ता) कच्चि मन्थम्म मन्थम्म ।  
 कच्चि मन्थम्म आसत्ता मन्थम्म कच्चि मन्ति पुनमन्थम्म ॥९॥  
 विज्जाय वेम्भुत्ति मन्थम्म (इति मातागिरा यत्ता) अयो मन्थम्म मन्थम्म ।  
 मन्थम्म आसत्ता मन्थम्म मन्ति मन्थम्म पुनमन्थम्म ॥१०॥  
 मन्थम्म मुत्तलिता वित्तं कम्मना व्यपपेत्तं च ।  
 विज्जावरणमपन्नं धम्मतो न पत्तसि ॥११ (अ) ॥  
 मन्थम्म मुत्तलिता वित्तं कम्मना व्यपपेत्तं च ।  
 विज्जावरणमपन्नं धम्मतो अनुमोत्तसि ॥११ (आ) ॥  
 मन्थम्म मुत्तलिता वित्तं कम्मना व्यपपेत्तं च ।  
 विज्जावरणमपन्नं हन्ता धम्मना मोत्तम ॥१२॥  
 मन्थम्म वित्तं वीर अन्ति मन्थम्म मन्थम्म ।  
 मुत्ति वन्ति ज्ञायन्त एहि पत्ताय मोत्तम ॥१३॥  
 मोहवन्ति नाग कामेभु अन्ति मन्थम्म ।  
 उन्मत्तम पुच्छाम मन्थम्म पम्भोत्ता ॥१४॥  
 अन्ति मन्थम्म पम्भोत्ता मन्थम्म पम्भोत्ता पम्भोत्ता ।  
 वद वेम्भुत्ति मन्थम्म पुच्छाम मोत्तम ॥१५॥

किस्मि लोको समुपपन्नो (इति हेमवतो यस्मिन्) किस्मि बुध्यति मयव ।  
 किस्म लोको उपादाय किस्मि लोको विद्वज्जति ॥१६॥  
 छस्मु<sup>१</sup> लोको समुपपन्नो (हमवतानि भगवा) छस्मु<sup>१</sup> बुध्यति मयव ।  
 छद्ममेव उपादाय छस्मु<sup>१</sup> लोको विद्वज्जति ॥१७॥  
 वतम त उपादान एत्थ लोको विद्वज्जति ।  
 निप्यान पुच्छिन्तो ब्रूहि कथं दुक्खा पमुच्चति ॥१८॥  
 पच कामगुणा लोके मनोछद्वा पमोञ्जिता ।  
 एत्थ छन्द विराजेत्या एव दुक्खा पमुच्चति ॥१९॥  
 एत लोकेस्स निप्यान अक्खात यो ययासथ ।  
 एत यो अहमक्खामि एव दुक्खा पमुच्चति ॥२०॥  
 को सूय तरति ओष कोऽय तरति अण्णव ।  
 अप्पतिन्ठे अनालम्बे को गभीरे न सीजति ॥ २१ ॥  
 सब्बदा सीलसपन्नो पज्जवा मुसमाहितो ।  
 जज्जत्तविन्ती<sup>२</sup> सतिमा ओष तरति दुत्तर ॥२२॥  
 विरत्तो<sup>३</sup> कामसज्जाय सत्त्वसाज्जनानियो ।  
 नल्लीभवपरिक्खीणा सो गभीरे न सीदति ॥२३॥  
 गभीरपज्ज निपुणत्थदास्मि, अविज्जन कामभवे जमत ।  
 न पस्सथ सब्बधि विप्पमुत्त, दिब्बे पथे वममान<sup>४</sup> महोसि ॥२४॥  
 अनामनाम निपुणत्थस्सि, पज्जान्द कामालये जमत ।  
 त पस्सथ सब्बविदु सुमध, अरिये पथे वममा<sup>४</sup> महोसि ॥२५॥  
 सुत्तिट्ठ वत नो अज्ज सुप्पमात सुहुत्तिव ।  
 य अत्ताभ सद्बुद्ध ओषत्तिण्णमनासव ॥२६॥  
 इमे दससता यक्खा इद्धिमन्तो यमस्सिनो ।  
 सब्ब त शरणं यन्ति त्वं नो सत्था अनुत्तरो ॥२७॥  
 त मय विचरिस्साम गाया गाम नगा नग ।  
 नमस्समाया सद्बुद्ध धम्मस्स च सुधम्मतज्जति ॥२८॥

हेमवतमुत्त<sup>१</sup> ।

<sup>१</sup> M छस्मु    <sup>२</sup> M अज्जत्तसज्जो    <sup>३</sup> 'M विरत्तो' इत्यपि    <sup>४</sup> M  
 चकमन    <sup>५</sup> P सातागिरिसुत्तं ति एवञ्चेहि बुच्चति

## ( १०—आज्जसमुत्त १।१० )

एव म गुत्त । एव समय भगवा आज्जविय त्रिट्ठरनि आज्जवस्स यक्कस्स भवन । अय खो आज्जवत्तो यत्था यन भगवा तनुपमग्गमि उपमक्कमिवा भगवत्त एत्तवोच—नित्थम समणानि । साधवुमास्ति भगवा नित्थमि । पयिस समणानि । साधवुमा नि भगवा पाविसि । दुत्थियस्सि गो आज्जवत्ता यत्था भगवन्त एत्तवोच—नित्थम समणानि । साधवुमास्ति भगवा नित्थमि । पयिस समणानि । साधवुमास्ति भगवा पाविसि । तत्थियनि गो आज्जवत्तो यक्कमो भगवन्त एत्तवोच—नित्थम समणानि । साधवुमास्ति भगवा नित्थमि । पयिस समणानि । साधवुमास्ति भगवा पाविसि । चतुयपि ता आज्जवत्तो यक्को भगवन्त एत्तवोच—नित्थम समणानि । न त्वाठ त आवुमो नित्थमिस्सामि य ते करणाय त करोहीति । पण्ह त समण पुच्छिस्सामि सच्च मे न व्याक्खिस्ससि<sup>१</sup> चित्त वा त विपिस्सामि हत्थ वा त पात्तस्सामि, पात्तेमु वा गहेत्वा पारगगाय विपिस्सामीति । न त्वाट त आवुमा पस्सामि सत्त्व लक्क समारव सत्तहक्क सत्तमणत्ताह्मणिया पजाय सत्त्वमनुस्साय या म चित्त वा विपेय्य हत्थ वा पात्तेय्य पात्तेमु वा गहेत्वा पारगगाय विपेय्य अपि च त्व आवुमो पुच्छ यत्ताक्खमीति । अय ता आज्जवत्तो यक्का भगवन्त याथाय जज्जभासि—

नि सूध वित्त पुरिमस्स सेट्ठ । नि मु सुचिण्ण सुवमावहानि ।  
 किं मु त्वे सादुत्तर रसान । कथजीवि जावितमाट्ठ सेट्ठ ॥१॥  
 मट्ठीध वित्त पुग्गिस्सम सट्ठ । धम्मो सुचिण्णा सुवमावहानि ।  
 मच्च ह्व सादुत्तर रसान । पज्जाजावि जीविनमाट्ठ मेट्ठ ॥२॥  
 तथ मु तरती<sup>२</sup> ओष कथ सु तरनि जणव ।  
 कथ मु दुक्ख अच्चति कथ सु परिसुज्जति ॥३॥  
 मट्ठाय तरती<sup>३</sup> ओष जप्पमान्ज जणव ।  
 यिरियन दुग्ग अच्चति पज्जाय परिसुज्जति ॥४॥  
 कथ मु लभते पज्ज कथ मु विप्पन धन ।  
 कथ मु भित्ति पणोति कथ मित्तानि गयन्ति ।  
 जस्मा लोका पर लोक्क कथ पच्च न सोचति ॥ ॥  
 महान्णो जग्गन धम्म निब्बाणपत्तिया ।  
 मुम्मूसा लभते पज्ज अप्पमत्तो त्रिचक्खणो ॥६॥

पतिरूपकारी धुर्या उद्धाता विदने धन ।  
 सञ्चेन विरित्त पप्पोति दद मित्तानि गयति ॥७॥  
 यस्मेते चतुरो धम्मा सद्धस्स घरमसिनो ।  
 सच्च धम्मो धिति चागो स वे पेच्च न सोचति ।  
 अम्मा लोका पर लोक स व पच्च न सोचति ॥८॥  
 इद्धय जज्जेऽपि पुच्छस्सु पुयू समणब्राह्मणे ।  
 यदि सच्चा दमा चागा खन्त्या भिय्योष विज्जति ॥९॥  
 वय नु दानि पुच्छय्य पुयू समण ब्राह्मणे ।  
 सो<sup>१</sup>इह अज्ज पजानामि या<sup>२</sup> अत्यो<sup>३</sup> सपरयिदो ॥१०॥  
 अत्थाय वन मे बुद्धो वासायाळविभागमा ।  
 सो<sup>४</sup>इह अज्ज पजानामि यत्थ त्तिन महप्पन् ॥११॥  
 सो अह विचरिस्सामि गामा गाम पुरा पुर ।  
 नमस्समानो सनुद्ध धम्मस्स च सुधम्मतऽति ॥१२॥  
 एव<sup>५</sup> वुत्ते आळवको यव्वो भगवन्त एतदवोच-अभिकवत्त भो गोतम  
 पे० भिक्खुसंघ च । उपासव म भव गोतमो धारेतु अज्जतग्ग पाणुपेत  
 मग्ग गतऽति ।

आळवकमुत्त निठित्त ।

( ११—विजय-मुत्त १।११ )

पर वा यदि वा तिद्ध निसिद्धो उद वा सय ।  
 मम्मिज्जति पसारेलि एमा कायस्म इज्जना ॥१॥  
 अट्टिनहाग्गमुत्तो तच्चमसावण्णेपनो ।  
 छविया कामो पटिच्छन्नो यया भूत न दिस्सति ॥२॥  
 अन्तपूरो उदरपूरो यवपळस्स वत्थिनो ।  
 हन्त्यस्स पप्पासरस्स यक्कस्स पिहक्कस्स च ॥३॥  
 सिघाणिवाय खेळस्स सत्तस्स च मेत्तस्स च ।  
 लोहितस्स लमिकाय पित्तस्स च वसाय च ॥४॥

अयस्म नवहि सोनेहि अगुचि गयनि सव्वण ।  
 अग्निग्ग अग्निग्गुग्गो ण्णग्ग वण्णग्गुग्गो ॥१॥  
 सिपाणिना च तमामो सुग्गो वमनेग्ग<sup>१</sup> ।  
 पित्त मग्गो च वमति कायग्गो मग्गजिग्गो ॥६॥  
 अयग्गो मुत्तिर गोम मत्तग्गुग्गो पूरित ।  
 सुमनो न मग्गज्जतो<sup>२</sup> गाग्गो अग्निग्गो वग्गुग्गो ॥ ॥  
 यग्गो च गो मतो भनि उद्दुमातो रिताग्गो ।  
 अपविद्धो सुसानग्गो अनपक्का होति ज्ञानयो ॥८॥  
 सान्ति न सुवाना<sup>३</sup> च मिगाग्गो च वक्का निमी ।  
 वावा गिग्गो च खान्ति य चग्गो सान्ति पाणिनो<sup>४</sup> ॥९॥  
 मुत्तान्ति बुद्धवचन भिक्खु पग्गोणाग्गो दग्गो ।  
 सो गो न परिजानानि यथाभूत हि पग्गो ॥१०॥  
 यथा इग्गो तथा एत यथा एग्गो तथा इद्द ।  
 अग्गो च वग्गो च वाग्गो च वाग्गो च विग्गो ॥११॥  
 छग्गो विग्गो च भिक्खु पग्गोणाग्गो दग्गो ।  
 अग्गो अग्गो सान्ति निग्गोणाग्गो पद्मचुत्त ॥१२॥  
 द्विग्गो<sup>५</sup> अग्गो अग्गो दुग्गो परिहीरति ।  
 मानाग्गो पग्गो पग्गो विग्गो च ततो ततो ॥१३॥  
 एतादिग्गो वाग्गो गो मग्गो उग्गो च ततो ।  
 पर वा अग्गो च निग्गो च अग्गो च ततो ॥१४॥  
 विग्गो च मुत्त<sup>६</sup> निग्गो च ।

( १२—मुनि पुत्त ११२ )

मग्गो च भय जाग्गो निग्गो जाग्गो च ततो ।  
 अग्गो च मग्गो च एत वे मुनिग्गो ॥ १ ॥  
 गो जाग्गो मुत्तिग्गो च रोग्गो च जाग्गो च नानुग्गो च ।  
 तमाग्गो एग्गो मुनिग्गो च अग्गो च गो सतिपद्द मग्गो ॥ २ ॥

<sup>१</sup> M वमति एकदा    <sup>२</sup> M मग्गज्जति    <sup>३</sup> C सुवाना R सुपाणा  
<sup>४</sup> B, R, C पाणयो    <sup>५</sup> M निग्गोणाग्गो पद्मचुत्त    <sup>६</sup> M द्विग्गो च  
<sup>७</sup> B वाग्गो च अग्गो च निग्गो च    M सतिपद्दो    <sup>८</sup> M, C  
 अग्गो च    <sup>९</sup> M मग्गो च

मलाय ध्यूनि पहाय<sup>१</sup> बीजं, मिनेहमस्म नानुष्पवेच्छ ।  
 म वे मुनी<sup>२</sup> जानिष्यन्तदस्मो तव पहाय न उपति मम् ॥३॥  
 अञ्जाय सव्यानि निवेसनानि, अनिवामय अञ्जतरऽपि तस ।  
 स वे मुनी बीतगधो अगिद्धो, नायूहति पारगतो हि होति ॥४॥  
 सव्याभिभु मव्वविदु मुमध सव्वमु धम्मेसु अनूपलित ।  
 सव्वजह तण्हवमये विमुत्त, त वाऽपि धीरा मुनि वेत्थन्ति ॥५॥  
 पञ्जाबल सीलवतूपपन्न, सभाहिन् धानरत्त सतीम ।  
 मया पमुत्त अस्सि<sup>३</sup> अनामव त वाऽपि धीरा मुनि वदयन्ति ॥६॥  
 एक चरत्त मुनि अप्पमत निन्नापमसामु जवेधमान ।  
 गीहस्य सट्ठसु असन्नगन्त, वातस्य जालहिं असज्जमान ।  
 पवुमस्य तोयन अलिप्पमान, नेतारमञ्जासमनञ्जनञ्ज ।  
 न वाऽपि धीरा मुनि वेत्थन्ति ॥७॥  
 यो ओगाहन्<sup>४</sup> धम्मोरिवाभिजायति, यस्मि पर वान्ना<sup>५</sup>परियन्त वदन्ति ।  
 न बीतराग सुसमाहिनिद्रिय त वाऽपि धीरा मुनि वेत्थन्ति ॥८॥  
 यो वे ठिनत्तो तमर<sup>६</sup>व उज्जु, जिगुच्छनि धम्मोहि पापवहि ।  
 धीमसमानो विमम सम च, त वाऽपि धीरा मुनि वेत्थन्ति ॥९॥  
 यो सञ्जतत्तो न वरानि पाग, न्हुरा च मज्जा च मुनी यत्तता ।  
 अरासनेय्या सो न रोसन्ति कचि, त वाऽपि धीरा मुनि वेदयन्ति ॥१०॥  
 यदग्गतो मज्जना मेसतो वा पिण्ण लभय परदत्तूपजीवी ।  
 नाल धुतु नोऽपि निपच्चवाणी त वाऽपि धीरा मुनि वेत्थन्ति ॥११॥  
 मुनि चरन्त विरत्त मथुनस्मा, यो योज्वन न उपानियज्जते क्वचि ।  
 मदप्पमाना विरत्त विप्पमुत्त, न वाऽपि धीरा मुनि वदयन्ति ॥१२॥  
 अञ्जाय लोक परमत्थ<sup>७</sup>स्सि, ओघ समुद् अतितरिय तादि ।  
 त छित्तगय असित जनासव, त वाऽपि धीरा मुनि वेदयन्ति ॥१३॥  
 असमा उभो<sup>८</sup> द्रविहारवुत्तिना,  
 मिहि दारपोसी अममो च सुव्वतो ।  
 परपाणरोधाय गिही<sup>९</sup> असञ्जतो,  
 निच्च मुनी रक्खन्ति पाणिनो<sup>६</sup> यतो ॥१४॥

<sup>१</sup> R, B पहाय M समाय<sup>२</sup> M मुनि<sup>३</sup> C सखिल<sup>४</sup> M ओगहणे C गाहणे<sup>५</sup> M वाच<sup>६</sup> C धुमो<sup>७</sup> M मिहि<sup>८</sup> M मुनि<sup>९</sup> P 1 S पाणिने

गिर्या यथा नागोषो विहगमा,  
 हंसस्य नागनि अर कुडावन ।  
 एवं गिर्या<sup>१</sup> तानुवराति भित्तुना,  
 मुनिनो विदितम्मा वरिणि ज्ञापता हि ॥<sup>२</sup> ॥  
 मुनिमुत्तं निट्ठितं ।

---

उत्तरागम्य पठमो ।

नमस्तुते—

इतो पठितो नेह विभागो न तदा व<sup>१</sup> ।  
 एत<sup>२</sup> पठितो नेह वसन्तो वेत्तधावना ॥  
 सान्नामिरो चात्तवरो विजयो न तदा<sup>३</sup> मुनि  
 ज्ञानमेवमि मुत्तानि उत्तरागमो वि कुच ते ॥

---

## २—ब्रूलवग्गो

( १३—रतन-सुत्त २।१ )

यानीय भूतानि समागतानि , भुम्मानि वा यानि च अन्नल्लिख्ये ।  
मज्जे ष भूता सुमना भवन्तु अयां पि सक्कच्च सुणन्तु भामित ॥१॥  
तस्मा हि भूता निसामथं सद्दये मत्तं वरोय मानुसिया पजाय ।  
दिवा च रत्तो च हरन्ति ये ब्रालि , तस्मा हि ने रक्कथ अपमत्ता ॥२॥  
य किञ्चि वित्तं च्छ वाहु र वा , सुग्गमु वा य रतनं पणीत ।  
न नां समं अत्थि तयागतं द्दवपि बुद्धं रतनं पणीत ।  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥३॥  
खयं विरागं अमत्तं पणीतं , यज्जसगा सस्यमुनी समाहितो ।  
न तेन वग्गेन ममत्थि किञ्चि इदं पि धम्मं रतनं पणीत ।  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥४॥  
य बुद्धमदृष्टो परिवण्णयी सुचिं समाधिमानन्तरिक्कज्जमाहु ।  
ममाधिना तेन समो न विज्जति इदं पि धम्मं रतनं पणीत ।  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥५॥  
य पुग्गला अट्ठं सत्तं पमत्था , चत्तारि एतानि युगानि हान्ति ।  
ते दक्खिण्य्या सुगणस्स सावका , एतेसु दिनानि मण्ण्यगानि ।  
इदं पि सधे रतनं पणीतं , एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥६॥  
मे सुप्पयुक्ता भनमा दट्ठहनं , निक्कामिनो गीतममासनम्हि ।  
तं पत्तिपत्ता अमनं विगय्न् , लद्धा मुघा निम्भुनि भुज्जमाना ।  
इदं पि सधे रतनं पणीतं , एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥७॥  
यधिल्लत्थीलो पठाविं मितो मिया चतुंभि वातहि असम्पक्कमियो ।  
तयूपमं सप्पुरिमं वणमि , यो अरियमज्जानि अवक्कं पस्सति ।  
इदं पि सधे रतनं पणीतं एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥८॥  
य अरियसज्जानि विभावयन्ति , गभीरपज्जनं मुत्तमिनानि ।  
किञ्चापि ते होन्ति भुगप्पमत्ता , न तं भव अट्ठमं आण्विनि ।  
इदं पि सधे रतनं पणीतं , एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥९॥



गृह्यन्ते न्यमनसं पश्य नयन्तु धम्मा जतिता भवन्ति ।  
 गमतावन्ति तिष्ठन्ति न च गमन्त्या वान्ति यन्ति विन्ति ।  
 भन्तुपायस्ति च रिणमुत्तो १\* चाभिगतानि अभव्वा वापु ।  
 न्ति मये रता पणीनं, एतन् मन्वा मुक्त्वा होतु ॥१०॥  
 तिष्ठन्ति मा नम्म वरानि पापरं कानन वाचा उ च भवता सा ।  
 अभव्वा गो तस्म पञ्चिन्त्य, अभव्वा तिष्ठन्त्य सुता ।  
 न्ति मये रतन् पणीनं एतन् मन्वा मुक्त्वा होतु ॥११॥  
 वनजगुम्ह यथा वृक्षिणन्ति विन्ता माग पटमग्नि विन्दे ।  
 नयन्तु धम्मवरं अन्ति तिन्वाणन्ति परम तिन्ति ।  
 इन्ति बुद्ध रतन् पणीनं एतन् मन्वा मुक्त्वा होतु ॥१२॥  
 वरा वरञ्जु वरन्ति यराहरो भन्तुत्तो धम्मवर अन्ति ।  
 न्ति बुद्ध रता पणीनं एतन् मन्वा मुक्त्वा होतु ॥१३॥  
 मीण पुराण मय मरिय मयं विरन्ति आरन्ति भवन्ति ।  
 १ साणन्ति जा अविच्छिन्ति निन्ति धीरा यथाय वन्ति ।  
 न्ति मये रतन् पणीनं, एतन् मन्वा मुक्त्वा होतु ॥१४॥  
 यानीध भूतानि समागतानि भुम्मानि वा यानि च अन्ति १ ।  
 नयागन् दवमनुसापूजितं बुद्ध नमस्साम मुक्त्वा होतु ॥१५॥  
 यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि च अन्ति १ ।  
 तपागत वमनुसापूजितं, धम्मनमस्साम मुक्त्वा होतु ॥१६॥  
 यानीध भूतानि समागतानि भुम्मानि वा यानि च अन्ति १ ।  
 तपागत वमनुसापूजितं, मय नमस्साम मुक्त्वा होतु ॥१७॥  
 एतन्सुत तिष्ठन्ति ।

### ( १४—आमगध-मुत्त २।२ )

सामाजिकगुरू\* चीनकानि\* एतन्सुत मूष्ण गविष्ण ।  
 धम्मन् लद्ध गतमस्माना\*, न वामवामा जलिक भवन्ति ॥१॥  
 यन्म\*मानो सुक्ता सुनिद्धित परहि दिव पयत पणीत ।  
 मागीनमन् परिभुञ्जमानो, गो भुञ्जन्ति\* कस्मप आमगध ॥२॥

१ R दिगुलक २ M चीनकानि च ३ R सतमहमाणा C  
 सतमसमाना ४ R C यदहमाणा ५ R भुञ्जती M भुञ्जति

न आमगघो मम वप्सतीति , इच्छेव त्व भामनि ब्रह्मरथु<sup>१</sup> ।  
 मालीनम परिभुञ्जमानो , सनुन्तममहि गुससतेहि ।  
 पुच्छामि त वस्सप एतमत्य वथप्पवारा तव आमगघो ॥३॥  
 पाणानिपातो वध-छन्-वधन , धय्य मुसावादा निरतिवञ्चनानि च ।  
 अज्जनकृत\* परत्तरसेवना एसामगघो ण हि मसभोजन ॥४॥  
 य इध कामेसु असञ्जता जना , रसेसु गिद्धा असुचीव<sup>२</sup> मिसिगता  
 नत्थीवदिट्ठि<sup>३</sup> विसमा दुरत्तया एसामगघो न हि मसभोजन ॥५॥  
 ये त्वमा दारणा विट्ठिमसिवा मित्तहनो निक्खरणानिमानिनो ।  
 अदानगीला न च देन्ति वस्समि एसामगघो न हि मसभोजन ॥६॥  
 बोधो मदो धम्भो पच्चुट्ठापना च , माया उगूया<sup>४</sup> नस्सममुत्सायो च ।  
 मानातिमानो च असमि सयधो , एसामगघो न हि मसभोजन ॥७॥  
 य पापमोग्ग इणधानसूचवा , बोहारवूटा इध पाटिरुपिक्का ।  
 नराधमा येऽथ करोन्ति किञ्चिम एसामगघो न हि मसभोजन ॥८॥  
 य इध पाणसु असञ्जता जना , परसमात्ताय विहसमुत्थुता ।  
 तुस्मीन्दुद्धा फरुमा जनादरा , एसामगघो न हि मसभोजन ॥९॥  
 एतेसु गिद्धा विरुद्धातिपातिना , निच्चुत्थुता पेच्च तम वजन्ति य ।  
 पतन्ति सत्ता निरय अवसिरा , एसामगघो न हि मसभोजन ॥१०॥  
 न मच्छमसाननासकत्त<sup>५</sup> न नमिाय (मुण्डिय जटा) जल्ल सराणिनानि वा ।  
 नागिहुत्त<sup>६</sup> स्सुपुसेवना वा य वाऽपि लोने अमरा बहू तथा ।  
 मन्ताहुती यञ्जमुत्तपसेवना सोधति मच्च अवितिण्णक्ख ॥११॥  
 सोनेसु गुत्तो विदिनिन्द्रियो<sup>७</sup> चरे , धम्मे ठिता अज्जवमद्दव रतो ।  
 रागानिगो सम्बदुक्खप्पहीनो , न लिप्पती दिट्ठसुतेसु धीरो ॥१२॥  
 इच्छतमत्य भगवा पुनप्पुन अक्खासि त<sup>८</sup> वेदयि मन्तपारगू ।  
 चित्राहि गायाहि मुनिप्पकासयि , निरामगघो असितो दुरत्तयो ॥१३॥

<sup>१</sup> C ब्रह्मरथु      \* C अज्जेन कुज्जा R अज्जनपुञ्ज      \* M  
 असुचिभाषमिस्सिता      \* R, B नत्थिवदिट्ठि, M नत्थि कुदिट्ठि  
<sup>२</sup> R, M उस्तुया      \* R न मच्छमस ननासकत्त, C न मच्छमस  
 नानासकत्त      \* M जगिहुत्तस्सुपसेवना (?)      \* M मन्ताहुति  
 R विजित्तिन्द्रियो      \* M लिप्पति      \* M न

मुत्त्वान दृढस्म शुभासित पद, निरामगध सञ्चदुक्कण्णन्त्न ।  
नीचमना चन्ति तथागतस्स, तत्थव पब्बज्जमरोचयित्थानि ॥१८॥

आमगधमुत्त निदिठ्ठ ।

### ( १५—हिरि सुत्त २।३ )

हिरि त्तरन्त विजियुच्छमान सत्ताहमस्मि इति भासमान ।  
सद्वानि वम्मनि अवाग्गिन्त नमो ममनि वसि न विजग्ग्या ॥१॥  
अनवय पिय वाच यो मित्तमु पकुप्पति ।  
अवरान्त भासमान परिजानन्ति पण्डिता ॥२॥  
न सो मित्ता यो सत्ता अप्पमत्ता भेदादक्की रथमवाग्गुप्पत्ता ।  
मस्मि च मनि उरसीव पुत्ता स व मित्तो यो परहि अभग्गो ॥३॥  
पामुज्जकरण ठान पससावहन सुण ।  
फलानिसरो भावेति वन्तो पोरिस धुण ॥४॥  
पविक्करोत पीत्वा रम उपसमस्स च ।  
निद्दरो हाति निम्पापो धम्मपीतिरस्स विवड्ढि ॥५॥  
हिरिसुत्त निदिठ्ठ ।

### ( १६—महामगल सुत्त २।४ )

एव म मुत्त । एक समय भगवा सावत्थिय विहरनि जेतवन अनाथपिण्डिकस्स आरामे । अथ सो अज्जतरा देवता अभिन्ताय रत्तिया अभिवन्तवण्णा कवलक्कप्प जेतवन जोभामत्वा यन भगवा तेनुपसक्कि उपसक्कमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एवमन्त अट्ठासि । एवमन्त ठिता सो सा दवत्ता भगवन्त गाथाय अचमासि—

बहू देवा भनुस्सा च मगलानि अचिन्तयु ।  
आकखमाना सा चान् बूहि मग्गमुत्तम ॥१॥



एवो समणानि । उता समणो समणो एता याव जातमि यं वा सा  
 गमणो, यं वा समणो णि । अय सा मूचिलोमा यत्थो या भगवा तेनुत्तमि  
 उगममिक्वा भगवता राय उपनामसि । अय सा भगवा काय अपनामसि । अय  
 सा मूचिलोमो यत्थो भगवन् एतादा—मायसि म समणानि । उ ग्याह त  
 आवुतो भावामि अणि उ त मयस्सो पापका नि । पञ्च त ममण पुच्छिगमि  
 मच म न ध्यावस्मिस्सि णित्ता वा त भिगिगस्सामि एत्थ वा त पास्सामि,  
 पास्सु वा गहेत्वा पारमयाय भिपिस्सामीनि । उ ग्याह आवुतो पस्सामि सत्थेव  
 लारु समारत्ते सन्नत्ताव तस्समणशालाणिय णजाय तत्तमनुरत्ताय यो म णित्ता वा  
 भिपम्य एत्थ वा पास्साम्य, पास्सु वा गहेत्वा पारमयाय भिपेस्स । अणि च त्व  
 आवुतो पुच्छ यत्तावत्सीति । अय सो मूचिलोमा यत्थो भगवन् गाथाय  
 अज्जाभाणि—

रागो च दासा च कुतो निज्जा । अरती रता लामहसो कुताजा ।  
 कुतो ममुद्गाय मनोविनररा । कुमारवा धंक्<sup>१</sup> मिवास्सज्जि ॥१॥  
 रागो च दोमो च ततो निज्जा । अरती रती लामहसो इतोजा ।  
 ततो ममुद्गाय मनोविनररा । कुमारवा धक्<sup>२</sup> मिबोस्सत्ति ॥२॥  
 स्सहजा अत्तसभूता निगोधस्साव तथजा ।  
 पुप्प विमत्ता कामेसु मालुका विज्जा वने ॥३॥  
 ये न पजानन्ति यतो निदान । त न विनोयेन्ति गुणादि यक्त्त ।  
 त दुत्तर जीघमिम तरन्ति । अतिष्णपुत्त अपुनम्मवयाणि ॥४॥  
 मूचिलोममुत्तं निट्ठत्त ।

( १८—धम्मचरिय सुत्त २।१ )

धम्मचरिय गृहाचरिय एतदाहु वमुत्तम ।  
 पम्बजिताऽपि चे ह्योति अगारस्मानगारियं<sup>३</sup> ॥१॥  
 सा चे मुखरजानिको विहेसाभिस्तो भयो ।  
 जीवित तस्म पाप्पियो रज मज्जति उत्तनो ॥२॥  
 रत्तहाभिस्तो भिक्खु मोहधम्मन आवणो<sup>४</sup> ।  
 अक्खातऽपि न जानानि धम्म बुद्धन देसित ॥३॥

\* R धक् \* M अगारानगारिय \* M आवुतो

विहेस भावित्तान अविज्जाय पुरस्सतो।  
 मक्खिंसे न जणानि मग्ग निरयगामिन ॥४॥  
 विनिपात्त समापत्तो गम्भा गम्भ तमा तम ।  
 स वे ताविसक्को भिक्खु पेच्च दुक्ख निगच्छति ॥५॥  
 शूयन्पो यथा अस्स सपुण्णो गणवस्सिक्को ।  
 यो<sup>१</sup> एवम्पो अस्स दुब्बिसोधो हि सगणो<sup>२</sup> ॥६॥  
 य एवत्प जानाय भिक्खवा गहनस्सित ।  
 पापिच्छ पापसत्तप्प पापआचारगोचर ॥७॥  
 सन्दे समग्गा हुत्वान अभिनिब्बिज्ज याय<sup>३</sup> न ।  
 पारण्डव निद्धमथ कसम्बु अपक्कसप<sup>४</sup> ॥८॥  
 ततो पलापे वाहय अस्समणे समणमानिने ।  
 निद्धमित्त्वान पापिच्छे पापआचारगोचरे ॥९॥  
 सुद्धा सुद्धेहि सवास वप्पयद्धो पनिस्सता ।  
 नत्ता समग्गा निपका दुक्खस्सन्त करिस्सयाणि ॥१०॥

धम्मचरियमुत्त<sup>५</sup> निट्ठित ।

( १६—ब्राह्मणधम्मिक-सुत्त २।७ )

एव मे सुत्त । एव समय भगवा सावस्थिय विहरति जतवने अनायपिण्डवस्स  
 आराम । जय खो सबहुला कोसलवा ब्राह्मणमहासाला जिण्णा बुद्धा महल्लका  
 अद्दगता वयो अनुप्पता या भगवा तनुपसकमिस्सु, उपसवमित्था भगवता सद्धि  
 सम्मोदिसु सम्मोत्तनीय कय साराणीय वीतिसारेत्था एकमन्त निसीदिसु ।  
 एकमन्त निसिन्ना खो ते ब्राह्मणमहासाला भगवन् एत्तवोचु—मदिस्सन्ति नु  
 खो भो गोतम एत्तरहि ब्राह्मणा पोरानान ब्राह्मणान ब्राह्मणधम्मोऽति । न खो  
 ब्राह्मणा सदिस्सन्ति एत्तरहि ब्राह्मणा पोरानान ब्राह्मणान ब्राह्मणधम्मोऽति ।  
 माधु नो भव गोतमो पोरानान ब्राह्मणधम्म भासतु सवे भो गोतमस्स अगत्ति ।  
 तेन हि ब्राह्मणा सुणाथ, साधुव मानसिकरोथ भासिरमापीति । एव भोति  
 खो ते ब्राह्मणमहासाला भगवतो पच्चस्सोग्ग । भगवा एत्तवोच—

<sup>१</sup> C, M यो च      <sup>२</sup> M अगणो      <sup>३</sup> M अभिनिब्बिज्जियाय,  
 R अभिनिब्बिज्जयाय,      B अभिनिब्बिज्जियाय      <sup>४</sup> M अवक्कसप  
<sup>५</sup> B धम्मचरियमुत्त ति कपिलमुत्त

[illegible]

सुनुमात् महाकाया वण्णवन्ता यसस्सिनो ।  
 ब्राह्मणा महि धम्महि निच्चाविच्चेसु उस्सुवा ।  
 याव लोअं अवात्तिसु सुवमेधित्थय पजा ॥१५॥  
 तेस आसि विपत्तासो दिस्वान अणुतो अणु ।  
 राजिनो च वियावार नारियो समल्वना ॥१६॥  
 रथ चाजञ्जसयुत्त मुवत्त चित्तसिब्बने ।  
 निवमने निवेस च विभस भागसो मिते ॥१७॥  
 गोमण्डलपरिब्बूळ्ह नारीवरगणायुत्त ।  
 उळार मानुस भोग अभिज्जायिसु ब्राह्मणा ॥१८॥  
 ते तत्थ मन्ते गयेत्वा ओस्वान तदुपागमु ।  
 पहतधनघञ्जोसि (यजस्सु बहु ते वित्त) यजस्सु बहु ते धन ॥१९॥  
 ततो च राजा सञ्जत्तो ब्राह्मणेहि रथसभो ।  
 अस्समेध पुरिसमेध (सम्भापास) <sup>१</sup>चाजपेय्य निरग्गळ ।  
 एते याग यजित्वान ब्राह्मणान अदा धन ॥२०॥  
 गावो सयन च वत्थ च नारियो <sup>२</sup> समल्वता ।  
 रथ चाजञ्जमयुत्ते मुवत्त चित्तसिब्बने ॥२१॥  
 निवेसनानि रम्मानि सुविमत्तानि भागसो ।  
 नानाधञ्जस्स पूरेत्वा ब्राह्मणान अदा धन ॥२२॥  
 त च तत्थ धन लद्धा सत्तिधिं समरोचयु ।  
 तेस इच्छावनिष्णान भिय्यो तण्हा पवढदय ।  
 ते तत्थ मन्त गयेत्वा ओस्वान पुन <sup>३</sup>मुपागमु ॥२३॥  
 यथा आपो च पठवी हिरञ्ज धनधानिय ।  
 एव गावो मनुस्सान परिव्वारो सो हि पाणिन ।  
 यजस्सु बहु त वित्त यजस्सु बहु ते धन ॥२४॥  
 ततो च राजा सञ्जत्तो ब्राह्मणहि रथेमभा ।  
 नक्कमतसहस्सियो <sup>४</sup> गावो अञ्ज अघातयि ॥२५॥  
 न पादा न विसाणन नास्सु हिंसन्ति नन वि ।  
 गावो ण्ठरसमाना सारत्ता धुभूहना ।  
 ता विमाणे गहेत्वान राजा सयन घातयि ॥२६॥

<sup>१</sup> R चावपेय्यं<sup>२</sup> R नारिया च<sup>३</sup> C पुनुपागम<sup>४</sup> R



ततो च देवा विराट् इति असुरगण्यता ।  
 अधश्मा इति परान्दु य सत्त्वं तिथी गत ॥२७॥  
 तयो रोगा पुरे आगु दृच्छा अनयन जरा ।  
 तमूल च ममारभा अद्वातवुनिमागमु ॥२८॥  
 तमो अधश्मो दण्डान् ओसरन्ता पुगणो बहू ।  
 अद्मिनायो हृज्जनि धम्मो धगणि याजया ॥२९॥  
 एवमेतो अनुधम्मो पोरणो विज्जुगगणितो ।  
 यत्थ एदिमव पत्ताति याजय गरह्णा ज्ञो ॥३०॥  
 एव धम्मो वियापन विभिन्ना मुद्देस्सिवा ।  
 पुप्पु विभिन्ना गतिया पति भरिया ब्रमज्जय ॥३१॥  
 गतिया उह्वयधू च ये चञ्ज गोत्तरक्खिता ।  
 जातिवाद निरुत्था वामानं वममागमुति ॥३२॥

एवं वृत्त ते ब्राह्मणमहासाला भगवन् एतन्वोच—अभिवरन् भो गोम  
 पे० धम्मो पवासिता, एते मय भवन्त गोम मरण गच्छाम धम्म च भिक्षुसुष  
 च । उपासक भो भव गामो धारेतु अज्जतम् पाणुपेन मरण गेति ।

ब्राह्मणधम्मिकसुत्त निद्वित ।

( २०—नात्ता-सुर २८ )

यस्मा णि धम्म पुरिसो विज्ज्या, इन्दव न ख्वा पूजय्य ।  
 मो पूजिता तस्मि पसन्नचित्ता वत्सुतो पातुकराणि धम्म ॥१॥  
 तट्ठि वत्थान निसम्म भीरा धम्मानुधम्म पटिपज्जमानो ।  
 विज्जु विभावी निपुणो च होति यो तास्मि भजति अप्पमत्ता ॥२॥  
 मुद च वात उपसवमाना जनागतत्थ च उमुयव च ।  
 इधव धम्म अविभावयिवा अविनिष्णवम्भो मरण उपेति ॥३॥  
 यया नरो आपम आतरित्वा महोदिन सल्लि सीधमोत ।  
 सा वुम्हमानो अनुसोनगामी, किं सो परे सन्नरति तारयतु ॥४॥  
 तथव धम्म अविमानयित्वा बहुस्सुगान अनिसामयज्जथ ।  
 सय अजान अविनिष्णवम्भो किं मो परे मग्गवि विज्यपेत्तु ॥५॥

यथापि नाव ऋद्धमागतिना, पिपनरितान<sup>१</sup> मममिभूता ।  
 सो तारये तस्य ऋद्धपि अञ्जो, तन्नूपयञ्जु<sup>२</sup> कुत्तत्रो मुतीमा<sup>३</sup> ॥६॥  
 एवंपि यो वेत्तु भावित्तो ऋद्धस्मुता होति अवघघम्मो ।  
 गो यो गरे निज्जपय पज्जान मोतावधानूपनिमुपपन्नो ॥७॥  
 नम्मा ह्ये मणुस्मि भजय यथापि चैव बहुस्सुत च ।  
 अञ्जाय अथ पटिपज्जमाना विज्जातघम्मो गो मुता अभयानि ॥८॥  
 नावामुत्त<sup>४</sup> निद्धित

### ( २१—विंसील मुत्त २।६ )

विंसीलो वि समाचारो वानि धम्मनि ग्रह्य ।  
 नरो सम्मा निविट्ठस्स उत्तमत्य च पापुण ॥१॥  
 वद्धापवापी<sup>१</sup> अनुमुप्यरा मिया, बालञ्जु चम्म गहन<sup>२</sup> म्मनाय ।  
 धम्मि वथ तरयित मणञ्जु, मुणय्य सत्तञ्च सुभासितानि ॥२॥  
 कालेन गच्छ गहन सनाम, यथ निरत्तवा नियातमुत्ति ।  
 अत्य धम्म रायम पत्तञ्चरिय, अनुत्तरे चैव समाचरे च ॥३॥  
 धम्मारातो धम्मगतो धम्मे ठिता धम्मपिनिन्दयञ्जु ।  
 नवाररे धम्मसत्तेयवा तच्छहि नीयथ सुभासितनि ॥४॥  
 हस्ता जप्प परिव्व पदाम, भायान्त कुहन गिद्धिमान ।  
 सारम्भनयस्सवसावमुच्छ हित्वा चरे वीनमन्ना ठित्तो ॥५॥  
 विज्जानसारानि सुभासितानि मुत्त च विज्जान समाधिसार ।  
 न तम्म पञ्जा च मुत्त च वड्ढति, यो साल्लो होति नरो पमतो ॥६॥  
 धम्म च ये अरियपणेत्तिने रत्ता अनुत्तरा ते यचरा मनसा धम्मता ॥७॥  
 ने सति-सोत्तञ्च समाधि-मण्डिता मुत्तस्स पञ्जाय च सारमज्जुति ॥८॥  
 विंसी-मुत्त निद्धित

<sup>१</sup> B, M पिपन <sup>२</sup> B, M तन्नूपयञ्जु <sup>३</sup> M मतीमा <sup>४</sup> B  
 धम्ममुत्त, नावामुत्तति पि <sup>१</sup> M वद्धापवापी <sup>२</sup> R, C गहन

## ( २२—उद्गान-मुत्त २।१० )

उद्गुह्य निमील्य वा अथो मुपिनन वा ।  
 आतुगान हि वा निहा सत्त्वविद्वान् रप्यन् ॥१॥  
 उद्गुह्य निमील्य दद्वह सिम्पय सन्धिया ।  
 मा वा पपत्त विज्जाय मञ्चुराज्ज<sup>१</sup> अमाहमिष पमानुमे ॥२॥  
 थाय द्वा मनुस्सा च मित्ता तिट्ठन्ति अतिथया ।  
 तरपण पिसत्तिक मणो य मा उपच्चगा ।  
 मणाताता हि माचन्नि निरयम्हि समण्यिता ॥३॥  
 पमादा रजो पमादो<sup>२</sup> पमाणुपनिता रजो ।  
 अपमान्न विज्जाय जम्बहे सत्त्वमत्तनो<sup>३</sup>नि ॥४॥

उद्गानमुत्त निद्वित

## ( २३—राहुल सुत्त २।११ )

मच्चि अभिण्हमवासा नावज्जानासि पण्डित ।  
 उक्काषारो मनुस्सान मच्चि अपघितो तथा ॥१॥  
 नाह अभिण्हमवासा अवज्जानामि पण्डित ।  
 उक्काषारो मनुस्सान निच्च अपघिता मया ॥२॥  
 वत्थुपाथा<sup>१</sup>  
 पचवामगुणे हित्वा पियस्से मनोरम ।  
 सद्धाय घरा निक्खम्म हुवणस्तत्तररो भव ॥३॥  
 भित्त भजस्सु कयाण पन्त<sup>२</sup> च मयनासन ।  
 विवित्त अण्णनिग्घोस मत्तञ्जु<sup>३</sup> होहि भोजन ॥४॥  
 श्रीवरे पिक्कपान च पच्चय सयनासन ।  
 एनेमु तण्ह भावामि मा लोभ पुत्तगगमि ॥५॥  
 शवुतो पानिमोकक्खस्मि वन्धियभु च पचसु ।  
 सनि नायगता त्यत्थु निब्बिटावहुलो भव ॥६॥

निमित्त परिवज्जेहि सुभ रागूपनाहित ।

अमुभाय चित्त भावहि एवग्ग मुममाहित ॥७॥

अनिमित्त च भावेहि मानानुसयमुज्जह ।

ततो मानाभिसमया उपसन्ता चरिस्मगीति ॥८॥

इत्थ सुद भगवा आयम्मन्त राहु इमाहि गाथाहि अभिण्ह ओवन्तीति ।

राहुसमुत्त निद्वित

( २४—वगीस-सुत्त २।१२ )

एव मे सुत्त । एव समय भगवा आळविय बिहरति अगाळव चेनिय । तन  
यो पन समयन आयस्मतो वगीसस्स उपज्जायो निग्रोधकप्पो नाम धरा  
अगाळवे चेतिमे अचिरपरिनिब्बुतो होति । अथ खो आयस्मता वगीसस्स  
रहोगनस्स पटिसल्लीनस्स एव चेतमो परिधिक्को उदपादि—परिनिब्बुतो नु यो  
मे उपज्जाया उदाहु नो परिनिब्बुतोऽनि । अथ खो आयस्मा वगीसो सायण्हसमय  
पटिसल्लाना बुद्धितो येन भगवा तेनुपमक्कमि, उपमक्कमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा  
एकमन्त निमीति । एकमन्त निसिज्जो खो आयस्मा वगीसो भगवन्त एतदवोच—  
इध मय्ह भन्ने रहोगनस्स पटिसल्लीनस्स एव चेतमो परिधिक्को उदपादि—  
परिनिब्बुतो नु खो मे उपज्जायो, उदाहु नो परिनिब्बुतोऽति । अथ खो आयस्मा  
वगीसो उट्ठायासना एकस चीवर कत्था यन भगवा तेनज्जलि पणामेत्वा भगवन्त  
गाथाम अज्जभासि—

पुच्छाम<sup>१</sup> सत्थार अनोमपज्ज , ण्ठिदेव धम्मे यो विचिक्किञ्चान छेत्ता<sup>२</sup> ।

अगाळव कालमवासि भिक्खु जानो यमस्सा अभिनिब्बुतत्ता ॥१॥

निपाधकप्पा ण्ठि तस्स नाम , तथा कत भगवा ब्राह्मणस्स ।

सो त नमस्स अचरि<sup>३</sup> मृत्यपेक्खो , आग्दविरियो ण्ठहपम्मदस्मी ॥२॥

त मावक सक्क मयपि सब्बे , अज्जातुमिच्छाम समन्तक्कम् ।

समवट्ठिना ना सवणाय मोना , तुव नो मत्था त्व अनुत्तरोमि ॥३॥

छित्तव नो विचिक्किञ्छ बूहि मेज्ज , परिनिब्बुत वण्य भूरिपज्ज ।

मज्जेव ना मास समन्तक्कम् , सक्कोन दवान सहस्समेत्तो ॥४॥

<sup>१</sup> ३४३-३५८ थे० या० १२६३-१२७८

<sup>२</sup> M छेत्ता

<sup>३</sup> C



## ( २५ —सम्मापरिव्राजनिय-सुत्त २।१३ )

पुच्छाम मुनि पट्टपञ्च, निण्ण पारगत परिनिब्बुत छित्त ।  
 निक्खम्म धरा पनुज्ज वामे वय (भिक्षु) सम्मा सा ओक्कं परिव्रजय्य ॥१॥  
 यस्म मगल समूहता (दनि भगवा) उप्पात्ता सुपिना च लक्खणा च ।  
 सा मगलदोसविण्णहीनो<sup>१</sup> सम्मा सा ओक्के परिव्रजयेय्य ॥२॥  
 राग विनयेय मानुसेसु दिव्वेसु कामेसु चापि भिक्षु ।  
 अतिक्खम्म भव ममेज्ज धम्म, सम्मा सो ओक्कं परिव्रजय्य ॥३॥  
 विपिट्ठि क्त्वा<sup>२</sup> पसुनानि, कोध रग्गिय जहय्य भिक्षु ।  
 अनुरोध विरोध विण्णहीनो सम्मा सो ओक्कं परिव्रजय्य ॥४॥  
 हित्वा पिय च अप्पिय च, अनुपात्ताय जतिस्सिना कुहिञ्चि ।  
 मयोजनियहि विण्णमुत्तो सम्मा सा लोके परिव्रजय्य ॥५॥  
 न सो उपधीसु मारमेनि आत्तानेसु विनय्य छन्ताय ।  
 सा अनिम्मिगो अनज्जनय्यो सम्मा सा ओक्कं परिव्रजय्य ॥६॥  
 वचसा मनसा च कम्मना च अरिरुद्धो सम्मा विन्त्वा धम्म ।  
 नि-वाणपत्ताभिपययाना, सम्मा सो लोके परिव्रजय्य ॥७॥  
 यो वन्ति मग्गि न उण्णमेय्य अक्कुट्ठोप्पि न सच्चियेय भिक्षु ।  
 लद्धा परमाजन न मज्ज सम्मा सो ओक्के परिव्रजय्य ॥८॥  
 लोभ च भव<sup>३</sup> च विण्णहाय विरता छन्दवधना<sup>४</sup> च भिक्षु ।  
 सो निण्णकयवधो विसल्ला सम्मा सो लोके परिव्रजय्य ॥९॥  
 मारप्पमत्तनो विन्त्वा न च भिक्षु द्विनय्य कचि<sup>५</sup> लोके ।  
 यथानपिय जिन्त्वा धम्म सम्मा सो ओक्कं परिव्रजयेय्य ॥१०॥  
 यस्मानुगया न सन्ति केचि, भूला अकुमला समूहताम ।  
 सो निरामसो अनासयाना<sup>६</sup> सम्मा सो लोके परिव्रजयेय्य ॥११॥  
 आसवस्वीणो पहीनमानो, सब्ब रागपय उपातिवत्तो ।  
 दन्तो परिनिब्बुता छित्ता सम्मा सो लोके परिव्रजय्य ॥१२॥  
 सद्धो सुनया निषामन्तो वग्गगतेसु न वग्गसारि धीरा ।  
 लोभं दोस विनेय्य पटिष, सम्मा सो लोके परिव्रजय्य ॥१३॥

<sup>१</sup> C स मगलदोसविण्णहीनो (भिक्षु) R स मगलदोसविण्णहीना  
 भिक्षु सम्मा <sup>२</sup> M विपिट्ठि क्त्वा <sup>३</sup> C M भव <sup>४</sup> R छन्दवधना  
 नानो B छन्दवधनतो <sup>५</sup> M किञ्चि <sup>६</sup> R अनासयानो M  
 निरासो अनासयानो

मनुजविनो विरसच्छदो<sup>१</sup> धम्मगु वमी पारसू आजा ।  
 मत्तारविरोधजानुमन्ता मत्ता मो म्मा परिग्रह्य ॥१८॥  
 अतिमगु जागत्तमु माणि वण्णाणि<sup>२</sup> अतिव मुत्तिवज्जा ।  
 मत्तायानाहि रिगमन्ता मत्ता मा म्मा परिग्रह्य ॥१९॥  
 अज्जाय पं ममेव धम्म विवत्ति म्मात्त पत्तनमात्तावा ।  
 मत्तुपपी<sup>३</sup> परिग्रह्यानो<sup>४</sup> मत्ता मा म्मा परिग्रह्य ॥२०॥  
 अत्ता हि भगवा पत्तन एव दा मो एव विगति म्मा भिक्खु ।  
 मत्तमपात्रनिव न वातिरत्ता मत्ता मा म्मा परिग्रह्य ॥२१॥  
 तम्म परिग्रह्यनिवमुत्त<sup>५</sup> निर्दिष्ट

( १० — धम्मिह-मुत्त २११८ )

एव मे मुत्त । एवं समय भगवा सावर्णिपय रिहर्गि अत्रन अनार्थनिग्रिहम्भ  
 आराम । अथ सा धम्मिहो ज्ञातव्या गच्छि उपामत्तमोहि सद्धि यं भगवा  
 मनुजगमि उपामत्तमिवा भगवन्त अभिवात्त्वा एवमन् निमोति । एवमन्त  
 निमिस्सो सा धम्मिहो उपामत्तम भगवन्त वापाय अज्ञाभामि—

पुच्छामि तं गोतम भूत्तिवज्जा कर्षणं गावा साधु होति ।  
 यो वा अगारा अनगारमेति अगारितो वा पनुपामत्तामे ॥१॥  
 तुव हि म्मात्तम मद्दवस्स गति पत्तानामि परायण य ।  
 न कत्ति तुल्यो निपुणवत्सली तुव हि बुद्ध पवर वन्ति ॥२॥  
 सन्व तुवं ज्ञाणमयेच्च धम्म पवसेमि सत्त अनुत्तमानो ।  
 विरसच्छदो<sup>१</sup> ममन्तवन्तु विरोचमि रिमन्ते सम्भगे<sup>२</sup> ॥३॥  
 आगच्छि<sup>३</sup> ते मन्ति नागराजा, एरायणा नाम विनोति मुत्ता ।  
 मोणि मया मन्तयित्वा अज्जममा साधूनि सुत्तान पत्तीतरुपा ॥४॥  
 राजाणि तं धम्मवणा ववेरा उपति धम्म परिपुच्छमाना ।  
 तस्मापि त्व पुच्छितो भूमि धीर मो चापि सुत्तान पत्तीतरुपा ॥५॥  
 य वचित्ति निव्विया वात्ताला आजाविरा वा यन्ति वा निगण्ठा ।  
 पज्जाय त नानितरत्ति सव, टित्तो वजन्त विव मोधयामि ॥६॥

<sup>१</sup> M विवटच्छदो <sup>२</sup> R परिक्खया <sup>३</sup> B महासमयमुत्ततिग्रि  
<sup>४</sup> M विवटच्छदोस्ति <sup>५</sup> C आगच्छि

ये केचिज्जे ब्राह्मणा वादमीअ, बुद्धा चापि ब्राह्मणा सन्ति वचि ।  
 मब्बे तयि अत्यवद्धा भवन्ति ये वाऽपि चञ्ज्ज वादिनो मञ्ज्जमाना ॥७॥  
 अय हि धम्मो निपुणो सुखो च<sup>१</sup>, योऽय तया भगवा सुण्णवुत्तो ।  
 तमव सब्बे सुसूसमाना, त्व नो वद पुच्छिनो बुद्धसेट्ठ ॥८॥  
 सव्वेऽपिज्जे<sup>२</sup> भिक्खवो सनिसिन्ना उपासका चापि तथव<sup>३</sup> सोत ।  
 सुणन्तु धम्म विमज्जनानुबुद्ध, सुभासित वासवस्मेव देवा ॥९॥  
 मुणाय मे भिक्खवा सावयामि<sup>४</sup> वो धम्म धृत त च घराथ<sup>५</sup> सव्वे ।  
 ॠरियापथ पव्वजितानुलामिक, सव्वेष न अत्थत्ता मुतीमा<sup>६</sup> ॥१०॥  
 न व<sup>७</sup> विवाले विचरेय्य भिक्खु गाम च पिण्डाय चरय्य काले ।  
 अवलाचारि हि सज्जन्ति सगा, तस्मा विवाले न चरन्ति बुद्धा ॥११॥  
 रुपा च सद्दा च रसा च गघा, पस्सा च ये समदयन्ति सत्त ।  
 एतेसु धम्मेसु भिनय्य छन्द, कालेन सा पविस<sup>८</sup> पानरास ॥१२॥  
 पिण्ड च भिक्खु समयेन लद्धा, एको पटिक्कम्म रहो निमीद ।  
 अज्झत्तचिन्नी न मनो वहिद्धा, निच्छारये सगहित्तभावा<sup>९</sup> ॥१३॥  
 मचे<sup>१०</sup>पि मो सल्लप सावबन, अञ्जन वा केनचि भिक्खुना वा ।  
 धम्म पणीत तमुत्तहरेय्य, न पमुण<sup>११</sup> नोपि परूपवाद ॥१४॥  
 वाद हि एके पटिसेनियन्ति न ते पससाम परितपञ्ज ।  
 ततो ततो ने पसजन्ति सगा, चित्त हि त तत्थ गमेन्ति दूरे ॥१५॥  
 पिण्ड विहार सयनासन च, आप च मघाटिग्गुपवाहन ।  
 सुत्तवान धम्म सुगतेन देसित, सखाय मेवे वरपञ्जसावको ॥१६॥  
 तस्मा हि पिण्डे सयनासन च, आप च मघाटिग्गुपवाहन ।  
 एतेसु धम्मेसु अनुपठित्तो, भिक्खु यथा पोत्तखरे वारिग्गिन्दु ॥१७॥  
 गहट्ठवत्त पन वो वदामि, यथा करो सावको साधु हानि ।  
 न हेसो लब्भा सपरिग्गहन, पस्सतु मो केवलो भिक्खुधम्मो ॥१८॥  
 पाण न हाने न च धातयय्य न चानुजञ्जा हनन परेस ।  
 मव्वेसु भूनेसु निघाय दण्ड, य थावरा ये च तसन्ति लोक ॥१९॥

<sup>१</sup> C, M सुखोऽय <sup>२</sup> R सव्वे चिमे <sup>३</sup> M तत्थेव <sup>४</sup> M  
 सावयिस्सामि <sup>५</sup> M चरथ <sup>६</sup> M अत्यवस्तो मतिमा B अत्यवरसो  
 मुतीमा <sup>७</sup> M नो चे B नो वे <sup>८</sup> M समदयन्ति (?)  
<sup>९</sup> M पाविसे <sup>१०</sup> R, B सगहीत० <sup>११</sup> C पेसुन





भारा च शक्त किंसा उट्ठान् अथ राहुणे ।  
 क गो ॥ परि शम्भो १ धम्मिको च पुनाप  
 मुदमेतामि सुतामि चूचवग्गो नि वृत्तामि १ ।

---

१ C परिब्बाज च १ M रतनापथो हिरि च मगल सूचितोमेन ।  
 कपिला ब्राह्मणो पि च नाल (?) किंसील उट्ठानो । राहुलो पुन कप्पा च  
 परिब्बाजनियो तथा । धम्मिक च विदुनाहु चूळवग्गति चूहसा ति ।

न॥ अदिक्षे परिवर्ज्याय रिनि वरि सावरा युजामाता ।  
 न पारय हरत नानुज्ज्या म॥ अग्नि पग्नित्रयय ॥२०॥  
 अग्रहचरिय पग्नित्रयय अगारकास त्रिग्नत्र विज्जु ।  
 अमभुणन्ता पन ब्रह्मरिय पग्म पार नाविसामय ॥२१॥  
 मभग्गता वा परिसग्गता वा पवम्म धरा<sup>१</sup> न मुता भणय्य ।  
 न भासय्य भ॥ नानुज्ज्या म॥ अमूा पारिजयेय्य ॥२२॥  
 मज्ज च पान न मधानरेय्य भम्म म राय्य वा ग॥ट्टो ।  
 न पायय्य पिपन नानुज्ज्या<sup>२</sup>, उम्मान् त दनि न विन्त्तिपा ॥२३॥  
 म॥ हि पापानि करानि त्राग वग्गन्ति उज्ज्यापि जा पमत्त ।  
 गत अपुज्ज्यायत्तन विषज्जय उम्मान् मात्त दाव्वन् ॥२४॥  
 पाण ॥ हान न चाग्निप्रमार्ज्य मुता ॥ भाग ॥ च मज्जपा मिया ।  
 अग्रहानरिया विग्मेय्य मयता रति न भज्य विवात्तभाजन ॥२५॥  
 माल न धार<sup>३</sup> न च गथमाचरे मच उमाय च<sup>४</sup> गयय गयत्त ।  
 एत हि अट्ट गिरमाहुपोमय दुद्धन क्वन्तगुना पागिनि ॥२६॥  
 तनां च पग्गस्सुपग्गस्सुपोमय चानुद्धसि पचत्ति च अट्टमि ।  
 पान्हिरियपग्ग च पत्तमानसो अट्टगुपन सुममत्तप्प ॥२७॥  
 ततो च पातो उपपुपुपासथा अग्नेन पानन ॥ भिक्खुसुधं ।  
 पग्गवित्तो अनुमोमाना यचारह मविभजय विज्जु ॥२८॥  
 धम्मन मातापितरो भरेय्य, पयोजय धम्मिन सो वणिज्ज ।  
 एत गिहा वत्तय अपमत्ता सयपभ<sup>५</sup> नाम उपनि ण्हेज्जि ॥२९॥

धम्मिकमुत्त निहित

चूळगो दुतियो

नमः बभूव उदान—

रान प्रापय<sup>१</sup> मयममुत्तम ।

मूत्रियो लम्भारिया पुत्र प्रापय धम्मिक ।

एत भिक्खु महाराज पण्डवस्स पुरस्सतो ।  
 निर्गमो व्यग्घुसमोऽय सीहोऽव गिरिगमरे ॥१२॥  
 सुत्वा हूतवचन भट्टयानेन सत्तियो ।  
 तत्परमानरूपो निर्यामि यन पण्डवपब्बतो ॥१३॥  
 स यानभूमिं यापिवा याना जोरु सत्तियो ।  
 पत्तिवा उपसक्कम आसज्ज न उपाविसि ॥१४॥  
 निमज्ज राजा सम्मोदि कथ सारणिय<sup>१</sup> ततो ।  
 कथ सो वीत्तिमारेत्वा इममत्थ अभासथ ॥१५॥  
 युधा च दहरो चासि पठमुप्पत्तिको<sup>२</sup> सुमु ।  
 वण्णारोहन सपत्तो जातिमा विष सत्तियो ॥१६॥  
 सोभयन्तो अनीवग्ग नागमघपुरस्सतो ।  
 लामि भोग भुजस्सु जानि चज्जवाहि पुच्छिता ॥१७॥  
 उज्जु जनपत्तो<sup>३</sup> रागा हिमवतस्स पस्सतो ।  
 धनविरियन सपत्तो वीमग्गु निवेत्तिनो ॥१८॥  
 जानिच्चा<sup>४</sup> नाम गोत्तन सारिया<sup>५</sup> नाम जानिया ।  
 तम्हा कुग्ग पब्बजिता (ऽग्गि राज<sup>६</sup>) न काम अभिपत्थय ॥१९॥  
 कामेस्स्यागीनव दिस्वा नक्कम्म ण्दुत्तु खेमता ।  
 पधानाय गमिस्सामि एत्थ म रज्जनि मनोऽप्ति ॥२०॥

पद्यज्जामुत्तं निहित

( २८—पधान सुत ३।२ )

त म पधानपहित्त नां नेरब्जर पति ॥१॥  
 विपरक्कम्म क्षायन्त योगक्कयेमस्स पत्तिया  
 नमुची<sup>१</sup> करण वाच भासमानो उपागमि  
 निसो त्वमसि दुब्बण्णो सत्तिव मरण तव ॥२॥  
 सहस्सभागो मरणस्स एकमो तव जीविन ।  
 जीव भो जीविन मय्यो जीव पुज्जानि वाहसि ॥३॥

<sup>१</sup> R साराणिय    <sup>२</sup> C पठमुप्पत्तिया    <sup>३</sup> C जानपदो    <sup>४</sup> M  
 आदिच्छो    <sup>५</sup> M सारियो    <sup>६</sup> M नास्ति    <sup>७</sup> M नमुचि    M जीव

### ३—महाधरणी

( २७—पञ्चम स्त १०१ )

पञ्चम रित्तविगतामि मया पञ्चमि नस्यामा ।  
 यथा धामगमाला गो पञ्चमं गमरोरमि ॥१॥  
 मवाधोऽयं<sup>१</sup> चरात्राणां रजग्गायान इति ।  
 अभारामो च पञ्चमजा इति निश्चय पञ्चमि ॥२॥  
 पञ्चजितानां वाया पाताम्य विवञ्चयि ।  
 यदी<sup>२</sup> च्छनरित्ति क्रिया ज्ञानीय परितोषमि ॥३॥  
 अगमा राजगन् बुद्धा मयपानं पिरिध्वज ।  
 विष्णाय अभिहारमि आत्तिररररररणा ॥४॥  
 नमहमा विष्णिमारा पाताम्यि पतिट्टिमा ।  
 निम्मा ररररगमपन्न ममच अभामय ॥५॥  
 म भोलो निगामय अभिरूपो वरा<sup>३</sup> मुनि ।  
 चरणन येव सपक्षो युगमत च पत्तमि ॥६॥  
 ओक्खित्तचवप्पु सविमा ताय पीक्खुगमिअ ।  
 राजदूता विधावप्पु<sup>४</sup> बुद्धि भिक्खु ममिस्समि ॥७॥  
 ते पयिता राजदूता पिट्ठिता अनुवपिअ ।  
 मुट्ठि ममिस्समि भिक्खु वत्थ वामी भविस्समि ॥८॥  
 गणान चरणानो गुत्तद्वारो मुसुवुदा ।  
 निप्य पत अपूरेमि सपजानो पतिग्गमो ॥९॥  
 स पिण्डवार चरित्वा निस्सम्म नगरा मुनि ।  
 पण्डव अभिहारेमि एत्थ वामा भविस्समि ॥१॥  
 निस्वान धामूपगत तनो दूता उपाविअ ।  
 एको च दूतो जागत्वा राजिनो पन्निवत्थि ॥११॥

<sup>१</sup> M मवाधाय <sup>२</sup> M ब्रह्मा <sup>३</sup> M राजदूताभिधावत्तु

समन्ता धजिनि दिस्वा मुत्त माय सवाहन ।  
 मुद्धाय पच्चुग्गच्छामि मा म ठाना अवावयि ॥१८॥  
 य तेऽन नप्पमहनि सन गोवा मग्गेषा ।  
 तं ते पच्छाय मच्छामि आम पत्तन अम्मना<sup>१</sup> ॥१९॥  
 दासि वन्धान मवप्प सति च मुप्पतिट्ठित ।  
 म्हा रट्ठ विचरिस्म माया तिनय पुष ॥२०॥  
 त अणमत्ता पहितता मम सासनधारका ।  
 ज्जायस्स ते गमिस्सन्ति यय गन्त्वा न मोदये ॥२१॥  
 मत्त वस्मानि<sup>२</sup> भगवन्त अनुवा ध पत्ता पत्ता ।  
 आतार नापिमच्छिस्स मग्गुद्धस्स सत्तीमतो ॥२२॥  
 मन्वण्णज्ज पासाण धायसा अनुपरियगा<sup>३</sup> ।  
 अपेत्य मुद्ध विदम अपि अम्मन्ना सिया ॥२३॥  
 अलद्धा तथ अस्मा धायमेत्तो अपक्कमि ।  
 कारोन् मलमासज्ज<sup>४</sup> निम्बिणापम गानम<sup>५</sup> ॥२४॥  
 तस्म मोक्कपत्तस्स वीणा वच्छा अभम्मथ ।  
 ततो मा दुम्मना यया तधरनरधाययानि ॥२५॥

पधानसुत्त निट्ठितं

### ( २६—सुभासित-सुत्त ३।३ )

एव म सुत्त । एक समय भगवा सावत्थिय विहरनि जलवन ते०  
 भगवा एतन्वोध-धनूहि भिक्खर जगहि ममप्रागता वाचा सुभासिता होति न  
 दुग्भासिता, अनवज्जा च अननुवज्जा<sup>१</sup> च विज्झून । यन्महि चतूहि ? एव भिक्खवे  
 भिक्खु सुभासित येव भासति ना दुग्भासित धम्म येव भासति नो अधम्म पिय  
 येव भासति नो जणिय, सच्च येव भासति ना जलिय । इमेहि सो भिक्खर चतूहि  
 अगहि ममप्रागता वाचा सुभासिता होति नो दुग्भासिता अनवज्जा च अननु  
 वज्जा विज्झूनानि ।

<sup>१</sup> R अम्हना    <sup>२</sup> M सत्तवस्स    <sup>३</sup> M अनुपरियगा    <sup>४</sup> C सेल्मा  
 वज्ज    <sup>५</sup> स० नि० I 1-4<sup>६</sup> 127<sup>७</sup> गोतमा    <sup>८</sup> म०—अनुपदज्जा



नितित्तितुवामो अहोमि । अथ सो मुन्दरिवभारद्वाजस्म ब्राह्मणस्स एतदहोसि-  
मुण्यापि हि इधेवच्चे ब्राह्मणा भवन्ति यन्नूनाह उपसवमित्वा जातिं पुच्छेय्यन्ति ।  
अथ वा मुन्दरिवभारद्वाजो ब्राह्मणो येन भगवा तनुपसवमि, उपसवमित्वा भग  
वन्त एतदवाच-विज्जन्तो भवन्ति । अथ सो भगवा मुन्दरिव भारद्वाज ब्राह्मणं  
मायाहि अज्जभासि—

न ब्राह्मणा नोऽमि न राजपुत्तो, न वस्सायना उद<sup>१</sup> कोवि नोऽमि ।  
मात्त परिज्जाय पुणुज्जनान, अविचनो मन्म चरामि लोक् ॥१॥  
सधाटिवासी अगहो<sup>२</sup> चरामि, निवुत्तवेसा अभिनिव्युत्ततो ।  
अल्लिप्पमाना इध माणवेहि अवक्कल<sup>३</sup> म (ब्राह्मण) पुच्छमि<sup>४</sup> मात्तपज्ज ॥२॥  
पुच्छन्ति वे भो ब्राह्मणा ब्राह्मणहि सह ब्राह्मणो नो भवन्ति ।  
ब्राह्मणो वे त्व ब्रूमि म च ब्रूमि अब्राह्मण ।  
त सार्धित्त पुच्छामि निपद चतुवीसतक्कर ॥३॥  
वि निस्सिन्ना इसया मनुजा एत्तिपा ब्राह्मणा,  
देवतान यज्जमकप्पयिसु पुणु इध एक्के ।  
यन्तगू वेदगू यज्जकाले, यस्माहुत्ति लभे तस्मिज्जन्ति ब्रूमि ॥४॥  
जट्ठा हि तम्म हुतमिज्जे (ति ब्राह्मणो), य तादिस वदगू जहमाम ।  
मुम्हादिसान हि अदस्सनेन यज्जा जनो भुज्जति पूरळाम ॥५॥  
तस्मानिह त्व ब्राह्मण अत्यन, अयिको उपसवम्म पुच्छ ।  
सन्त विधूम अनिध निरास अप्पेविध अभिविदे सुमध ॥६॥  
यज्ज रताह (भो गौतम) यज्जा यिट्ठुकामो ।  
माह पजानामि अनुसासतु म भव यत्थ हुत इज्जत ब्रूहि मे त ॥७॥  
तेन हि त्व ब्राह्मण जान्हस्सु सोत्त धम्म ते देसिस्सामि—  
मा जातिं पुच्छ चरण च पुच्छ वट्ठा हव जायन्ति जातवेदो ।  
नीवा कुलीनोपि मुनी धितीमा आजानियो होति द्विरीमिसेधो ॥८॥  
सच्चेन दन्तो न्मसा उपेनो वेत्तन्नगू वुत्तिवव्हावरियो ।  
कालेन तमिह हव्य पवेच्छ यो ब्राह्मणो पुज्जपेक्खो यजेथ ॥९॥  
ये वामे हित्वा अगहो<sup>५</sup> चरन्ति सुमज्जतत्ता तस्स<sup>६</sup> च उज्जु ।  
वात्त तसु हव्य पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुज्जपक्खो यजेथ ॥१०॥

<sup>१</sup> M नुद <sup>२</sup> C, R, B अगिहो <sup>३</sup> M अल्ल <sup>४</sup> R पुच्छ

<sup>५</sup> R अगिहा



अथोच भगवा २६ ब्रूवा सुगतो जथापर एतन्वाच सत्या—

शुभासित उत्तममाहु सन्नो । धम्म भणे नाधम्म ते दुत्तिय ।

दिय भण नाप्पिय त तनिय । सच्च भण नालिक् त चतुत्थग्नि ॥१॥

अथ त्वो जायस्मा वगीसो उट्टयासना एक्स बीवर कत्वा मन भगवा  
मन-जालि पणामत्वा भगवन्त एतद्वोच-पटिभाति म सुगन्ति । पटिभातु त  
वगीसानि भगवा जवाच । अथ त्वो आयस्मा वगीसो भगवन्त सम्भुवा मारप्पाहि  
पाथाहि अभिरयधि—

तमेव भास भावस्य यावत्तान न तापय ।

परे च न विहिमेय्य सा व बाजा मुभासिता ॥२॥

पियदाधमव भासेय्य मा यावा पटिनञ्जिता ।

य अनायास पापानि परेम भासने पिय ॥२॥

मच्छं वं अमतां वाचा एम धम्मो सत्तन्तनो ।

सत्ये अत्ये च धम्मं च आहु सन्तो पविट्ठिता ॥४॥

य बुद्धो भागता<sup>१</sup> वाच क्षम निब्बानपत्तिया ।

दुष्कृतसन्नाहिरियाय सा य वाचानमुत्तमानि ॥५॥

सुभासितमुस निटिठत ।

( ३०—सुन्नरिक्खाद्धाज सुत्त ३।४ )

एवममुनिः । एकसमये भगवतो योगेश्वरविचरन्ति मुनिरिवाम नम्रिया तीरे ।  
 तत्र सो पते समयतः मुनिरिव भारद्वाजो ब्राह्मणो मुनिरिव नम्रिया तीरे जमि  
 तहनि अगिह्वत पश्चिर्गति । अथ सो मुनिरिव भारद्वाजो ब्राह्मणो आगि जुह्वितो  
 अगिह्वत पश्चिरिथा अज्ञायासना ममन्ता चतुर्दिगा अनुविशेतिमि-यो न सो  
 म हृष्यमेव भुञ्जम्यानि । अहसा सो मुनिरिव भारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्त अरि  
 ह्न अञ्जलरिभ रसपूत ममीम पारुपत निसिध शिवान वामन हचन हञ्ज  
 नमः शम्वा शिषणन हत्यन नमश्चतुर्गैवा यन भगवा तनुपमवमि । अथ  
 सो भगवा मुनिरिव भारद्वाजस्य ब्राह्मणस्य पामहन माग रिपरि । अथ ना  
 मुनिरिव भारद्वाजो ब्राह्मणो, भुञ्जो अथ भव भुञ्जो अथ मयनि ततोऽप्यन

हुन च मरुह हुतमत्यु सञ्च य तान्ति वदगुन अलत्थ ।  
 ब्रह्मा हि सक्वि पटिगण्हातु मे भगवा भुञ्जतु मे भगवा पूरळाम ॥२५॥  
 गाथाभिगीत मे अभोजनय्य मपस्सत ब्राह्मण नस धम्मो ।  
 गाथाभिगीत पनुदन्ति बुद्धा धम्मे सति ब्राह्मण वुत्तिरेसा ॥२६॥  
 अञ्जन च वेवलिन महेसि , सीणासव कुवकुञ्चनूपसन्त ।  
 अत्रेन पानन उपटठहस्सु खेत हि त पुञ्जपेक्कस्स हाति ॥२७॥  
 साधाह भगवा तथा विञ्ज , यो दक्खिण भुजय्य मान्तिस्सम ।  
 य यञ्जकालं परियसमानो , पप्पुय्य तव सामन ॥२८॥  
 सारम्भा यस्स विगता चित्त यस्स अनाविल ।  
 विप्पमुत्तो च कामेहि धीन यम्म पनून्ति ॥२९॥  
 सीमन्तान विननार जानिमरणकोविद ।  
 मुनि मोनेय्यसपन्न तान्ति यञ्जमाणत ॥३०॥  
 भकुटिं विनयित्वान पज्जलिका नमम्मय ।  
 पूजय अत्तपानेन एव इज्जन्ति दक्खिणा ॥३१॥  
 बुद्धा भव जरहन्ति पूरळाम पुञ्जकवत्तमनुत्तर ।  
 आधागो सम्बलोकस्स , भोतो दिन्न महप्पन्ति ॥३२॥  
 अथ खो सुन्दरिक्कभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्त एतब्बोच-अभिककन्त भा  
 गोतम प० अनक्कपरियायेन धम्मो पवासिता । एसाह भवन्त गोतम  
 सरण गच्छामि धम्म च भिक्खु सय च । लभेय्याह भोतो गोतमस्स सान्तिक्क  
 पव्वज्ज लभय्य उपमपइन्ति । अलत्थ खो सुन्दरिक्कभारद्वाजो ब्राह्मणो  
 पे० अरहत अहोसीति ।

सुन्दरिक्कभारद्वाजसुत्त निठिठत ।

### ( ३१—माघ-मुत्त ३।५ )

एव मे सुत । एव समय भगवा राजगहे विहरति गिज्झकूटे पव्वते अथ एसा  
 माघो माणवो यन भगवा तनुपमकमि । उपमकमित्वा भगवता सद्धि सम्मोहि ।  
 सम्मोदनीय एय साराणाय वीत्तिमारेत्वा एवमन्न निगोहि । एवमन्न निसीदो एतो  
 माघो माणवो भगवन्त एतब्बोच-अह हि भो गोतम दायवो दानपति वञ्ज्जु  
 याचयागो धम्मेन भोग परियसामि धम्मन भोग परियेमित्वा धम्मन्दडि भोगहि  
 धम्माधिगतहि एवस्स पि द्दामि, द्विन्न पि द्दामि तिण्ण पि द्दामि चतुप्प पि  
 द्दामि पचन्न पि द्दामि, छन्न पि द्दामि, सत्तन्न पि द्दामि, अद्दुप्प पि द्दामि  
 नवप्प पि द्दामि दसन्नं पि द्दामि, बीसायप्पि द्दामि तिसायप्पि द्दामि



य वे न तप्तासु उपानिपन्ना , विनरेय्य ओष अममा चरन्ति ।  
 कालेन तमु हव्य पवच्छे , यो ब्राह्मणो पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥९॥  
 येस<sup>१</sup> नप्ता नत्थि बुहिञ्चि ओ<sup>२</sup> , भवाभवाय इध वा हुर वा ।  
 कालेन तेमु हव्य पवच्छे , यो ब्राह्मणो पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥१०॥  
 य कामे हित्वा अमहा चरन्ति मुसञ्जनत्ता तमरञ्ज उञ्जु<sup>३</sup> ।  
 कालेन तमु हव्य पवच्छे , यो ब्राह्मणा पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥११॥  
 य वीतरागा मुसमाहितिद्विया , चन्दो<sup>४</sup> राहुगह्णा पमुत्ता ।  
 कालेन तेमु हव्य पवच्छे यो ब्राह्मणो पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥१२॥  
 समितादिनो वीतरागा अरापा , यम गति नत्थि इध विप्पहाय ।  
 कालेन तेमु हव्य पवच्छे , यो ब्राह्मणा पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥१३॥  
 जहेत्वा जानिमरण असस , कयकय सञ्जमुपातिवना ।  
 कालेन तेमु हव्य पवच्छे यो ब्राह्मणो पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥१४॥  
 य अत्तपीपा विहरन्ति लोके , अकिंचा सम्बधि विप्पमुत्ता ।  
 कालेन तमु हव्य पवच्छे , यो ब्राह्मणो पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥१५॥  
 य हेत्थ<sup>५</sup> जानन्ति यथातथा इद , अयमन्तिमा नत्थि पुनम्भवोति ।  
 कालेन तेमु हव्य पवच्छे , यो ब्राह्मणो पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥१६॥  
 यो थदगू सानरतो सत्तीमा<sup>६</sup> , समाधिपत्ता सरण बहुत ।  
 कालेन तम्हि हव्य पवच्छे , यो ब्राह्मणो पुञ्जपेक्त्वो यजेथ ॥१७॥  
 अढा अमोषा मम पुच्छना अहु , अवत्तासि मे भगवा न्कित्तणेय्ये ।  
 त्व हेत्थ जानासि यथातथा इद , तथा हि तं विदिता एस थम्मो ॥१८॥  
 यो याचयोगो दानपति गह्णो (इति माघो भाणवो) ,  
 पुञ्जात्पिक्वो यजति पुञ्जपेक्त्वो ।  
 दद परेस इध अन्नपान अक्खाहि म भगवा यञ्जसपद ॥१९॥  
 यजस्मु यजमानो (माघा नि भगवा) , सम्बत्थ च विप्पसा<sup>७</sup>हि चित्त ।  
 जारम्भण यजमानस्स यञ्ज<sup>८</sup> एत्थ पत्तिद्वाम जहानि दोस ॥२०॥  
 मो<sup>९</sup> वीतरागो पविनय्य<sup>१०</sup> दोस , मत्त चित्त भावय अप्पमाण ।  
 रत्ति दिव सत्तत अप्पमतो सम्भा दिमा करत अप्पमञ्ज ॥२१॥

<sup>१</sup> R येस इत पर-तु,<sup>२</sup> R उञ्जु M उज्जु<sup>३</sup> C एत्थ<sup>४</sup> M सतिमा<sup>५</sup> P यञ्जो<sup>६</sup> M यो<sup>७</sup> M त विनेय्य



च गणाचरियो च ज्ञाता यसस्मा नित्यवरो साधुसम्मतो बहुजनस्स यद्भूनाह  
समण गोतम उपसवमित्वा इमे पण्हं पुच्छय्यन्ति । अयं त्वो सभियस्स परिवाज  
वस्स एतद्दहोसि—यऽपि खो ते भोन्नो समणब्राह्मणा जिण्णा बुद्धा महं लवा अद्गता  
वया अनुप्पत्ता येरा रत्तज्जन् चिरपव्वजिता सधिमो गणिनो गणाचरिया ज्ञाता  
यसस्सिनो तित्थनरा साधुसम्मता, बहुजनस्स सेय्यधीद—पूरणो वस्सपा

पे० निगण्ठो नानपुत्तो तऽपि मया पण्हे पुट्ठा न सपायन्ति जमपायन्ता  
कोर च दोम च अप्पच्चय च पातुवगान्ति अपि च मज्जेवेत्थ पटिपुच्छन्ति । वि  
पन म समणो गोतमो इमे पण्हे पुट्ठो व्याकरिस्सन्ति । समणो हि गोतमो दहरा  
चेव जातिया नवा च पव्वज्जायानि । अयं रतो सभियस्स परिव्वाजकस्स  
एतद्दहोसिसमणो मा दहराज्जति न परिभोतवो । दहरोऽपि चे समणो होति,  
सो होति महिद्धिको महानुभावो, यद्भूनाह समण गोतम उपसवमित्वा इमं पण्हं  
पुच्छय्यन्ति । अयं त्वो सभिया परिव्वाजको यन राजगह तेन चारिव पक्कामि ।  
अनुपुब्बन चारिव चरमानो यन राजगह वेळुवनं कल्लदकनिवापो यन भगवा  
तेनुपसवमि, उपसवमित्वा भगवता सद्धि सम्मादि सम्मोदनीय कथं साराणीय  
वीतिमारेत्वा एकमतं निसीदि । इवमन्तं निसिप्पो खो सभियो परिव्वाजको भग  
वन्तं गाथायं जज्झमामि—

कम्वी वेचिकिच्छी आगम (इति सभिया ।) पण्हं पुच्छितुं अभिक्खमानो ।

तमन्तवरो भगवाहि<sup>१</sup> पुट्ठो अनुपुब्ब<sup>२</sup> अनुधम्मं व्याकरोहि मे ॥१॥

दरतो जागतोऽसि सभिया (ति भगवा) पण्हं पुच्छितुं अभिक्खमानो ।

तमन्तवरो भवामि पुट्ठो<sup>३</sup>, अनुपुब्ब<sup>४</sup> अनुधम्मं व्याकरोमि ते ॥२॥

पुच्छं मम सभिय पण्हं, यं विचि मनसिच्छसि ।

तस्स तत्तव पण्हस्स अहं ज्ञानं करोमि तंति ॥३॥

अयं त्वो सभियस्स परिवाजकस्स एतद्दहोसि—अच्छरियं वत भो, जम्भुत  
वत भो, यावताऽहं अज्जेसु समणब्राह्मणसु आकासमत्तं पि नाल्लत्थं, तं मं इ  
समणनं गोतमेन ओकासवम्मं वत्तंति अत्तमनो पमोन्ति उन्मा पीनिमाम  
नस्सजातो भगवन्तं पण्हं पुच्छि—

<sup>१</sup> M भव भवाहि R भवाहि म

<sup>२</sup> M, R पण्हं मे पुट्ठो

अनुपुब्ब

<sup>३</sup> R तं M तत्तमन्तं करोमि ते

<sup>४</sup> R पण्हं

पुट्ठो अनुपुब्बं

। M पण्हं पुट्ठो अनुपुब्बं ।

यो मुञ्चति मुञ्चति वञ्चति १ वनञ्चत्त गच्छति ब्रह्मलोके ।  
 अजानना म मुनि ब्रूहि पञ्चा , भगवा णि म मक्खि ब्रह्मज्ज णिठा ।  
 तुज हि ना ब्रह्मममा नि मच्च । य उप्पज्जति ब्रह्मणेव (जुतामा<sup>१</sup>) ॥२०॥  
 या यजति निविद्य यज्जमय (भाषानि भगवा)  
 आराधय त्रिविणय्य णि ताणि ।

एष यजित्वा सम्मा याचयागो उणज्जति ब्रह्मणाजि वूमिनि ॥२३॥  
 एव मुत्त पापो पाणवो भगवन् एतन्नाथ-अभितान्द भो मोतम-  
 पे० अज्जतग्ग पाणुपेन सरण गमन्ति ।

भाषमुत्त निश्चित ।

### ( ३२—समिय-मुत्त ३।६ )

एव म मुत्त । एव समय भगवा राजगृहे निहरति वेद्वेन वल्लवकनिवापे ।  
 तन को पन समयन सभियस्स परिव्वजक्कस्स पुराणसात्ताहिताय व्वाय पञ्हा  
 उड्ढिहा हान्ति-या त सभिय समणा वा शास्त्राणा वा श्मे पञ्हु पुण्डो ब्यावरोनि,  
 तस्स सन्नि वं ब्रह्मारिम् जरेय्यामीनि । अय खा सभियोपरिव्वजक्को  
 तस्मा देवताय सन्तिके पञ्हु उगहेवा ये न समणबाह्मणा सधिनो  
 गणिनो गणावरिया आता मसस्सिनो तित्थक्का साधुसम्मता बहुजनस्स,  
 सेय्यपाद-पूरणो कम्मता मक्खति वासाओ बजिनो कसक्कली<sup>१</sup>, पडुधो<sup>२</sup>  
 क्क्वायनो सज्जो वेत्त द्विपुत्ता<sup>३</sup> निगण्ठो नातपुत्तो<sup>४</sup> त उपसक्कित्वा ते पञ्हे  
 पुण्डति । ते सभियन परिव्वजक्कन पञ्हे पुट्टा न सपायन्ति असपायन्ता वाप च  
 दोस च अप्पच्चय च पातुक्करोन्ति अपि च सभिय येव परिव्वजक्क पन्निपुक्कन्ति ।  
 अय को सभियस्स परिव्वजक्कस्स एतद्दोसि-अ खा ते भोत्तो समणनाह्मणा  
 सधिनो गणिनो गणावरिया आता मसस्सिनो तित्थक्का साधुसम्मता बहुजनस्स  
 सेय्यपाद-पूरणो वस्सथा प० निगण्ठो नातपुत्तो, ते मया पञ्हु पुट्टा  
 न सपायन्ति अरुपायन्ता कोप च दोस च अप्पच्चय च पातुक्करोन्ति, अपि च  
 मञ्जवत्थ पटिपुच्छन्ति यनूना हीनायावत्तित्रा वामे परिमुञ्जय्यन्ति । अय  
 को सभियस्स परिव्वजक्कस्स एतद्दोसि-अयस्सि समणा भान्ता सधी चेव गणी

<sup>१</sup> C अस्तिमा, M जूतिम      <sup>२</sup> C M वेत्तक्कली      <sup>३</sup> C  
 वकु, धो      <sup>४</sup> M वेत्तु<sup>०</sup>      <sup>५</sup> C नाय पुत्तो M नाद<sup>०</sup>

सत्तानि विचेय्य<sup>१</sup> वेवलानि (सभियानि भगवा),

न्दि<sup>२</sup> मानुस<sup>३</sup> च ग्रहावेत्त ।

सव्यगतमूलवधना पमुत्ता, गतजिनो तादि पवुच्चत तथत्ता ॥१५॥

नामानि विचेय्य वेवलानि, न्दि मानुस<sup>४</sup> च ग्रहाकोस ।

(सव्य) काममूलवधना पमुत्ता, कुमगे तादि पवुच्चते तथत्ता ॥१६॥

तदुभयानि<sup>५</sup> विचेय्य पण्डरानि, अज्जत्त वहिद्धा च मुद्धिपञ्जा ।

वण्ह<sup>६</sup> मुक्क<sup>७</sup> उपानिवत्तो, पण्णिता तादि पवुच्चते तथत्ता ॥१७॥

असत्त च सत्त च जत्ता धम्म, अज्जत्त च वहिद्धा च सव्वगोके ।

वमनुस्महि पूजिनो सो, भग जाल्मतिच्च सो मुनीति ॥१८॥

अथ लो सभियो परिव्याजको प० भगवन्त्त उत्तरि पण्ह पुच्छि—

कि पत्तिनमाहु वेदगु (इति सभियो) अनुविन्ति कन कथ च विरियवाणि ।

आजानियो किंनि नाम होनि, पुटटो मे भगवा व्याकरोहि ॥१९॥

वेवलानि विचेय्य वेवलानि (सभिया ति भगवा),

समणान यानि<sup>८</sup> पत्थि ब्राह्मणान ।

सव्यवदनासु वीतरागो सव्व वेदमनिच्च वेदगु सो ॥२०॥

अनुविच्च पपचनामरप अज्जत्त वहिद्धा च रोगमूल ।

सव्वरोगमूलवधना पमुत्तो, अनुविन्ति तादि पवुच्चत तथत्ता ॥२१॥

विरतो इथ सव्यपापवेहि निरयदुक्कमनिच्च विरियवा सो ।

सो विरियवा पधानवा धीरो तादि पवुच्चते तथत्ता ॥२२॥

यस्सज्जसु लुतानि<sup>९</sup> वधनानि, अज्जत्त वहिद्धा च सव्वमूल ।

(सव्य) भगमूलवधना पमुत्तो आजानियो तादि पवुच्चते तथत्ताज्जति ॥२३॥

अथ लो सभियो परिव्याजको , पे० भगवन्त्त उत्तरि पण्ह पुच्छि—

कि पत्तिनमाहु सोत्थिय<sup>१०</sup> (इति सभियो) अरिय कन कथ च चरणवाजि ।

परिव्याजको विज्जि नाम हाति, पुटटो मे भगवा व्याकरोहि ॥२४॥

मुवा सव्यधम्म अभिज्जाय लो<sup>११</sup> (सभियानि भगवा),

भावज्जानवज्ज यदत्थि विचि ।

अभिभु अवयक्कयि विमुत्त अनीघ<sup>१२</sup> सव्वधिमाहु मायि योनि ॥२५॥

<sup>१</sup> E 'विजेय्य' तिपि

<sup>२</sup> R दिव्य

<sup>३</sup> R, M दुभयानि

<sup>४</sup> R वण्हमुक्क P वण्हमुक्क

<sup>५</sup> M लुतानि

<sup>६</sup> R सोत्तिय

<sup>७</sup> R अनिघ

<sup>८</sup> R सोत्तिय



किं पत्तिमाप्तुं भिक्षुः (इति सभिया) माग्नु<sup>१</sup> वनं वयं च दद्याम<sup>२</sup> ।  
 मदाति वयं पवुच्चति पुटो मे भगवा व्याकरोहि ॥४॥  
 पञ्चन वना अत्ता (सभियाणि भगवा) परिच्छिन्ना विनिगम्या ।  
 विना च भवति शिखराय पुनितया माग्नुनमया स भिक्षु ॥५॥  
 गज्जत्त उपायका सपामा म मा हित्ति विनि गमयता ।  
 निष्ठा समण अनादिने ममण मम ३ मन्ति ताग्ना मा ॥६॥  
 परिमद्विधानि भविष्यानि अत्ता वड्ढा च तत्तपण<sup>३</sup> ।  
 निर्वज्ज<sup>४</sup> म पर च लोह कण्ठं वंजति भाविता म न्त्ता ॥७॥  
 पण्णाणि विषय्य ववज्जति ममार टुमय च्चुत्ताणं ।  
 विगलज्जमनणं विमुद्धं पणं जानिक्कणं तमाहुं बुद्धनि ॥८॥

अथ सो सभियो परिव्याजको भगवा भविष्य अन्ति<sup>५</sup>त्वा अनुमान्त्वा  
 अत्तमनो पमाग्ना उग्गा पाणिनाभनसज्जाया भगवन्तं उत्तरि पण्हं  
 पुच्छि—

किं पत्तिमाप्तुं घाह्ण (इति सभिया), समणं वनं वयं च हान<sup>६</sup>को<sup>७</sup>ति ।  
 नागा<sup>८</sup>नि वयं पवुच्चति पुटो मे भगवा व्याकरोहि ॥९॥  
 वाह्त्वा मज्जपापानि (सभियाणि भगवा), विमणेसा धुममाहिता टित्ता ।  
 गसारमन्तिक्क ववली भो, असिपा ता<sup>९</sup>नि पवुच्चने म<sup>१०</sup> ब्रह्मा ॥१०॥  
 सभियाणि पहाम पञ्जपाण निरजो अत्तव इम पर च ता<sup>११</sup> ।  
 जानिमरण उपाविस्सो समणा ता<sup>१२</sup>नि पवुच्चन नयत्ता ॥११॥  
 निहाय<sup>१३</sup> सज्जापकानि अज्जत्त वड्ढा च म<sup>१४</sup>लो<sup>१५</sup>ते ।  
 ममनुस्समु कप्पियमु कप्प नति तमाहुं हान<sup>१६</sup>को<sup>१७</sup>ति ॥१२॥  
 जाणु न करानि विचि लाक् सम्बसयोगे विमज्ज वपानानि ।  
 राव्यथ न सज्जति विमुत्तो नागो ता<sup>१८</sup>नि पवुच्चने<sup>१९</sup> तयत्ताति ॥१३॥  
 अथ सो सभियो परिव्याजको प० भगवन्तं उत्तरि पण्हं पुच्छि—  
 वं मत्तजिन वन्ति वृद्धा (इति सभिया), कुसलं वनं वयं च पत्ति<sup>२०</sup>तो<sup>२१</sup>ति ।  
 मुनि नाम वयं पवुच्चति पुटो मे भगवा व्याकरोहि ॥१४॥

<sup>१</sup> R सोरत B 'सूरत' ति पि    <sup>२</sup> P निम्विग्ग    <sup>३</sup> C नहातको  
<sup>४</sup> C त्यज्यते ॥ सो०    <sup>५</sup> C निम्विग्ग    <sup>६</sup> C पवुच्चति

तुव बुद्धो तुव सत्था तुव माराभिभू<sup>१</sup> मुनि ।

तुव अनुसये छत्वा तिण्णो तारसिज्म पज ॥३६॥

उपधी<sup>२</sup> ते समनिक्कन्ता आसवा ते पदालिता ।

सोहोऽसि अनुपादानो पहीनभयभेरवो ॥३७॥

पुण्डरीक यथा वग्गु तोये न उपलिप्पनि<sup>३</sup> ।

एव पुञ्जे च पापे च उभय त्व न लिप्पमि<sup>४</sup> ।

पाद धीर पमारेहि मभियो वन्दनि सत्युनोऽति ॥३८॥

अथ त्वो सभियो परिव्व्राजको भगवतो पादेसु मिरसा निपतित्वा भगवन्त एतन्वोच—अभिककन्त गोणम प० धम्म च भिक्खुमघ च लभय्याह भन्ते भगवतो सन्तिक्के पब्बज्ज लभय्य उपमपदऽति । यो त्वो सभिय अञ्जनिस्थियपुब्बा इमस्मि धम्मविनये आकसति पब्बज्ज, आकसति उपसपद सो चत्तारो मास परिवसन्ति, चतुन मासान अच्चयेन आरद्धचित्ता भिक्खू पब्बाजन्ति उपसपादन्ति भिक्खुभावाय । अपि च<sup>१</sup> मेऽय्य<sup>२</sup> पुग्गलवेमत्तना विदिताऽति । सचे भन्ते अञ्जनिस्थियपुब्बा इमस्मि धम्मविनये आकसन्ता पब्बज्ज आकसन्ता उपसपद चत्तारो मास परिवसन्ति चतुन मासान अच्चयेन आरद्धचित्ता भिक्खू पब्बाजन्ति उपसपादन्ति भिक्खुभावाय, अह चत्तारि वस्सानि परिवसिस्सामि, चतुन वस्सान अच्चयेन आरद्धचित्ता भिक्खू पब्बाजेन्तु उपसपादेन्तु भिक्खुभावायाति । अलत्थ ना मभियो परिव्व्राजको भगवतो सन्तिक्के पब्बज्ज अलत्थ उपसप प० - अञ्जतरो त्वो पनायस्मा मभियो अरहत अहोसीनि ।

सभियगुत्त निट्ठित ।

( ३३—सेल सुत्त ३।७ )

एव मे सुत्त । एतं समय भगवा अगुत्तरापेसु चारिक् चरमानो महता भिक्खु सपत्त सडि अड्डनञ्जेहि भिक्खुसत्तहि येन आपण नाम अगुत्तरापान निगमो तत्त्वसरि । अस्मोसि त्वो कणियो जटिलो—समणा सन्तु भा गोणमो सत्तपुत्ता सत्तपुत्ता पब्बजितो अगुत्तरापेसु चारिक् चरमानो महता भिक्खुमघा सडि अड्डतञ्जेहि भिक्खुसत्तहि आपण अनुपत्तो त स्मा पन भवन्त गोणम एवं

<sup>१</sup> M मायाभिभू <sup>२</sup> C. M उपधि <sup>३</sup> M उपलिप्पति <sup>४</sup> M

लिप्पति <sup>१</sup> C चेत्य

छन्वा आसवानि आल्यानि, विद्वा सो न उपति गभमय्य ।  
 मन्त्रे निविद्य पद्भुज्ज पव वप्प नति तमाहु अग्रियोति ॥२६॥  
 यो दध चरणमु पत्तिपत्तो कुमला मव्वन्ना जाजानानि<sup>१</sup> धम्म ।  
 मव्वत्थ न सज्जति विमुत्ता<sup>२</sup>, पटिघा यस्स न सन्ति चरणवा मो ॥२७॥  
 दुवत्तवपक्क<sup>३</sup> यदयि धम्म उद्ध अघो न निरिय चापि मज्ज ।  
 परिवज्जयित्वा<sup>४</sup> परिवज्जचारी माय मानमयोपि लोभकोघ<sup>५</sup> ।  
 परिवत्तमवाप्ति नामरूप, त परिवज्जवमाहु पत्तिपत्तनि ॥२८॥

अयं सो सन्नियो परिवज्जकः भगवन्ना भासित अभिनन्तिवा अनुमादित्वा  
 अत्तमनो पमादिनो उन्गो पानिमोमनस्मजाता उद्गायमाना एवम उन्नरामग  
 करित्वा यन जगया तेनज्जति पणामत्वा भगवन् सम्मुखा सारुण्याहि गाथाहि  
 अभित्थवि—

यानि च तीणि यानि च सन्ति समणणवादसितानि<sup>१</sup> भूरिपज्ज ।  
 सज्जक्खर<sup>२</sup> सज्जनिस्मितानि ओसरणानि विनय्य जोषत अगा ॥२९॥  
 अन्नगूसि पारगूसि दुवलस्स अरहांसि सम्मासमुदा सीणासव त मज्जो ।  
 जुत्तिमा मुत्तिमा पन्नपज्ज्जा दुक्खस्सन्तकर अता<sup>३</sup>रयि म ॥३०॥  
 य मे ज्वित्तमज्ज्जासि विचित्रिच्छ<sup>४</sup> म<sup>५</sup> अतारेसि नमो ते ।  
 मुनि मोनययम पत्तिपत्त<sup>६</sup> अखिल आन्विच्चवधु सारतो<sup>७</sup>सि ॥३१॥  
 या म वत्ता पुरे आसि त म ध्यानामि चक्कुमा ।  
 अद्धा मुनीसि सवुद्धो नत्थि नीवरणा तव ॥३२॥  
 उपायासा च ते सब्ब विद्धस्सा विनयीक्ता ।  
 सीनिभूतो दमप्पत्तो धिनिमा सच्चनिकक्कमा ॥३३॥  
 तस्म ते नागनागस्स महावीरस्स भासतो ।  
 सन्न दवानुमोत्ति उभो नारदपव्वता ॥३४॥  
 नमो त पुरिमाज्जन् नमा त पुरिमुत्तम ।  
 सदेवक्खिस्मि लोक्खिस्मि नत्थि त पन्निपुण्णे ॥३५॥

<sup>१</sup> R, C अजानि      <sup>२</sup> M विमुत्तचित्तो      <sup>३</sup> C दुक्ख  
<sup>४</sup> B, M परिवज्जयित्वा      <sup>५</sup> M मानपय विलोभकोघ      <sup>६</sup> M  
 निस्सितानि      <sup>७</sup> M पञ्चक्खरं      C दुक्खस्सन्तकर अतारेसि  
<sup>८</sup> M, C विचित्रिच्छा      <sup>९</sup> M नास्ति      <sup>१०</sup> M  
 पत्तिपत्त

रणभेदान् इतिहासपत्रमानं पत्रको वेद्यावरणो लोनायतमहापुरिमलकरणसुअवया  
 तीणि माणवकसतानि मन वाचेति । तेन सा पत्र समयन कणियो जटिल सेल  
 ब्राह्मणे अभिपसप्तो होति । अथ यो सेला ब्राह्मणो तीहि माणवकसतेहि परि  
 वृतो जघाविहार अनुचक्रममानो अनुविचरमानो यत्र कणियस्स जटिलस्स  
 अस्मयो तेनुमकमि । अहसा यो सत्रो ब्राह्मणो कणियस्समिये\* जटिले अप्पक्खे  
 उद्धनानि खणन्ते—ये० अप्पक्खे आसनानि पञ्चापेन्ने, कणिय पत्र जटिल  
 साम यव मण्डलमाल पटियादन्त । दिस्वान केणिय जटिल एतद्वाच-विनु भातो  
 कणियस्स आवाहो वा भविस्समि, विवाहो वा भविस्समि, महायज्जो वा पच्चु  
 पट्टितो, राजा वा मागधो सेनियो विविसारो निमन्तिता स्वातनाय मद्धि  
 वत्वायेताति । न मे मेल आवाहो भविस्सति, नऽपि विवाहो भविस्सति, नऽपि  
 राजा मागधो सेनियो विविसारो निमन्तिता स्वातनाय मद्धि उल्लायेन अपि च  
 यो मे महायज्जो पच्चुपट्टिता अस्ति । समणो गोतमो सक्कपुत्तो सक्ककुला  
 पञ्चजितो अगुत्तरापेसु चारिष चरमानो महता भिक्खुसघेन मद्धि अडढतल्लेनेहि  
 भिक्खुसतेहि आपण जनुप्पत्ता । त एव पत्र भवन्त गोमत्र प० बुद्धो भगवाति ।  
 सा मे निमन्तिता स्वातनाय मद्धि भिक्खुसघेताति । बुद्धोऽति सा कणिय वत्सि ।  
 बुद्धोऽति भो सेल वत्समि । बुद्धोऽति भो केणिय वत्सि । बुद्धोऽति भो सेल  
 वत्समीति । अथ एवो सेस्स ब्राह्मणस्स एतदहोसि—घासोऽपि एवो एमो दुल्लभो  
 लोक्खस्मि यदिद बुद्धोऽति । आगतानि एव पत्र अस्मान् मन्तमु व्वत्तिसमहापुरि  
 सक्कवणानि येहि समप्रागतस्स महापुरिसस्स द्वेज्व गतिया भवन्ति अनज्जा ।  
 सच अगार अज्जावसति राजा होति चक्कवत्ती घम्मिको घम्मराजा चातुरत्तो  
 विजितायो जनपदत्थावरियप्पत्तो गत्तरतनसमप्रागतो । तस्मिन्मानि सत्र रतनानि  
 भवन्ति, सेय्यपी\*—चक्करतन हत्थिरतन, अस्मरतन, मणिरतन, इत्थिरतन,  
 गत्थिरतन, परिणायकरतनमेव सत्तम । परोसहस्स एव पत्रस्स पुत्ता भवन्ति  
 पूरा वीरगम्पा परसनप्पमद्दना । सो इम पठवि सागरपरिमन्त अदण्डेन असत्थन  
 धम्मेन अभिविजिय अज्जावसति । सचे एव पनागारस्सा अनगारिय पच्चजति  
 अरह होति सम्मासबुद्धा लोके विवत्तच्छदो\* । वत्त पत्र भो केणिय एतरहि सो  
 भव गोतमो विहरति अरह सम्मासबुद्धोऽति । एव वुत्ते कणिया जटिलो दक्खिण  
 वाह पग्गहेवा मेत्त ब्राह्मण एतदवोच—येन सा भो मेल नीन्वनराजीति । अथ  
 एवो सेन्ने ब्राह्मणो तीहि माणवकसतेहि मद्धि यत्र भगवा तनुपसकमि । अथ सा  
 सत्रो ब्राह्मणो ते माणवके आमन्तसि—अप्पसद्दा भोन्नो जागच्छन्नु पद पद  
 निक्खिपन्ना दुरामग्ग हि ते भगवन्तो मीहाज्य एवचरा, यदा चाह भो समणो

\* M केणियस्य जटिलस्स अस्मयो

\* M विवत्तच्छदो

कथाणां कितिगता अभुग्नो—जिपि सो भगवा अरहं सम्मागयुद्धा विज्जा  
 सरणमपन्नो गुणतो पारविद्दि सुग्ग पुग्गिम्मत्ताग्धि मत्था दध मनुग्मान  
 बद्धो भगवा सो इमं पारं मत्वा गमाक्कं मयद्धक्कं मग्गमणशास्सिणं पत्र  
 तन्ममनुग्गं मय अभिज्जा मच्छिक्काय वरन्नि सो वग्गं ग्गानि आग्गिग्ग्याण  
 मग्गक्कयाणं परियोगानक्क्याणं सायं मग्गज्जा कक्कपग्गिग्गुणं पग्गिग्गुद्धं वग्ग  
 चरियं पक्कासि सायु सो पन तयाग्गान अरत्तं ग्गानं होवति । अथ सो  
 कणियो जग्गिणे यन भगवा तेनुपसंवेमि उग्गक्कमिक्का भगवन्ना सद्धिं मग्गमि,  
 सम्मोन्नायं कथं सागणीयं वाग्गिग्गारेत्था एक्कमन्निं गिगीणि । एक्कमन्निं गिमिन्नं  
 ना कणिय जटिलं भगवा धम्मिया कथाय मग्गमि मग्गानि समुत्तजमि गयह  
 गति । अथ सो कणियो जग्गिणे भगवन्ना धम्मिया कथाय तन्मिन्ना समान्पितो  
 समुत्तजितो मग्गमिन्ना भगवन्त एक्कज्जाव—अधिनामनु म भव मानमो स्वातनाय  
 भत्त सद्धिं भिक्कुमघनानि । एव धुत्त भगवा कणिय जटिलं एक्कज्जाव—महा सो  
 कणिय भिक्कुमघो अद्धत्तज्जानि भिक्कुगनानि त्वं च सो ब्राह्मणमु अभिण्य  
 सन्नोऽति । दुनियपि सो कणियो जग्गिणा भगवन्त एक्कज्जाव—किचापि भो  
 गौतम महाभिक्कुमघो अद्धत्तज्जमानि भिक्कुमस्तानि एक्कं च ब्राह्मणमु अभिण्यमग्ग  
 अधिनामनु म भवं गौतमा स्वातनाय भत्त सद्धिं भिक्कुमघनानि । दुनियपि सो  
 भगवा कणियं जटिलं एक्कज्जाव—महा सो कणिय भिक्कुमघो अद्धत्तज्जमानि  
 भिक्कुमनानि त्वं च सो ब्राह्मणमु अभिण्यसन्नानि । तनियपि सो कणियो जटिल  
 भगवन्त एक्कज्जाव—किचापि भो गौतम महाभिक्कुमघो अद्धत्तज्जमानि भिक्कु  
 सतानि, अहं च सो ब्राह्मणमु अभिण्यमघो अधिवासेवद मे भवं गौतमो स्वात  
 नाय भत्त सद्धिं भिक्कुमघनानि । अधिवासति भगवा तुप्पहीभावेन । अथ सो  
 कणियो जटिलं भगवन्तो अधिवासनं विट्ठिवा उद्वापासना यन त्वो अस्समा  
 तनुपसकमि । उपमवमिक्का मितामच्चे ज्ञानिमाग्गेहिता आमत्तसि—गुणन्तु म  
 भोत्तो<sup>१</sup> मितामच्चे ज्ञानिसालोहिता, ममणो म गौतमो निमन्नितो स्वातनाय  
 भत्त सद्धिं भिक्कुमघनं यन म वायवेय्यावटिक्कं करेय्यायानि । एव भोऽति सो  
 कणियस्स जटिलस्स मितामच्चे ज्ञानिसालोहिता कणियस्स जटिलस्स पत्तिस्सुत्वा  
 अप्पेक्कच्चे उद्धनानि खणन्ति अप्पेक्कच्चे वट्टानि फालानि अप्पक्कच्च भाजानानि  
 धावन्ति अप्पेक्कच्चे उदक्कमणिक्कं पत्तिट्ठापन्ति, अप्पेक्कच्चे जासनानि पज्जापन्ति  
 कणियो पन जटिलो सामं येव मण्डलमाउ पटियावन्ति । तन सो पन समयन  
 सेलो ब्राह्मणो आपण पटिवसति तिण्णं वणनं पारगू सनिधण्डुकदुभानं साक्क

तत्तिषा भोजराजानो अनुयुक्ता भवन्ति त ।  
 राजाभिराजा मनुजिन्दो रज्ज वारेहि गोतम ॥६॥  
 राजाहमस्मि सला (ति भगवा) धम्मराजा अनुत्तरो ।  
 धम्मेन चरन् वत्तमि चक्क अण्णतिवत्तिष ॥७॥  
 मनुद्धो पट्टिजानासि (इति मेग्गे ब्राह्मणो) धम्मराजा अनुत्तरो ।  
 धम्मन चरन् वत्तमि इति माममि गोतम ॥८॥  
 पो नु मेणापति भोनो सायवो सत्युदवयो<sup>१</sup> ।  
 पो ते इम अनुवत्तति धम्मचक्क पव<sup>२</sup>त्तित ॥९॥  
 मया पवत्तित चक्क<sup>३</sup> (सला नि भगवा) धम्मचरन् अनुत्तर ।  
 साग्गिपुत्तो अनुवत्तेति अनुजानो सयागत ॥१०॥  
 अभिञ्जेय्य अभिञ्जात भावतव्य च भावित ।  
 पहातव्य पहीन म तस्मा बुद्धोऽस्मि ब्राह्मण ॥११॥  
 दिनपस्सु मयि<sup>४</sup> वत्त अधिमुच्चस्सु ब्राह्मण ।  
 दुल्लभ दस्सन होनि मबुद्धा अभिण्हसो ॥१२॥  
 यम व<sup>५</sup> दुल्लभा लोके पातुभावो अभिण्हमा ।  
 सोऽह ब्राह्मण मबुद्धो सरलवत्तो अनुत्तरा ॥१३॥  
 ब्रह्मभूतो अनितुला मारसनप्पमहना ।  
 सब्बामित्ते वसो वत्त्वा मोलामि अकुनाभयो ॥१४॥  
 इम भोन्तो निसामेय यथा भामति चक्कुमा ।  
 सल्लसत्ता महावीरो सीहो<sup>६</sup> न दति वन ॥१५॥  
 ब्रह्मभूत अनितुल मारमेनप्पमहना ।  
 पो दिस्वा नप्पसीनेय्य अपि वण्णाभिजानिक्को ॥१६॥  
 यो म इच्छति अवतु यो वा निच्छति गच्छतु ।  
 इधाह पव्वजिस्सामि वरपञ्जस्स सन्तिरे ॥१७॥  
 एत चे वच्चन्ति भोनो सम्मासबुद्धसासन ।  
 मयऽपि पव्वजिस्साम वरपञ्जस्स सन्तिरे ॥१८॥  
 ब्राह्मणा तिसत्ता इमे याचन्ति पजलीवत्ता ।  
 ब्रह्मचरिय चरिस्साम भगवा तव सन्तिरे ॥१९॥  
 स्वाववान ब्रह्मचरिय (मत्ता ति भगवा) सदिट्ठिमव्वान्ति<sup>७</sup> ।  
 यत्थ जमोघा पव्वज्जा जप्पमतस्स सिम्भतो<sup>८</sup>ति ॥२०॥

<sup>१</sup> M सत्युदवयो थे० गा०—सत्युरवयो <sup>२</sup> M पवत्तिष <sup>३</sup> R मयो

<sup>४</sup> R, C वो



## ( ३४—सल्ल-सुत ३।८ )

अनिमित्तमाञ्जात मच्चान इध जीवित ।  
 वसिर ऽ परित्त च त च दुस्स्येन मञ्जुन<sup>१</sup> ॥१॥  
 न हि मो उपपन्नो अत्थि येन जाना न मिय्यर ।  
 वरऽपि पत्ता मरण एवधम्मा हि पाणिनो ॥२॥  
 पगानमिध पक्कवान पातो पपत्ता<sup>२</sup> भय ।  
 एव जाता मच्चान निच्च मरणतो भय ॥ ॥  
 यथापि कुम्भकारस्स वत्ता मत्तिवभाजना ।  
 सच्च भेत्तपरियन्ता एव मच्चान जीवित ॥४॥  
 दहरा च महन्ता च य माला ये ऽ पडिता ।  
 राज्ञे मच्चुवस यन्ति सच्च मच्चुपरायणा ॥५॥  
 तेस मच्चुपरेतान गच्छत परलोवत्तो ।  
 न पिता तायते पुत्त ज्ञाति वा पन आतवे ॥६॥  
 पक्कत यव ज्ञातीन पत्ता लालपत पुधु ।  
 एरमनो व मच्चान गो वज्जो<sup>३</sup> विय निय्यनि ॥७॥  
 एवमग्माहत्तो लोको मच्चुना च जराय च ।  
 तस्मा धीरा न सोचन्ति विण्ठिवा लोकपग्गियाय ॥८॥  
 यस्स मग्ग न जानासि आगतस्स गतस्स वा ।  
 उभो अन्ते असपस्म निरत्थ परिण्वसि ॥९॥  
 परिदवयमानो वे कचिदत्थ<sup>४</sup> उदन्वहे ।  
 सम्मूळ्हो हिंसमत्तान कयिरा चेन विचक्खणो ॥१०॥  
 न हि ण्णेन<sup>५</sup> सोक्केन सन्ति पप्पोति चेतसो ।  
 भिय्यस्सुप्पज्जते दुक्ख मरीर उपहज्जनि ॥११॥  
 किंसा विवण्णो भवति हिंसमत्तानमत्तना ।  
 न तेन पेता पालेन्ति निरत्था परिदेवना ॥१२॥  
 मोक्कमप्पजहे जन्तु भिय्यो दुक्ख निगच्छति ।  
 अनुत्थुनन्ता कालवत्त सोक्कस्स वसमवगू ॥१३॥

<sup>१</sup> M सपुत्त    <sup>२</sup> M पतनतो P पपततो    <sup>३</sup> M वजो    <sup>४</sup> M  
 किंचिदत्थ    <sup>५</sup> C दग्गेन



अल्लस्य स्त्री मग्नी ब्राह्मणा सपरिस्ता भगवता सन्निव पञ्च अल्लस्य उपसपत् ।  
 अथ यो वणिषो जटिलो तस्मा रत्तिया अच्चयन मक् अरसम पणीत सान्नीय  
 भोनाय पटियाणपत्वा भगवता काल आराचारमि-काग्नी भा मोनम, निद्रित  
 भनति । अथ सा भगवा पुच्चण्हसमय निवासत्वा पत्तचावरमादाय येन वेणियरम  
 जटिस्स अस्ममां तुपमवमि । उपमवमित्वा पञ्चत आसन निसाणि सद्धि  
 भिरनुसयन । अथ यो वणिषो जटिला रदपमुख मिकनुसय पणीतन सान्नीयन  
 भाजनायन सत्त्वा सत्प्येसि सपवारसि । अथ यो वणिषो जटिला भगवन्त भुत्तापि  
 ओनापत्तपारिण अञ्जतर नीच आसन गहत्वा एकमन्न निसीणि । एकमन्न  
 निसित्त यो वणिष जटिल भगवा इमाहि गाथाणि अनुमाणि—

जिगहत्तमुया यञ्जा साविता छन्दसा मुख ।  
 राजा मुख मनुस्सान ननील सायरो मुख ॥२१॥  
 नक्खत्तान मुख चल्ने आञ्ज्वा सपत्त मुख ।  
 पुञ्ज आकणमानान सधो वे यजन मुखज्जि ॥२२॥

अथ सा भगवा वणिष जटिल इमाणि गाथाहि अनुमानित्वा उट्ठाय आसना  
 पक्वामि । अथ यो आदस्मा मेलो सपरिस्तो एका ब्रूपवन्टो अप्पमतो जातापी  
 पत्तिता विहरन्तो न चिरस्मेव यस्सत्थाय कुलपुत्ता सम्मन्व अगारम्मा अतगारिय  
 पच्चजन्ति तदनत्तर ब्रह्मभरियपरियोसान दिट्ठव धम्म मय अभिञ्जा सच्चिरत्वा  
 उपसपञ्ज विहासि छाणा जाति बुधित ब्रह्मचरिय कत्त करणीय नापर इत्थत्तायानि  
 अमञ्जासि । अञ्जतरो च यो पनायस्मा सलो सपरिमो अरहण अहोसि । अथ  
 यो आदस्मा संलो सपरिमो यन भगवा तुपसवमि । उपसवमित्वा एकत्त चीवर  
 रत्वा येन भगवा तेन अञ्जाल पणामत्वा भगवन्त गाथाहि अञ्जभासि—

य स सण्णमागम्म न्तो अट्ठमि चक्कम् ।  
 सत्तरत्तन भगवा दन्तम्ह तव मासन ॥२३॥  
 तुव बुद्धो तुव सत्त्वा तुव माराभिभ मुनि ।  
 तुव अनुसम छत्वा निष्णा तारेसिद्धम पञ्ज ॥२४॥  
 उपधि ते समनिक्खत्ता आगवा ते पत्तालिता ।  
 मीहोप्पसि अनुपाणो पहीनमयभरवो ॥२५॥  
 भिरुत्ता निसत्ता इय निद्रन्ति पञ्जणीयता ।  
 पाप्पो वीर पसारि नाया वन्दन्तु मत्थनोणि ॥२६॥

सेल्लुत्त निद्रिठत्त ।

कुटुम्भो<sup>१</sup> जानियात्त एत्तावता खो ब्राह्मणा होतीति । वामट्ठो माणवो एव माह—यता खो भो सीलवा च होति वागपधो<sup>२</sup> च एत्तावता खो ब्राह्मणाहतीति । नव खो अमस्सि भारद्वाजो माणवो वामट्ठ माणव सज्जापनु न पन जतविय वामेन्ठो माणवो भारद्वाज माणव मज्झापनु । अथ खो वामट्ठा माणवो भारद्वाज माणव आमन्तेसि—अयं स भारद्वाज समणो गोतमो सकयपुत्ता सकयकुत्ता पव्वजितो इच्छानगरे विहरति इच्छानगरवनमण्डं तं स पन भवन्तं गानम एव वत्ताणो रित्तिसहो अभुग्मतो पे० बुद्धो भगवा<sup>३</sup>ति आयाम भा भारद्वाज, येन समणो गोतमो तेनुपमवमिस्साम, उपसवमि<sup>४</sup>त्वा समणं गानम एतमत्थं पुच्छिस्साम, यथा नो समणो गोतमो व्यावरिस्सति तथा न धारेस्सामाति । एव भो<sup>५</sup>ति खो भारद्वाजा माणवो वासट्ठस्स माणवस्स पच्चस्सासि । अथ खो वामेट्ठभारद्वाजा माणवः यन भगवा तेनुपमवमिमु उपसवमित्वा भगवता सद्धिं सम्भो<sup>६</sup>त्ति, सम्भो<sup>७</sup>नीयं वथ भाराणीयं वातिमारत्वा एवमन्तं निसी<sup>८</sup>त्ति । एवमन्तं निमि<sup>९</sup>त्तो खो वामेट्ठो माणवा भगवन्तं गायाय अज्जभा<sup>१०</sup>मि—

अनुज्झानपटिज्झाना तविज्जा मयमस्सु<sup>१</sup>भा ।

अहं पोक्खस्मानिस्स तारक्खस्साय माणवा ॥१॥

तविज्जानं यदक्खानं तत्र केवलिनो<sup>२</sup>स्समं ।

पदवस्सा वेय्यानरणा जपे<sup>३</sup> आचरियसान्ति ॥२॥

तस नो जानिवादास्मि विवादो अस्सि गोतम ।

जानिया ब्राह्मणा होति भारद्वाजो<sup>४</sup>ति भासति ।

अहं च कम्मना<sup>५</sup> तूमि एव जानाहि चक्खुम ॥३॥

त न सक्कोम सज्जासु<sup>६</sup> अज्जमज्जा मय उभो ।

भगवन्तं पुट्टुमागम्मं सबुद्धं इति विस्सुत ॥४॥

चद यथा खयातीतं पच्चपजल्लिंका जना ।

यदमाना नमस्सन्ति एव लो<sup>७</sup>नास्मि गानम ॥५॥

पक्खु लोके समुप्पन्नं मय पुच्छाम गोतम ।

जानिया ब्राह्मणो होति उदाहुं भवन्ति कम्मना ।

अजानतं नो पयूहि यथा जानमु ब्राह्मण ॥६॥

तेस वोहं व्यक्खिस्स<sup>८</sup> (वामेट्ठा नि भगवा) अनुपुग्गं यथातथ ।

जानिधिभग पाणानं अज्जमज्जा हि जानिया ॥७॥

<sup>१</sup> M अनुपकुटुम्भो <sup>२</sup> C वत्तसपधो <sup>३</sup> C मयमस्सुभो <sup>४</sup> B जपे

<sup>५</sup> M C कम्मना <sup>६</sup> M सज्जापेत्तु । <sup>७</sup> C व्यावरिस्स, M अहं

व्यक्खिस्स

अञ्जानि पद्म गमिन् यथा वम्भुपण ॥१॥  
 मच्चनो वगमागम्य पञ्च विष गात्रिनो ॥२॥  
 यन या हि मञ्जानि तना न शानि अञ्जया ।  
 एतां गमा विनाभावा पद्म लातरम परिचाय ॥३॥  
 अणि ते वरमन जीते मिथ्या वा पन मातो ।  
 जात्रिमया जिना होति ज्ञानि च जीविता ॥४॥  
 मग्मा अरुणा मुत्वा विनय्य परित्यजि ।  
 पन बालकन त्रिना न मो एता गमा इति ॥५॥  
 यथा मरणमाप्ति वाग्निा परिनिम्बय<sup>१</sup> ।  
 तत्रापि धीरा सपञ्जया पञ्चिनो कुमलो नरो ।  
 विषममुपनिम मोत्र गानो तून्त्र धमये ॥६॥  
 पण्डित पजण च दोषाग्म च अतनो ।  
 अतना गुम्भेमाना अरु<sup>२</sup>, मन्त्रमत्तनो ॥७॥  
 अब्बुहसन्तो असिता सन्ति पण्डित्य चतसा ।  
 सम्बसात्र अनिरन्तो अगोत्रो होति निरुत्तो<sup>३</sup> ॥८॥  
 सत्तमुत्त निदिठत ।

### ( १५—वामेत्त सुत्त ३।६ )

एव मे सुत । एव समय भगवा इच्छानग<sup>१</sup> विहरति इच्छानगलवनसग्गे ।  
 तन सो पन समयन सबहुग अभिञ्जाना अभिञ्जाना बाह्मणमन्त्राला इच्छा  
 नगठ पण्डितमन्ति मय्ययाद—चवी ब्राह्मणा तादवतो ब्राह्मणो पोम्भरसाति  
 ब्राह्मणा जानुस्तेणि<sup>२</sup> ब्राह्मणो तोम्यब्राह्मणो, अञ्जो च अभिञ्जाना  
 अभिञ्जाना ब्राह्मणमहासाला । जय सो वामेत्तुमारदाजान माणवान जघाविहा  
 र अनुचरममानान अनुविचरमानान जयमन्तरा कथा उदपाणि—कथ भो ब्राह्मणा  
 होतीनि । भारदाजो माणवा एवमा<sup>३</sup>—यता सो उभता सुजाता हानि मातिना  
 च पिनिनो च समुदगट्टिना याव सत्तमा पिता मट्ठुणा अक्खिन्तो अनुप

<sup>१</sup> M C परिनिम्बुतो

<sup>२</sup> M अब्बुह

<sup>३</sup> R इच्छानकले

<sup>४</sup> R M जानुस्तेणि

या हि कोचि मनुस्मेमु परपस्मेन\* जीवति ।  
 एव वाग्मन्ठ जानाहि पस्मिन्ना\* मो न ब्राह्मणो ॥२२॥  
 यो हि कोचि मनुस्ममु अन्नि उपजीवति ।  
 एव वाग्मन्ठ जानाहि चोरो एगो न ब्राह्मणो ॥२३॥  
 यो हि कोचि मनुस्ममु इस्मत्थ जीवति ।  
 एव वाग्मन्ठ जानाहि योधाजीवो न ब्राह्मणो ॥२४॥  
 यो हि वाचि मनुस्मेगु पाराहिच्चेन जीवति ।  
 एव वाग्मन्ठ जानाहि याजको सो न ब्राह्मणो ॥२५॥  
 यो हि कोचि मनुस्मेमु गाम रट्ठ च भुञ्जति ।  
 एव वाग्मन्ठ जानाहि राजा एगो न ब्राह्मणो ॥२६॥  
 न चाह ब्राह्मण भूमि योनिज मत्तिममव ।  
 भोराणि नाम सो हानि सचे होनि सक्किञ्चना ।  
 अक्किचन अनादान तमह भूमि ब्राह्मण ॥२७॥  
 मग्गययाजन छत्वा यो व न परितस्मति ।  
 मगानिग विसयुत्त तमह भूमि ब्राह्मण ॥२८॥  
 छेत्वा नदि\* वरत्त च सन्दान सहनुक्कम ।  
 उक्खित्तपट्ठिप बुद्ध तमह भूमि ब्राह्मण ॥२९॥  
 अक्कोस वधवध च अट्ठट्ठो यो तितिक्वति ।  
 गन्तीवल मलानीक तमह भूमि ब्राह्मण ॥३०॥  
 अक्कोधन धनवन्त मीलवन्त जनुम्सद ।  
 दन्न अत्तिमसारीर तमह भूमि ब्राह्मण ॥३१॥  
 वारि पोक्खरपत्तेज्व आरग्गेरिव सासपो ।  
 यो न लिप्पति कामेसु तमह भूमि ब्राह्मण ॥३२॥  
 यो दुक्खस्स पजानानि इधेव खयमत्तनो ।  
 पद्मभार विमयुत्त तमह भूमि ब्राह्मण ॥३३॥  
 गभीरपञ्च मघावि मग्गामग्गस्स वाविद ।  
 उत्तमय अनुप्पत्त तमह भूमि ब्राह्मण ॥३४॥  
 अमसट्ठ गहट्ठेहि अनापारहि चूमय ।  
 अनोवमारि\* अप्पिच्छ तमह भूमि ब्राह्मण ॥३५॥

तिष्ठन्ति न हि ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ।  
 त्रिंशद्विंशत्येव तत्तत्प्रमाणम् ॥८॥  
 ननु कीं वदाम्यस्य च तद्विषयनिर्दिष्टम् ।  
 त्रिंशद्विंशत्येव तत्तत्प्रमाणम् ॥९॥  
 चतुर्विंशति ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ।  
 त्रिंशद्विंशत्येव तत्तत्प्रमाणम् ॥१०॥  
 चातुर्विंशति ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ।  
 त्रिंशद्विंशत्येव तत्तत्प्रमाणम् ॥११॥  
 ननु मयि न हि ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ।  
 त्रिंशद्विंशत्येव तत्तत्प्रमाणम् ॥१२॥  
 ननु ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ।  
 त्रिंशद्विंशत्येव तत्तत्प्रमाणम् ॥१३॥  
 यथा तस्मात्तु ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ।  
 तद्विषयं मनुष्यसु त्रिंशद्विंशत्येव ॥१४॥  
 न चानि पतिव्रतारः न चानि पतिव्रतारः ।  
 न चानि पतिव्रतारः न चानि पतिव्रतारः ॥१५॥  
 न चानि पतिव्रतारः न चानि पतिव्रतारः ।  
 न चानि पतिव्रतारः न चानि पतिव्रतारः ॥१६॥  
 न चानि पतिव्रतारः न चानि पतिव्रतारः ।  
 न चानि पतिव्रतारः न चानि पतिव्रतारः ।  
 त्रिंशद्विंशत्येव तत्तत्प्रमाणम् ॥१७॥  
 चतुर्विंशति ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ।  
 चातुर्विंशति ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ॥१८॥  
 यो हि बोधिं मनुष्यसु यावत्कम् उपजावति ।  
 एव चातुर्विंशति ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ॥१९॥  
 यो हि बोधिं मनुष्यसु बोधार उपजावति ।  
 एव चातुर्विंशति ब्रह्मणो न चानि पतिव्रतारः ॥२०॥

चुनि यो वेत्ति गत्ता उपपात्ति च सम्बसो ।  
 अमत्त सुगत बुद्ध तमहं भूमि ब्राह्मण ॥५०॥  
 यस्स गतिं न जानन्ति देवा गंधव्वमानुसा ।  
 खीणासव अरहं तमहं भूमि ब्राह्मण ॥५१॥  
 यस्स पुरं च पच्छा च मज्जे च नत्थि विचन ।  
 अक्खिचन जनादानं तमहं भूमि ब्राह्मण ॥५२॥  
 उसमं पवरं वीरं महं विजिताविन ।  
 अनजं महातरं बुद्धं तमहं भूमि ब्राह्मण ॥५३॥  
 पुण्ये निवामं यो वेत्ति सग्गापायं च पम्सति ।  
 अयो जातिरत्तयं पत्तो तमहं भूमि ब्राह्मण ॥५४॥  
 समञ्ज्जा हंसा लोरेस्मि नामगोत्तं परप्पिन ।  
 सम्मुच्चा सम्मुत्तागतं तत्थं तत्थं पवप्पितं ॥५५॥  
 दीघरत्तमनुसयितं निट्ठियत्तमजानत्तं ।  
 अजानन्ता नोपवृत्तिं जातिया हाति ब्राह्मणा ॥५६॥  
 न जच्चा ब्राह्मणा होति न जच्चा हाति अब्राह्मणो ।  
 कम्मना ब्राह्मणो होति कम्मना होति अब्राह्मणो ॥५७॥  
 वस्सको कम्मना हाति सिप्पिको होति कम्मना ।  
 बाणिजो कम्मना होति पेस्मिको होति कम्मना ॥५८॥  
 चोरोऽपि कम्मना होति याथाजीवोऽपि कम्मना ।  
 याजको कम्मना होति राजाऽपि होति कम्मना ॥५९॥  
 एवमेतं यथाभूतं कम्मं पत्तन्ति पण्डिता ।  
 पटिच्चं समुप्पाददसा कम्मविपाककोविन् ॥६०॥  
 कम्मना वत्तती लोका कम्मना वत्तनी पजा ।  
 कम्मनिबधना सत्ता रथास्साणीव यायमी ॥६१॥  
 तपेन ब्रह्मचर्य्येनसयमेन दमनं च ।  
 एतेन ब्राह्मणो होति एतं ब्राह्मणमुत्तमं ॥६२॥  
 तीहि विज्जाहि सपत्तो मन्ता खीणपुनंभवो ।  
 एव वामेट्ठं जानाहि ब्रह्मा सक्को विजानत्तं ॥६३॥

\* M धार    \* M हातकं    \* M समञ्ज्जा    \* R नो पम्बुवान्त  
 \* M कम्मना    \* M पटिच्चसमुप्पादस्स    \* M वत्तति    \* B  
 'ब्रह्मण' ति पि

निपाय ॥ भूमे तु तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥३६॥  
 यो न हन्ति न घातति तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥३७॥  
 अविच्छेद विच्छेदेषु जतन्मृतसु निवृत्त ।  
 साधनम् अनादान तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥३८॥  
 यस्मात् रागा च शोकश्च माना मत्तो च पापिना ॥  
 भामपाग्निं आग्ना नमः भूमिं ब्राह्मण ॥३९॥  
 अन्तरा विज्जयति १ गिर मन्त्र उन्मये ।  
 यो न भिषजं विज्जि नमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४०॥  
 मोक्षं शेषं च रम्भं वा अणुं पूरुं सुभामुभं ।  
 शोकं अग्निं नाग्निं तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४१॥  
 आसा यस्मात् न विज्जन्ति अस्मि तान् परमिं न ।  
 निरासम् २ विमयुस्तं तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४२॥  
 यस्मात्प्राया न विज्जन्ति अज्ज्याय अरयवयी ।  
 अमनोगमं अनुप्यत्तं तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४३॥  
 योऽथ पुञ्जं च पापं च उभो सगं उपचया ।  
 यमोक्तं विरजं सुदं तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४४॥  
 यन्मम विमं मृदं विपसन्नमताविनं ।  
 नन्दीभवपरिक्लीणं ३ तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४५॥  
 यो ह्यमं पलिपथं दुग्गं ससारं माहमञ्जगा ।  
 निष्णो पारगतो ४ ह्यायी अनेजो अन्धकथा ।  
 अनुपात्तं निवृत्तो तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४६॥  
 योऽथ वामं पट्टवान् अनागारो परिव्वज्ज ।  
 वामभवपरिक्लीणं तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४७॥  
 योऽथ तट्टं पट्टवान् अनागारो परिव्वज्ज ।  
 तट्टमवपरिक्लीणं तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४८॥  
 हित्वा मानुसकं योगं दिग्गं यागं उपचया ।  
 सव्वलोगविसयुत्तं तमहं भूमिं ब्राह्मण ॥४९॥  
 हित्वा रोनं च अरणिं च सीतिभनं निरुपाधिं ।  
 सव्वलोगाभिभुं वारं तट्टं भूमिं ब्राह्मण ॥५०॥

१ M ओहितो

२ M, P विज्जयति

३ M निरासत्

४ M नदीरागं

५ M पारगता

पमिज्जिमु, पुत्र च लोहित च पण्डरिमु। जय स्वा बोवाण्णिया भिक्षु तनवा  
बाधन बाल अवासि। बालकना च बोवाण्णियो भिक्षु पदुमनिरय उपपज्जि  
सारिपुत्तमोग्गल्लानसु चित्त आघातेत्वा।

अथ खो ब्रह्मा सहपति अभिक्वन्ताय रत्तिया अभिक्वन्तवणा भवत्तप्प  
जन्वन ओभासेत्वा यन भगवा तेनुपमकमि उपसक्कमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा  
एकमन्न अट्टामि। एकमन्न ठिता खो ब्रह्मा सहपति भगवन्त एतवोच—कोना  
त्रियो भन्ते भिक्षु कालकतो कालवनो च भन्ते काकालियो भिक्षु पदुमनिरय  
उपपन्नो सारिपुत्तमागल्लानेमु चित्त आघातत्वाप्ति। इद अवाच ब्रह्मा सहपति  
इद ववा भगवन्त अभिवादेत्वा पदक्खिण क्त्वा तत्थेव जन्तरथायि।

अथ खा भगवा तस्सा रत्तिया अच्चयन भिक्षू आमन्नमि—इम भिक्षवे  
रत्ति ब्रह्मा सहपति अभिक्वन्ताय रत्तिया पे० आघातेत्वाप्ति, इद अवोच ब्रह्मा  
सहपति इद क्त्वा म अभिवादेत्वा पक्खिण क्त्वा यत्थव अन्तरधायीनि।  
एष बुत्ते अज्जतरो भिक्षु भगवन्त एतदवोच—वीवदीय नु खो भन्ते पदुमे  
निरये आयुप्पमाणनि। दीय खा भिक्षु पदुमे निरये आयुप्पमाण, त न मुक्क  
सचातु एत्तकानि वस्सानीति वा, एत्तकानि वस्ससतानीति वा एत्तकानि वस्सस  
तमहस्सानीति वाप्ति। सक्का पन भन्त उपमा<sup>१</sup> कानुप्ति। सक्का भिक्षूनि  
भगवा अवोच—मेय्यथापि भिक्षु वीसतिव्वारिका वामलको निलवाहो सतो  
पुरिलो वस्समनस्स अच्चयन एक एकं निठ उद्धरेय्य, विप्यतर खा सो भिक्षु  
वीसतिव्वारिको वामलको निवाहो टमिना उपक्कमेन परिकव्वय परियाण्ण  
गच्छय्य, न त्वव एका अब्बुदो निरयो। मेय्यथापि भिक्षु वीसति अब्बुदा  
निरया एव एको निरब्बुदो निरया, मेय्यथापि भिक्षु वीसति निरब्बुत्ता निरया  
एव एको अवगा निरयो मेय्यथापि भिक्षु वीसति अवगा निरया एव एका  
अट्टा निरयो मेय्यथापि भिक्षु वीसति अट्टा निरया एव एको अट्टो निरयो  
मेय्यथापि भिक्षु वीसति अट्टा निरया एव एको कुमदो निरयो मेय्यथापि  
वासति कुमुत्ता निरया एव एको साणधिको निरया, मेय्यथापि भिक्षु  
वीसति साणधिका निरया एव एको उप्पत्ता निरयो, मेय्यथापि भिक्षु  
वीसति उप्पत्ता निरया एव एको पुण्णिका निरया मेय्यथापि भिक्षु वीसति  
पुण्डिका निरया एव एको पुण्णिका निरया मेय्यथापि भिक्षु वीसति



एवं वृत्तं यावदुभयभ्यां मातृश्रुतं भगवत्तत्त्वज्ञानं—अभिवादनं मा  
मातृश्रुतं ये एवं मयं भगवन्तं गोप्यं मरणं मरणं यमं यं भिन्नगुणं यं  
उपामाते नो भव मातृश्रुतं चारेण अज्ययन्तं यावत्तत्त्वज्ञानं यमं वि ।

वामेष्टमुत्तं मिश्रितं ।

### ( ३६—रासलिय सु ३१० )

एवं म गुणं । एवं मयं भगवत्तत्त्वज्ञानं विचार्य भगवन्तं आत्मनिष्ठितम्  
आगमे । अथ यो गोप्यतया भिन्नं मयं भगवत्तत्त्वज्ञानं ननुपगम्य उपमरमित्या  
भगवन्तं अभिवादनं एवमयं नित्यं । एवमन्तं मिश्रितं यो मातृश्रुतं  
भिन्नं भगवन्तं एवमयं—मातृश्रुतं भगवत्तत्त्वज्ञानं मातृश्रुतं  
इच्छानं वमं मयं वि । एवं वृत्तं भगवत्तत्त्वज्ञानं विचार्य एवमयं— मा ह्य  
वातृश्रुतं मा ह्य गोप्यतया यमातृश्रुतं वातृश्रुतं सारिपुत्तमोगलानमु चित्तं  
यमलं सारिपुत्तमोगलानां वि । दुनियं वि या गोप्यतया भिन्नं भगवन्तं  
एवमयं—विचार्य मे भन्तं भगवत्तत्त्वज्ञानं पञ्चमिरा अथ यो पापिच्छाद्व  
सारिपुत्तमोगलानां, पापिच्छाद्व इच्छानं वमं मयं वि । दुनियं वि यो भगवत्त  
गोप्यतया भिन्नं एवमयं—मा ह्य वातृश्रुतं मा ह्य वातृश्रुतं यमातृश्रुतं  
गोप्यतया सारिपुत्तमोगलानामु चित्तं यमलं सारिपुत्तमोगलानां वि । तति  
मयं वि यो वातृश्रुतं भिन्नं भगवत्तत्त्वज्ञानं एवमयं—विचार्य मे भन्तं भगवत्त  
मद्वीयिनो पञ्चमिरा अथ यो पापिच्छाद्व सारिपुत्तमोगलानां पापिच्छाद्व  
इच्छानं वमं मयं वि । ततियं वि यो भगवत्तत्त्वज्ञानं भिन्नं एवमयं—मा  
ह्य गोप्यतया मा ह्य गोप्यतया यमातृश्रुतं गोप्यतया सारिपुत्तमोगलानामु  
चित्तं यमलं सारिपुत्तमोगलानां वि । अथ यो वातृश्रुतं भिन्नं उद्गमासना  
भगवन्तं अभिवादनं पञ्चमिरा वं वा पञ्चमिरा । अचिरपञ्चमिरा यं वातृश्रुतं  
भिन्नं यो मातृश्रुतं विचार्य सत्त्वा वाया पून्टा अहंति सामपमत्तियो  
हुत्वा मुग्गमत्तियो अहंति मुग्गमत्तियो हुत्वा कळायमत्तियो अहंति कळायमत्तियो  
हुत्वा कोलद्विमत्तियो अहंति कोलद्विमत्तियो हुत्वा कोलमत्तियो अहंति कोलमत्तियो  
हुत्वा आमलवमत्तियो अहंति आमलवमत्तियो हुत्वा वळ्ळमल्लकुमत्तियो  
अहंति वळ्ळमल्लकुमत्तियो हुत्वा विलिमत्तियो अहंति विलिमत्तियो हुत्वा

अथ लोहमय पन वृम्भि, अग्निस्सिम जलित पविसन्ति ।  
 पञ्चन्ति हि तामु चिररत्त, अग्निस्सिमासु<sup>१</sup> समुप्पिलवासा<sup>२</sup> ॥१४॥  
 अथ पुत्रलोहितमिस्म, तत्थ वि पञ्चन्ति विविस्सवारी ।  
 य य<sup>३</sup> दिसत्त अधिमेति, तत्थ विल्हस्सनि<sup>४</sup> सप्पुसमानो ॥१५॥  
 पुट्ठवावमय सलिलस्मि, तत्थ वि पञ्चन्ति किम्बिस्सवारी ।  
 गन्तु न हि तोरमपत्थि, सप्पसमा हि समन्तवपत्ता ॥१६॥  
 अभिपत्तवन पन तिण्ह, त पविसन्ति समन्ति<sup>५</sup> उदगता<sup>६</sup> ।  
 जिण्ह वड्डिसा गहेवा, आरच्चयारच्चया<sup>७</sup> विहनन्ति ॥१७॥  
 अथ वत्तरणि पन दुग्ग, निण्हधार<sup>८</sup> खुरधारमुपति ।  
 तत्थ मन्दा पपनन्ति, पापवत्ता पापानि<sup>९</sup> करित्वा ॥१८॥  
 खान्ति हि तत्थ रुदन्त, मामा मबला कावोलगणा च ।  
 सोणा सिगाला पणिगिज्जा, कुल्ला वायसा च वितुदन्ति ॥१९॥  
 विच्छा यताये इध वुत्ति, य जनो पस्सति विम्बिस्सवारी ।  
 तस्मा इध जीवितमेसे, विच्चकरो सिया नरो न च मज्जे ॥२०॥  
 न गणिता विदूहि तिलवाहा, ये पदुमे निरये उपनीता ।  
 नहुनानि हि काटियो पञ्च भवन्ति द्वादस कोटिमत्तानि पुनज्ज्जा ॥२१॥  
 पावदुक्खा निरया इध भुत्ता, तत्थपि ताव चिर वसिन्त्य ।  
 तस्मा मुचिपेमलसाधुगुणेषु वाच मन सतत्त परिरक्कयन्ति ॥२२॥

कोनालियमुत्त निट्ठित ।

( ३७—नाटक-सुत ३।११ )

आनज्जान निदसगण पनीने<sup>१</sup>, गववच्च इन्द मुचिवसन च दव ।  
 वुत्त गहत्वा अतिरिक्क थोमयन्, जसिनो इस्सि अहस निवाविहारे ॥१॥  
 त्थिवान दवे मुदितमने<sup>२</sup> उन्मो चित्ति<sup>३</sup> करित्वा इद अवो<sup>४</sup> चासि तत्थ ।  
 विज्जेयसधो अतिरिक्क कल्परूपो, वुत्त गहत्वा भमयय<sup>५</sup> चि पटिज्ज ॥२॥

<sup>१</sup> गिनिस्समागु समुप्पिलवा ते      <sup>२</sup> R भं      <sup>३</sup> R, B किलिज्जनि  
<sup>४</sup> M समुत्तिगगगता      <sup>५</sup> B आरज धारजया      <sup>६</sup> M पापानिध कत्वा  
<sup>७</sup> M पपोते      <sup>८</sup> M पमुदितमने      <sup>९</sup> C चित्ति      <sup>१०</sup> M जवाचापि  
<sup>११</sup> M न रमयय

पुरितस्स ि जानस्स कृत्तरी जायत मुत्त ।  
 याय छिन्ति अत्तान बाणे दुग्धामित मण ॥१॥  
 या निन्ध्य पगसनि । त या निन्दन्ति या पससिपो ।  
 विच्चिन्ति मुत्त सो क्ति । कलिना तन मुत्त न विन्ति ॥२॥  
 अप्पमत्तो अय क्ति ।  
 या अक्खमु धनपराजया मग्गम्मापि सहापि अत्तमा ।  
 अयमव महत्तरो क्ति या मुत्तनमु मन पणामय ॥३॥  
 सत्त महत्तान निरब्बुत्तान छत्तिम<sup>१</sup> च पच्च च अब्बुत्तानि<sup>२</sup> ।  
 य अरियवरुणी निरयं उपनि चाच मन च पणिधाय पापक ॥४॥  
 अभूतत्राणी निरय उपनि या वाऽपि क्त्वा न करापीति चान् ।  
 उभोऽपि त पच्च समा भवन्ति निहीनरम्मा मनुज्जा परत्थ ॥५॥  
 या जप्पट्ठस्म नरस्म दुम्भनि मुट्ठस्म पासस्स अवगणस्स ।  
 तमव धान पच्चनि पाप मुत्तमा रजो पटिवान् च पित्ता ॥६॥  
 या त्रैभुगुण अनुयुत्ता सा वचसा परिभासति अज्जे ।  
 अम्मढो क्त्तरियो अवज्जु मच्छरि पेमुणियस्मि अनुयुत्तो ॥७॥  
 मुत्तदुग्धा विभूतमनरिय भूतहु पापक दुक्कतवारि ।  
 पुरितस्सकलि अवजात मा बहु भाणिध नरधियो<sup>३</sup>सि ॥८॥  
 रजमाविरसि अहिताय मन्ते गरहसि किम्बिमवारि ।  
 बहूनि च दुक्कचित्तानि चरित्वा गच्छिगि<sup>४</sup> खो पपत्त<sup>५</sup> चिररत्त ॥९॥  
 न हि नस्सति वस्सचि कम्म एनि ह<sup>६</sup> न<sup>७</sup> लभतेऽव सुवामि ।  
 दुम्भ मग्गे परलोकं अत्तनि पस्सति त्रिचिक्खारी ॥१०॥  
 वयोसकुममाहत्तद्वान निण्ढधार जयसूत्तमुपति ।  
 जय<sup>८</sup> तत्तज्जयागुट्तभिभ, भोजनमत्ति तथा पनिरूप ॥११॥  
 न हि वग्गु बन्ति वत्ता नाभिजवन्ति न ताणमुपनि ।  
 अगार सत्ते येन्ति, अग्निनिसम जलितं पविसन्ति ॥१२॥  
 जालेन च ओनेहियाना तत्थ हान्ति अयामपत्तेहि ।  
 अय<sup>९</sup> व निमिसमायन्ति त विवत्त<sup>१०</sup> हि यथा महिवायो ॥१३॥

<sup>१</sup> M छत्तिसति पच च तब्बुदान    <sup>२</sup> M मच्छसि    <sup>३</sup> M पतति  
<sup>४</sup> P पण्ट पपव<sup>५</sup> ति पि    <sup>६</sup> M हन B ह त अथवा हत्त    <sup>७</sup> M तत्थ  
<sup>८</sup> M वित्त्यत

सो साविधान विपुलं जनत्वं<sup>१</sup> पीति, अन्नपुरह्या निगमा ब्रह्मचारी ।  
 भो भागिनेय्य मयमनुवम्पमानो, समादपसि असमधुरस्स धम्म ॥१७॥  
 बुद्धाऽपि घोसं यद परतो सुणासि, सम्बोधिपत्तो विनरति<sup>२</sup> धम्ममग ।  
 गत्वान नत्थ समयं परिपुच्छियाना<sup>३</sup>,  
 चरस्सु तस्मिं भगवति ब्रह्मचरिय ॥१८॥  
 तनानुमिण्ठो हितमनसेन तान्निना, अनागत परमत्रिसुद्ध<sup>४</sup>स्सिना ।  
 मा नाल्लो उपचितपुञ्जसञ्चयो,  
 जिनं पतिवत्तं परिवसि रविस्सनिद्रियो ॥१९॥  
 सुत्वाणं घोमं जिनवरचरवत्तने, गत्वाणं दिस्वा इमिनिस्समं पसन्तो ।  
 मोनम्मसट्ठ मुनिपवरं अपुच्छि, समागते असिन्धु<sup>५</sup>यस्स सासान्ति ॥२०॥

१ दुष्प्राप्ता<sup>१</sup> मित्रिणा ।

जज्जातमत्तं वचनं असितत्ता यथातथ ।  
 न तं गौतमं पुच्छामं सत्तमम्मानं पारगु ॥२१॥  
 अनगारियुपेतस्स भिक्खाचरियं जिगिसन्तो ।  
 मुनिं पत्तुहि मे पुट्ठो मोनम्म्य उत्तमं पदं ॥२२॥  
 मोनम्म्यं ते उपज्जिस्स (ति भगवा ।) दुक्कारं दुरभिगभव ।  
 हं ते न पवक्खामि स<sup>६</sup>धम्मस्सु द्ढन्तो भव ॥२३॥  
 भमानभाय<sup>७</sup>ं धुब्बेयं गामे जन्तुद्वन्दित ।  
 मनोपदामं रक्खेय्यं सत्तो अनुण्णतो चरे ॥२४॥  
 उच्चावचा निच्छरन्ति दाये अगिसिग्गूपमा ।  
 नारियो मुनिं पलामेति तां सु तं मा पणोभय ॥२५॥  
 विरत्तो मेधुना धम्मां विवा कामं परोवरे<sup>८</sup> ।  
 अनिरद्धो जसारत्तो पाणसु तसयावरे ॥२६॥  
 यथा अहं तथा एते, यथा एते तथा अहं ।  
 अत्तानं उपमं वत्ता न हनेय्यं न घातये ॥२७॥  
 हितां वृच्छं च लाभं च यत्थं सत्तो पधुज्जनो ।  
 चक्खुमा पटिपज्जेय्यं तरेय्यं नरवं इमं ॥२८॥

<sup>१</sup> M जनेत्वा । बहिं अतेपुरम्हा

<sup>२</sup> M

विवरति

<sup>३</sup> M परिपुच्छमानो

<sup>४</sup> M असिताय्यस्स

<sup>५</sup> M यत्तुक्कया

<sup>६</sup> B, M समानभाग

<sup>७</sup> M परोपरे

यथापि आसि अगुरहि सद्गमो, जयो गुरान असुरा पराजिता ।  
 नथापि नतात्मा गोमहमनो, किं जल्मुन एतं मरु यमोत्ति ॥ १॥  
 मेनेनि गायति च वात्यनि च भुजानि पाठति च नन्वयन्ति च ।  
 पुच्छाणि माह मरुदुवांसिन धुनाय म ससय गिण भारिमा ॥४॥  
 मा<sup>१</sup> बाधिसत्ता रतनवरो जतुत्यो मनुस्सराव त्तिमुद्यताय जाता ।  
 सनयान गाम जनपद लुम्बिनध्य, सनञ्ज पुद्गा अनिरिति वत्यम्पा ॥५॥  
 सा मन्त्रमत्तुत्तमा अण्णपुण्णलो नरासभो मन्त्रपजान उत्तमो ।  
 मत्तस्सति चक्क इतिव्ध्य अन्न नन्व गीहो वत्वा मिगाभिभू<sup>२</sup> ॥६॥  
 त सद् सुत्वा तुरित अववरी सा मुद्धान्मन्नं सत् भवन उपागमि ।  
 निसज्ज तत्थ इद अबोधासि मक्ये, कुट्टि कुमारो अहमपि दट्ठुवामा ॥७॥  
 ततो कुमार जित्त इर सुवण्ण उन्नमस्येव सुकुसन्तम्पण्ठ ।  
 तट्ठल्लमान सिरिया अनामवण्ण दस्सिमु<sup>३</sup> पुत्त जमिन् हयस्म सक्का ॥८॥  
 त्तिस्वा कुमार सिग्गिमिव पज्जन्त तारासभं व नभसिगम विमुद्ध ।  
 मुरिय तपन्त मरदरिव<sup>४</sup> अमभुत्त आनन्त्याना विपुल्लस्य पानि ॥९॥  
 जावमाव च सन्तमण्ण छत्त मरु धारयु अल्लसिक्खे ।  
 सुवण्णदण्ण घोसिपगन्ति चायरा न त्तिम्मरे चामरछत्ताहृत्ता ॥१०॥  
 त्तिस्वा जयो वण्हसिरिहया वसि, सुवण्णनक्ख विय पण्णुक्खवठ ।  
 सत्त च छत्त परियन्त<sup>५</sup> मुद्धनि उन्नगचित्तो सुमनो पटिगह ॥११॥  
 पटिगहत्वा पन्न सक्कपुद्गाव जिगिसक्को<sup>६</sup> वक्खणमन्तापाग्गु ।  
 पमत्तचित्तो गिर अमुदीरयि अनुत्तराय दिपणा उत्तमो ॥१२॥  
 अयत्ततो गमन अनुत्तरन्तो अयम्पो गल्पति<sup>७</sup> जस्सुकानि ।  
 त्तिस्वान मत्तया इमिमवोच गन्त नो वे कुमारो भविस्सति अन्तरायो ॥१३॥  
 त्तिस्वान मत्तया इमिमवोच अरुत्थ नाह कुमार जित्त अनुत्तरामि ।  
 म चापिमस्सा भविस्सति अन्तरायो न आरक्का अधिमनसा भवाय ॥१४॥  
 मवाधियग्न पुमिस्सनाय कुमारो मा धम्मवस्स परमविमुद्धन्तसी ।  
 वत्तस्सगाय पुद्गाणा नानुक्का जिगारिवस्स भविस्सति ब्रह्मचरिय ॥१५॥  
 मम च जायु न चिन्धावसमा अयन्तरा म भविस्सति कार्णाहरिया ।  
 माह न सुस्म असमधुरस्स धम्म सन्निह्म अटठो धम्मनगतो जधावो ॥१६॥

<sup>१</sup> M यो    <sup>२</sup> M मिगाभिभू    <sup>३</sup> M दस्सिमु    <sup>४</sup> M तार-  
 विरावग्गमभुत्त    <sup>५</sup> M धारयत्त    <sup>६</sup> M जिगीसक्को    <sup>७</sup> M गरयति  
 B 'गरयति' इति वि    <sup>८</sup> M अज्जो

यदूनकं तं सण्णति यं पूरं सन्तमेव तं ।

जडदं कुभूपमो वालो रहो पूरोऽनं पण्वितो ॥४३॥

यं ममणो बहु भासति उपतं अत्यसद्वितं ।

जानं सो धम्मं दसति जानं सो बहु भासति ॥४४॥

यो च जानं यनत्तो<sup>१</sup> जानं न बहु भासति ।

न मुनिं मोनमग्गतिं तं मुनिं मोनं<sup>२</sup> मज्जया<sup>३</sup> ति<sup>४</sup> ॥

नालकमुत्तं निट्ठितं ।

### ( ३८—द्वयतानुपस्सना सुत्त ३।१२ )

एव मे सुत्त । एकं समयं भगवां गावस्तिथयं विहरति पुञ्जाराधे मिगारमालु-  
पासा<sup>१</sup> । तेन सा पनं समयेन भगवां तदहोमये पण्णम्मं पुण्णाय पुण्णमाय  
रत्तिया भिक्खुसंघपण्णितो अन्धोवासे निसिरो होति । अयं सा भगवां तुण्हीभूत  
तुण्हीभूत भिक्खुसंघं अनुविलोकेत्वा भिक्खं आमन्तसि—यं तं भिक्खवे कुसला  
धम्मां धरियां निम्मानिकां सम्बोधगामीनो तेसं वो भिक्खवे कुसलान् धम्मान्  
वरियां निम्मानिकान् सम्बोधगामीन् वा उपनितां सदतायानि, इति च भिक्खवे  
पुच्छित्तारो अस्सु, तं एव अस्सु वचनीया—यावदव द्वयतानं धम्मां यथाभूतं  
आणायांति । किं च द्वयतं वदेथ—एदं दुक्खं अयं दुक्खसमुदयोऽति अयं  
एकानुपस्सना अयं दुक्खनिरोधो अयं दुक्खनिरोधगामीनी पटिपदाऽति अयं दुक्ति  
यानुपस्सना । एवं सम्माद्वयतानुपस्सिनी एतो भिक्खवे भिक्खुतो अप्पमत्तस्स आता  
पिनी पटितस्स विहरतो द्विधं फलान् अज्झनरं फलं पाटिक्खत्तं—दिट्ठवं धम्मे  
अज्झा, सति वा उपाग्गिमेगे अनागामित्ताऽति । इत्थंवाचं भगवां, इदं यत्था सुगता  
अयापरं एतदवोचं सत्था—

ये दुक्खं नप्पजानन्ति अथो दुक्खस्सं समव ।

यत्थं च सम्वसो दुक्खं असेम उपरुज्जयति ।

तं च भग्गं न जानन्ति दुक्खूपसमगामिन ॥१॥

चेतोविमुत्तिहीना ते अथो पज्झाविमुत्तिया ।

अभय्या ते अत्तविरियाय ते वं जातिजहपणा ॥२॥

उन्मत्ता विवाहागो अल्पजन्म अल्पयुवा ।  
 म । २७२२ विष्णो अति १ १०१ नि मुद्रा ॥२७॥  
 म विष्णो अति यान् अतिरस्य ।  
 उपद्रितो हस्तमूर्त्तस्य आसुतमूर्त्तो मुनि ॥२८॥  
 म शान्तमूर्त्तः धारा यान् ममिमा मिया ।  
 गायत्र २२ मूर्त्तस्य अस्तः अभिनागः ॥२९॥  
 ताः रक्षा विवरा गामां अनिजये ।  
 अस्तुन नाभिनम्य अभिहारं च शमयो ॥३०॥  
 १ मुनि<sup>१</sup> गायमात्म कुतु मरता पर ।  
 धामसां विष्णो न वाप यत् ११ ॥३१॥  
 अस्त्य मति गाय नाथं कुमन्मिति ।  
 उभयोष ना ता<sup>२</sup> रक्षां उपनिषत्ति ॥ ३२॥  
 ता पतपाणि विवराः अमुयां मुनमस्त ॥ ।  
 अस्त्य दान १ शीत्य जनां नावजानिय ॥३३॥  
 उक्तावधा हि पश्चिन्म समजो परागित ।  
 म पार विष्णु<sup>३</sup> मति म २२ लक्ष्मणं मुनि ॥३४॥  
 यस्त्य १ विवरा नथि विष्णोवस्त भिष्णुवा ।  
 विष्णानिष्कण्ठोवस्त पारवत्ता म विवरा ॥३५॥  
 मोनय्य त उपजिज्जस्मं (नि भगवा ।) पुरधारपमो भव ।  
 जिष्णाय तातु आत्वं उर गयतो मिया ॥३६॥  
 अतीर्णत्ता च मिया न चापि बहु विनये ।  
 निराभगवा जमिनी ब्रह्मचरिपरायणा ॥३७॥  
 एवास्तनस्त सितव्य समणास्तनस्त च ।  
 एवत मोनमजान एवो च अभिरमिस्तति<sup>४</sup> ॥३८॥  
 अथ आमिहि दय मिया ।  
 मुद्रा धारान निष्ठात शायीन धामवागान<sup>५</sup> ।  
 ततो हिरि च सद्ध च भियो कुव्यथ मामनो ॥३९॥  
 त मदीहि विजानाय सोभसु पारसु च ।  
 सणत्ता यन्ति कुस्तोभा मुद्रा याति महोदधि ॥४०॥

१ M मुनि २ R तादी ३ P कुतु ४ B अभिरमिस्तति

५ R धामवागीनं

सञ्जसत्वारसमथा सञ्जाय उपरोधना ।

एव दुक्खस्यो होति एत जत्वा यथातथ ॥९॥

सम्पत्ता वेदगुनो सम्पत्तञ्जाय पण्डना ।

अभिभुय्य मात्सयोग नागच्छन्ति<sup>१</sup> पुनन्मवजति ॥१०॥

मिया अञ्जेन पि कथं च सिया । य किञ्चि दुक्ख सम्भोति सञ्ज  
विज्जाणपच्चयाजति अयमेकानुपस्सना, विज्जाणस्स त्वेव अससविरागनिरोधा  
नत्थि दुक्खस्स सम्भवोति जय दुतियानुपस्सना । एव सम्मा अथापर  
एतन्वाच सत्या—

य किञ्चि दुक्ख सम्भोति सञ्ज विज्जाणपच्चया ।

विज्जाणस्म निरोधन नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ॥११॥

एव आगत्य जत्वा दुक्ख विज्जाणपच्चया ।

विज्जाणूपसमा भिवरु निच्छातो परिनिब्बुतोति ॥१२॥

सिया अञ्जेन पि कथं च सिया । य किञ्चि दुक्ख सम्भोति, सञ्ज  
सम्पच्चयाजति अयमेकानुपस्सना फस्मस्म त्वेव अमेमविरागनिरोधा नत्थि  
दुक्खस्स सम्भवोति अय दुतियानुपस्सना । एव सम्मा अथापर एतदवाच  
सत्या—

तस फस्सपरत्तान भवसोत्तानुमारिण ।

कुम्भापटिपत्तान जारा मयाजनस्सयो ॥१३॥

ये च फस्म परिज्जाय अञ्जाय उपसम रता ।

य च फम्माभिसमया निच्छाता परिनिब्बुताति ॥१४॥

सिया अञ्जेन पि कथं च सिया । य किञ्चि दुक्ख सम्भोति सञ्ज  
वेत्तापच्चयाजति अयमेकानुपस्सना । वेत्तान त्वेव अमेमविरागनिरोधा नत्थि  
दुक्खस्स सम्भवोति अय दुतियानुपस्सना । एव सम्मा अथापर एतदवाच  
सत्या—

सुत्त वा यत्ति वा दुक्ख अदुक्खममुख सह<sup>२</sup> ।

अज्जतं च उहिद्धा च य किञ्चि अत्थि वेदित ॥१५॥

एत दुक्खति जत्वान भोमधम्म पणोत्तिन ।

पुस्स पुस्स वय पस्स एव तय विरजति ।

वेत्तान स्वया भित्तु निच्छातो परिनिब्बुताति ॥१६॥



ये<sup>१</sup> च दुःखं पञ्चानि अथा दुःखस्म मभय ।

यथ च सम्भवो दुःखं अयं उपपज्झति ।

त च मयं पञ्चानि तुक्कूपसमयाभिन ॥२॥

चनोविमुत्तिमपत्ता अथा पञ्चाविमुत्तिया ।

भज्या तं जन्तविरियाम न ते जानिज्झरूपाणि ॥४॥

मिया अञ्जेन पि परिघायन सम्माद्वयतानुपस्मत्ता<sup>२</sup>ति इति चे भिक्खवे पुच्छितारो अस्सु मियाज्जि<sup>३</sup>त्सु वचनीया । कथं च मिया । य किंचि दुःखं सम्भोति सब्ब उपधिपच्चयाज्जि अय एवानुपस्सना, उपधांन त्वव असमविराग निरोधा नत्थि दुःखस्स सम्भवोति अय दुतियानुपस्सना । एव मग्गमा  
५० अथापर एतद्वोच सत्था—

उप<sup>४</sup>धानिगता पभवन्ति दुक्खा । य वचि ओक्खस्मि अनक्खपा ।

या वे जविट्ठा उपधिं करोति । पुनप्पुन दुक्खमुपेति मग्गमा ।

तस्मा पञ्चानं उपधिं न वयिरा । दुक्खस्स जानिप्पभवानुपस्मीति ॥५॥

मिया अञ्जेनपि परिघायन सम्माद्वयतानुपस्सनाज्जि इति<sup>५</sup> च भिक्खवे पुच्छितारो अस्सु मिया<sup>६</sup>ति<sup>७</sup>स्सु वचनीया, कथं च मिया । य किंचि दुःखं सम्भोति सब्ब अविज्जापच्चया<sup>८</sup>ति अय एवानुपस्सना अविज्जाय त्वेव असमविरागनिरोधा नत्थि दुःखस्स सम्भवोति अय दुतियानुपस्सना । एव सम्मा ५० अथापर एतद्वोच सत्था—

जातिमग्गसत्तारं य वान्नि पुनप्पुन ।

एतन्नावज्जायाभावो अविज्जा यव सा गति ॥६॥

अविज्जा ह्य महामोहो यीदं सत्ति चिर ।

विज्जागता च य सत्ता नागच्छन्ति पुन<sup>९</sup>भवन्ति ॥७॥

मिया अञ्जेन पि ५० कथं च मिया । य किंचि दुःखं सम्भोति सब्ब सत्तारपच्चयाज्जि अय एवानुपस्सना, सत्तारान त्वव असमविराग निरोधा नत्थि दुःखस्स सम्भवोति अय मितियानुपस्सना । एव मग्गमा  
अथापर एतद्वोच सत्था—

य किञ्चि दुःखं सम्भोति सब्ब सत्तारपच्चया ।

सत्तारान निराधनं नत्थि दुःखस्स सम्भवोति ॥८॥

एतं जानीनव जत्वा दुक्खं सत्तारपच्चया ।

एत आदीनव अत्वा दुक्त्वा आहारपञ्चया ।

सत्राहार परिञ्जाय सञ्वाहारमग्निमित्तो ॥२५॥

आरोग्य सम्मन्त्राय आसवान परिक्रमया ।

सत्ताय सेवी धम्मट्ठो मरु न उपति वदगुति ॥२६॥

सिया अञ्जेन पि पे० वय च सिया । य विञ्चि दुक्त्वा सम्भोति  
मञ्च इञ्जितपञ्चयाऽति अय एवानुपस्मना, इञ्जितान त्वेव असेसधिरागनिोधा  
नयि दुग्त्वास्स सम्भवोति अय दुत्तियानुपस्मना । एव सम्मा अथापर  
एतदवोच सत्था—

य विञ्चि दुक्त्वा सम्भोति सत्र इञ्जितपञ्चया ।

इञ्जितान निरोधेन नत्थि दुक्त्वास्स सम्भवा ॥२७॥

एत आदानव अत्वा दुक्त्वा इञ्जितपञ्चया ।

तस्मा एज बोसज्ज सत्तारे उपसधिय ।

अनजा अनुपाणो सत्ता भिक्खु परिव्वज्जति ॥२८॥

सिया अञ्जेन पि पे० वय च सिया । निस्सितस्स चल्लि होति  
अय एवानुपस्मना, अनिस्सितो न चरति अय दुत्तियानुपस्मना । एव सम्मा  
अथापर एतदवोच सत्था—

अनिस्सिता न चल्लि निस्सितो च उपादिय ।

इयभानञ्जायाभाव सत्तार नानिवत्तति ॥२९॥

एत आदीनव अत्वा निस्मयमु महम्मय ।

अनिस्मितो अनुपाणो सत्तो भिक्खु परिव्वज्जति ॥३०॥

सिया अञ्जेन पि पे० वय च सिया । ह्येहि भिस्सवे आरुप्पा  
मल्लनराऽति अय एवानुपस्मना, आरुप्पेहि निराधो सन्ततरोति अय दुत्तियानु  
पस्मना । एव सम्मा अथापर एतदवोच सत्था—

य च रूपपमा सत्ता य च आरुप्पवासिनो<sup>१</sup> ।

निरोध अप्पजानन्ता आगन्तारा पुनम्मव ॥३१॥

य च ह्ये परिञ्जाय अरूपेमु सुसण्डिता<sup>२</sup> ।

निरोधे य विमुच्चन्ति ते जना मच्चुद्वायिनोऽति ॥३२॥

सिया अञ्जेन पि पे० वय च सिया । य भिक्खवे सत्त्ववस्म  
लास्स समारवस्स सम्ममणप्राह्मणिया पजाय सत्त्वमनुस्साय इद सच्चन्ति

<sup>१</sup> M आरुप्पद्वयिनो

<sup>२</sup> M असंश्लिता

मिया अञ्जो नि कथं च मिया । यं किञ्चिदुक्तं सत् ॥१॥ सत्  
 तत्प्राप्त्यापि अज्ञानादुत्पत्त्या तत्प्राप्त्यै तत्त्व अज्ञानादुत्पत्त्या नित्य  
 शुद्धस्य सम्प्रदायि अर्थे नित्यतुल्या । एव सम्मा अथापर एतद्वच  
 सथा—

तत्प्राप्त्यो गुणितो गोपमज्ञातं मयम् ।

अथमादुत्पत्त्याय मयात्तं तातिरसति ॥१॥

एत आनीतव आत्मा तत्त्वा शुद्धस्य सम्प्रदायः ।

धीतव्यो ज्ञानात्ता मतो भिन्नं तत्त्वद्वयम् ॥१॥

मिया अञ्जो नि कथं च मिया । यं किञ्चिदुक्तं सत् ॥१॥ सत्  
 उपात्तपञ्चयात्तं अथमादुत्पत्त्या उपात्तानां तत्त्व ज्ञानविद्यानिरोधो नित्य  
 दुक्त्वस्म सम्प्रदायि अर्थे नित्यतुल्या । एव सम्मा अथापर एतद्वच  
 सथा—

उपात्तपञ्चयात्तं भवो भूतो दुक्तं निगच्छति ।

ज्ञानस्य मरणं ह्येति एतत् दुक्त्वस्य सम्प्रदायः ॥१॥

तस्मा उपात्तपञ्चयात्तं सम्प्रदायं पठित्वा ।

जातिरसति अभिज्ञाय ताच्छ्रुतिं पुनर्भवेति ॥२॥

मिया अञ्जो नि कथं च मिया । यं किञ्चिदुक्तं सत् ॥१॥ सत्  
 आरम्भपञ्चयात्तं अथ एकानुपस्मना आरम्भान् यत्त अतगद्विद्यानिरोधो नित्य  
 दुक्त्वस्म सम्प्रदायि अर्थे नित्यतुल्या । एव सम्मा अथापर एतद्वच  
 सथा—

यं किञ्चिदुक्तं सत् ॥१॥ सत् आरम्भपञ्चयात्तं ।

आरम्भान् निरोधनं नित्यं दुक्त्वस्य सम्प्रदायः ॥२॥

एत आनीतव आत्मा दुक्तं आरम्भपञ्चयात्तं ।

सत्त्वारम्भं पठित्वा तस्मात्तं अनारम्भे त्रिमुक्तिनो ॥२॥

उच्छिन्नभक्तपञ्चमं सन्तवित्तस्म भिन्नपुनो ।

वित्तिष्णो जातिरसति नित्यं तस्मै पुनर्भवेति ॥२॥

मिया अञ्जो नि कथं च मिया । यं किञ्चिदुक्तं सत् ॥१॥ सत्  
 सम्प्रदायि अर्थे नित्यतुल्या । एव सम्मा अथापर एतद्वच  
 सथा—

यं किञ्चिदुक्तं सत् ॥१॥ सत् आहारापञ्चयात्तं ।

आहारान् निरोधनं नित्यं दुक्त्वस्य सम्प्रदायः ॥२॥

मवराग परेतहि भवमानानुगारिहि ।

माग्धेयापुत्रहि<sup>१</sup> नाय धम्मो मुमम्बुधो<sup>२</sup> ॥४१॥

को नु अञ्जमग्गियहि पद मम्बुद्धमरहति ।

य एद मम्मदञ्जाय परिनिवति अनासवाणि ॥४२॥

इमयोच भगवा । अत्तमना तं भिक्खू भगवा भासित अभिादु । “मस्मि  
या एन वय्यावरणस्मि भञ्जमाने सद्विमत्ता भिक्खून् अपाणाय जासवहि  
चित्तानि विमुञ्चयूणि ।

द्वयतानुपसर्गाभ्युत्त निष्ठित ।

तस्मुदाग—

सच्च उपनि अविज्ज<sup>३</sup> उ सधारा<sup>४</sup> विज्जाणपज्जम । पम्सवन्तिपा तण्हा  
उपाणवारम्भा<sup>५</sup>आहारा । अज्जिने<sup>६</sup> पट्ठित इव सच्चदुक्खेन साळसाणि ॥

महाअण्णो ततियो ।

तस्मुदाग—

पणज्ज<sup>७</sup> व पवज्ज<sup>८</sup> । मुम

मुत्तरि (नया) ।

मागसुत्तं व मेवो मल्ल पत्रमने<sup>९</sup> । अतोत्तो नागि कोवालि १० को द्वयतानुपसर्गा ।

आग्धेयानि<sup>११</sup> मुत्ताणि महाअण्णोनि बुत्तनीनि ।

उपनिर्वाणं नान्तरिदानं एव मुनिः । यथाभूतं सम्मपञ्चाय मुनिः—अथ  
प्राप्तपञ्चायः । यं भिक्षवः सम्मपञ्चाय—१०—सम्पन्नानुष्ठापः—११—मुनिः उपनिर्वा  
णं नान्तरिदानं एव मुनिः । यथाभूतं सम्मपञ्चाय मुनिः—अथ पुनित्या  
पञ्चमः । एव सम्मपञ्चायः १० अन्तर्गतं एवम्पञ्चायः स्यात्—

अन्तर्गतं भिक्षवः परमं १० सम्पन्नानुष्ठापः ।

निर्वाणं सामन्तरिदानं इव सम्पन्नानुष्ठापः ॥ १॥

यत् यत् निम्नं सम्पन्नानुष्ठापः १॥ १॥ १॥ १॥

न हि नान्तरिदानं मुनिः १॥ १॥ १॥ १॥

अन्तर्गतं निम्नं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः १॥ १॥

न यं सम्पन्नानुष्ठापः निम्नं नान्तरिदानं १॥ १॥

निम्नं सम्पन्नानुष्ठापः निम्नं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः १॥ १॥ भिक्षवः  
पुनित्यापञ्चायः परमं निम्नं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः १॥ १॥ भिक्षवः  
१० सम्पन्नानुष्ठापः इव मुनिः उपनिर्वाणं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः  
दुष्पन्नानुष्ठापः यथाभूतं सम्मपञ्चाय मुनिः—अथ प्राप्तपञ्चायः । यं भिक्षवः  
सम्पन्नानुष्ठापः १० सम्पन्नानुष्ठापः इव मुनिः उपनिर्वाणं नान्तरिदानं  
एव मुनिः यथाभूतं सम्मपञ्चाय मुनिः—अथ पुनित्यापञ्चायः । एव सम्मपञ्चायः  
द्वयानुष्ठापः एव भिक्षवः भिक्षवः सम्पन्नानुष्ठापः आन्तरिदानं निम्नं निम्नं  
एव निम्नं सम्पन्नानुष्ठापः इव मुनिः उपनिर्वाणं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः  
एव निम्नं सम्पन्नानुष्ठापः इव मुनिः उपनिर्वाणं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः  
एव निम्नं सम्पन्नानुष्ठापः इव मुनिः उपनिर्वाणं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः

रूपा सहा रसा यथा यस्या धम्मा न चरन्ति ।

भूता यथा मनासा यं याजन्तस्वीतिं कुर्वन्ति ॥३॥

सम्पन्नानुष्ठापः १० सम्पन्नानुष्ठापः इव मुनिः उपनिर्वाणं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः

यत् यत् निम्नं सम्पन्नानुष्ठापः १॥ १॥ १॥ १॥

मुनिः उपनिर्वाणं नान्तरिदानं सम्पन्नानुष्ठापः १॥ १॥

पञ्चमीति इव होति सम्पन्नानुष्ठापः परमं ॥३॥

यं परं मुनिः जाह्नवं तन्निम्नं आह्नवं दुष्पन्नानुष्ठापः ।

यं परं तन्निम्नं जाह्नवं तन्निम्नं मुनिः ॥३॥

परं धम्मं दुष्पन्नानुष्ठापः सम्पन्नानुष्ठापः अविद्वन् ॥३॥

निम्नानुष्ठापः तमो होति अध्वर्यवो अध्वर्यवः ।

सन्तं च विद्वन् हाति जाह्नवं परमं इव ।

सन्ति न विजानन्ति मया धम्मस्मरणेति ॥४॥

कामसु गिद्धा पसुता पमूळहा, अवदा<sup>१</sup>निया ते विसम निविद्धा<sup>२</sup> ।  
 दुक्खूपनीता परिदेवयन्ति, किं सु मविस्साम इतो चुतामे ॥३॥  
 तस्मा हि मिक्खथ द्धेव जन्तु, य विज्जिं जज्जा विसमज्जति लोके ।  
 न तस्स हेतु विसम चरेय्य, अप्प हिद<sup>३</sup> जीवितमाहु धीरा ॥४॥  
 पस्सामि ओकं परिफन्दमान, पज इम तण्हागत<sup>४</sup> भवेसु ।  
 हीना नरा मच्चुमुखे लपन्ति, अवीततण्हामे<sup>५</sup> भवाभवेसु ॥५॥  
 ममायिते पस्मय फन्दमाने, मच्छज्जव अप्पोदकं पीणसोते ।  
 एतज्जि दिस्वा<sup>६</sup> अममो चरय्य, भवेसु आसत्तिमकुच्चमानो ॥६॥  
 उभोसु अन्नसु विनय्य छन्द, पस्म परिज्जाय<sup>७</sup> अनानुगिद्धो ।  
 पण्तगरही तदकुच्चमानो, न लिप्पती<sup>८</sup> दिट्ठसुतमु धीरो ॥७॥  
 मज्जा परिज्जा वितरेय्य ओघ, परिग्गहेसु मुनि नोपल्लिता ।  
 अज्जुद्धसन्ता<sup>९</sup> चरमप्पमतो, नासि<sup>१०</sup>सती लोकमिम पर चाति ॥८॥  
 गुहदृष्टकसुत्त निट्ठित्त ।

### ( ४१—दुष्टदृष्टक सुत ४।३ )

वन्ति व<sup>१</sup>दुष्टमनापि एक<sup>२</sup>, अथो<sup>३</sup>पि वे<sup>४</sup>सच्चमना वदति ।  
 वाद च जात मुनि ना उपेति, तस्मा मुनि नत्थि खिलो बुद्धिज्जि ॥१॥  
 सक् हि निहिं कथमच्चयेय्य, छत्ता<sup>५</sup>नुनीतो रुचिया निविद्धा ।  
 सयं समत्तानि पकुच्चमानो, यथा हि जानय्य तथा वजेय्य ॥२॥  
 या असत्ता सीत्तवत्तानि जन्तु अनानु<sup>६</sup>पुट्ठो च<sup>७</sup>परेस<sup>८</sup>पावा<sup>९</sup> ।  
 अनरियपम्म कुसला तमाहु यो आतुमान सयमेव पावा<sup>१०</sup> ॥३॥  
 सत्ता च भिक्खु अभिनिव्युत्ततो इतिज्जति सीत्तसु अवत्थमानो ।  
 तमरियपम्मं कुसला वदन्ति, यस्मुत्सदा नत्थि बुद्धिचि लोके ॥४॥

<sup>१</sup> M अप<sup>०</sup>      <sup>२</sup> M °वत्था, °वित्था      <sup>३</sup> C हि त, M हेत  
<sup>४</sup> C. तण्हागत      <sup>५</sup> M, M °सो      <sup>६</sup> M दिस्वान      <sup>७</sup> M  
 परिज्जा      <sup>८</sup> C लिप्पति      <sup>९</sup> C, M °ति      <sup>१०</sup> M चे      <sup>११</sup> C. एते  
<sup>१२</sup> N अज्जोपि      <sup>१३</sup> C चे      <sup>१४</sup> M छद्धानतोतो      <sup>१५</sup> M °पुट्ठो  
<sup>१६</sup> M नास्ति      <sup>१७</sup> M परस्स      <sup>१८</sup> M पाव

## ४—महकव्यम्

( १६—काम-सुत्त ४।१ )

कामं कामयमानस्म तस्मै चतुर्गमिन्नानि ।  
जडा पीतिमना नानि गच्छा मन्ता यन्त्रिण्यनि ॥१॥  
मग्ना च कामयमानस्म<sup>१</sup> छन्दानरम जगुः ।  
त कामा परिहायन्ति मन्त्रिडाव स्यात् ॥२॥  
या काम पश्यन्ति मयस्मै च न मिरा ।  
मा इमं<sup>२</sup> रिमतिव ताव सता ममतिवनि ॥३॥  
मत्त उच्यते रिज्ज वा मयस्मं<sup>३</sup> कामपाणि<sup>४</sup> ।  
यिया<sup>५</sup> उच्यते पुष्टु काम या नरा अनुगिज्जनि ॥४॥  
अत्रा<sup>६</sup> नं वरीयन्ति मन्त्रनं पश्यन्मया ।  
ततो न सुखमवेति ताव भिन्नमिवो<sup>७</sup> ॥५॥  
मग्ना जनु मन्ता सतो कामानि पश्यन्मया ।  
त पहाय तरे ओष नाव निज्जि<sup>८</sup> त्व पाम्मुनि ॥६॥  
कामसुत्त निदिदत ।

( ४०—गुह्यसुत्त ४।२ )

मनो गुहाय बहुनाभिछन्ना<sup>९</sup>, तिष्ठ नरा माहर्तास्म पगाउ<sup>१०</sup> ।  
दूरे विरक्ता हि तयाविधो सो कामा हि जीव न हि सुप्पहाया ॥१॥  
दृष्टानिन्ना भयसातयद्धा, ते दुप्पमुज्जा न हि अज्जमोत्ता ।  
पच्छा पुरे वापि अपक्क<sup>११</sup> माना इमे<sup>१२</sup> कामे पुरिमि<sup>१३</sup> जप्प<sup>१४</sup> ॥२॥

<sup>१</sup> R, N कामयानस्त <sup>२</sup> M, N सोय <sup>३</sup> M मयस्म  
<sup>४</sup> M दासपरिह <sup>५</sup> M सिरो <sup>६</sup> R अबलाज <sup>७</sup> M तिज्जित्वा M,  
N तिज्जित्वा <sup>८</sup> M छन्दो <sup>९</sup> C अपेक्ष <sup>१०</sup> M पत्राप नास्ति व

मय समान्य यत्नानि जन्तु, उच्छासं गच्छति मच्छासना ॥  
 विद्या च वदति ममेच्छ यम्म, न उच्छासं गच्छति वशिष्ठा ॥५॥  
 न सत्यधर्मे मुने निनिमिता, ये विद्विषन्ति ॥ १॥ मया मू. वा ।  
 नपक्वस्मि रिद्धि चरन्त, वाराय गच्छामि ॥ १॥  
 न वपयन्ति न पुष्पवगन्ति, अन्तागुह्या ॥ १॥ म म मदा ॥  
 आनन्दस्य सवित्र विमल, आनन्द कृत्वा ॥ १॥ ॥ ॥  
 मामानिना वाञ्छता मग्ग त्वि, अन्त्या ॥ १॥ रिक्ता ॥ १॥ मग्ग/॥ ॥  
 न गगन्ती न विद्यान्ता, तन्नाप ॥ १॥ मग्ग/॥ १॥ ॥॥

गुदगच्छन्तु निम्नम् ।



पाणिना<sup>१</sup> मगना मगम मगना मगना<sup>२</sup> सति<sup>३</sup> अत्रात्रात्रा<sup>४</sup> ।  
 र<sup>५</sup> नि<sup>६</sup> मगनि जाणिम ॥ निमिना पुनमिष्टिमा<sup>७</sup> ॥१॥  
 निमिना<sup>८</sup> र निमिना मगमु नि<sup>९</sup> म<sup>१०</sup> मगमुनि<sup>११</sup> ।  
 मगना रग रगु निमामु निममनि<sup>१२</sup> जाणि<sup>१३</sup> नि<sup>१४</sup> मगम ॥२॥  
 सनम नि<sup>१५</sup> नपि बुदिनि मग, पाणिना निदि मगम<sup>१६</sup> ।  
 मग र मग व मग मगना म न मगम अनुपमा गो<sup>१७</sup> ॥३॥  
 मगना नि मगमु उपाति मग अनुप<sup>१८</sup> मग र मग मगम ।  
 मग निम न नि मग अ प मगनि मग नि<sup>१९</sup> निमिप मगना<sup>२०</sup> नि ॥४॥  
 बुद्धिबुद्धिमुत्त निमिष्ठ ॥

### ( १२—सुद्धि सुत्त ४।४ )

परमाणि सुद्धि परम अरोगं निदुमे<sup>१</sup> मगुद्धि मगम मगि ।  
 एताभिजान<sup>२</sup> परमाणि जगता सुद्धानुपमा<sup>३</sup> नि<sup>४</sup> वरुनि जाय ॥१॥  
 निदु न र मुद्धि मगम मगि जाणत मग मगमनि मगम ।  
 अज्जेत मग मुज्जति मापधानो निदु<sup>५</sup> हि न पाय तथा मग ॥२॥  
 न मगना अज्जतो मुद्धिमाह निदु मुन मीवत<sup>६</sup> मुन मग ।  
 पुज्जे मग मग अनु<sup>७</sup> मगिता अता<sup>८</sup> मग न मगि<sup>९</sup> पुज्जमाना ॥३॥  
 पुरिम मगम मग मगिता<sup>१०</sup> मग मगानुगा त<sup>११</sup> र तरनि मग ।  
 त उपाणमनि निमिष्ठजनि<sup>१२</sup>, मगीव मग मगम<sup>१३</sup> मगम<sup>१४</sup> ॥४॥

<sup>१</sup> M °का    <sup>२</sup> M पुरे०    <sup>३</sup> M °सन्तिमवी°    <sup>४</sup> R °नी  
<sup>५</sup> M बुद्धि पटिच्छे सति    <sup>६</sup> M निदि°    <sup>७</sup> M निमिष्ठम्य    M  
 N निदस्सति    <sup>८</sup> M °ती च    <sup>९</sup> R ही    <sup>१०</sup> C N अनुपयो  
 अनुपयं    <sup>११</sup> M Fsb --सख्य    <sup>१२</sup> C दिदुतेन    <sup>१३</sup> M  
 N एवामि°    <sup>१४</sup> M नास्ति    <sup>१५</sup> M निदि    <sup>१६</sup> C सोलव्यते  
<sup>१७</sup> C, M अनु०    <sup>१८</sup> C अतजहो    <sup>१९</sup> M, Fsb --न इध  
<sup>२०</sup> M सिताय    <sup>२१</sup> M न त    <sup>२२</sup> M निस्सज्जति निस्सज्जति  
<sup>२३</sup> C मगुद्ध M मगुद्ध    <sup>२४</sup> C मगम

मय ममादाय ज्ञानि जन्तु, उच्चावच गच्छति गच्छसतो\* ।  
 विद्वा च वदति समेच्च धम्म, न उच्चावच गच्छति भूरिगच्छतो ॥५॥  
 स मत्तम्ममु\* विनिमूता, य विज्जि दिट्ठ न\* मुत्त मुत्त वा ।  
 नमन्तस्मि विमट चरन्त, वेनीघ लोकास्म\* विवणयय्य ॥६॥  
 न वणयन्ति न पुरस्सगति\*, अत्वनमुदीति\* न ते वदन्ति ।  
 आत्ताय यथित विसज्ज आस न बुद्धन्ति तुट्ठिचि गव ॥७॥  
 सोमनिगा गच्छणा तस्म उत्थि, आत्ता व\* दिस्वा व\* समुग्गहीत ।  
 न रात्तागो न विगग रत्तो, तस्मीघ\* उत्थि\* परमुग्गहीत ॥८॥

मुदट्टकमुत्त निट्ठित ।

( ४३—परमट्टक मुत्त ४।५ )

परमग्गि निट्ठितु\* परिट्ठमानो यत्तारि\* बुद्ध जन्तु आत्ता ।  
 हीनानि अज्जा तातो मत्तमाह, तस्मा विगदादि अरीयिवा ॥९॥  
 यत्ततो\* यस्मिन्ति जानिगग निट्ठे गुत्त गीय्यवा गुत्त वा ।  
 तत्तेव मा तत्थ समुग्गहाय निहीतो परमग्गि सम्यगग्ग\* ॥१०॥  
 त वापि मत्थ बुद्धा जन्ति य विरिगा\* परमग्गि ही गग्ग\* ।  
 तस्मा हि दिट्ठ व मुत्ता मुत्त वा, गीय्यवा भिक्खु\* विगयय्य ॥११॥  
 दिट्ठिज्जि लोकास्म\* न वणयय्य, आत्ता वा गीय्यवा वा ॥१२॥  
 मग्गोनि अत्तातमपूजय्य हीना न गग्गवा विगग्गि\* वा ॥१३॥  
 अत्ता पट्ठाव अत्तापान्तिवातो, आत्ता पि मा विगग्गि मा वत्ता ॥१४॥  
 म वे विवत्तग्गु\* न वग्गवारी निट्ठिज्जि मा म गग्गवा ॥१-व\* ॥१५॥

यस्तुभयन्ते<sup>१</sup> पणिधी<sup>२</sup> नचि भवामवाय इध वा हुर वा ।  
 निवसना तस्म<sup>३</sup> न मत्ति कचि धम्मगु नि<sup>४</sup>छय्य समुग्गहीता<sup>५</sup> ॥६॥  
 तस्सीध<sup>६</sup> ण्ढि<sup>७</sup> व<sup>८</sup> गुने मुने वा पण्णिना<sup>९</sup> तयि अणु<sup>१०</sup>रपि<sup>११</sup> सञ्जा<sup>१२</sup> ।  
 न आत्ताण ण्ढि<sup>१३</sup> मत्ता<sup>१४</sup>मान<sup>१५</sup>, रणीध<sup>१६</sup> लोअग्गि<sup>१७</sup> विअणयय्य ॥७॥  
 न वप्पयन्ति न पुण्यररोन्ति<sup>१८</sup>, धम्मा<sup>१९</sup>णि तग<sup>२०</sup> न पटिच्छितास<sup>२१</sup> ।  
 न आत्ताणो मा<sup>२२</sup>यना नय्यो पा<sup>२३</sup> गतो न पच्चति ता<sup>२४</sup> ॥८॥

परमउच्चसुत्त निदिठत्त ।

( ४४—जरा-सुत्त ४६ )

अणु वन जायि<sup>१</sup> २६, ओ<sup>२</sup> यत्तममना<sup>३</sup>पि मिद्वयि<sup>४</sup> ।  
 यो<sup>५</sup> च<sup>६</sup>पि<sup>७</sup> अतिच्च जीवन्ति अथ सो मो जरता<sup>८</sup> पि मिद्वयि<sup>९</sup> ॥१॥  
 गाचन्ति जना ममायिने न हि सन्ति निच्चा<sup>१०</sup> पग्गमहा ।  
 विताभावगल्लभवि<sup>११</sup> इति त्तिस्वा नागा<sup>१२</sup>रमाय<sup>१३</sup> ॥२॥  
 मरणन<sup>१४</sup>पि न प<sup>१५</sup>ययि<sup>१६</sup> य पुरिमा मय<sup>१७</sup> विद<sup>१८</sup>नि मञ्ज<sup>१९</sup>नि ।  
 एव<sup>२०</sup>पि वि<sup>२१</sup>त्तिस्वा पण्डितो न ममताय<sup>२२</sup> नमय<sup>२३</sup> मामरो ॥३॥  
 सुपिनन मया<sup>२४</sup>पि सगत<sup>२५</sup> प<sup>२६</sup>विबुद्धा पुरिमा न पस्सति ।  
 एव<sup>२७</sup>पि पियायि<sup>२८</sup> जने पंत वा<sup>२९</sup>यत्त न पस्सति ॥४॥  
 ण्ढि<sup>३०</sup>पि गुता<sup>३१</sup>पि त जना एम नाममि<sup>३२</sup> प<sup>३३</sup>वुच्चति ।  
 नाम एवावसिस्सति<sup>३४</sup> अकपय्य पेनस्स<sup>३५</sup> जन्तुना ॥५॥

<sup>१</sup> C यस्तुभन्त <sup>२</sup> M यस्त <sup>३</sup> M °हीत <sup>४</sup> M तत्तमयिध <sup>५</sup> M वा <sup>६</sup> M अणु <sup>७</sup> C आत्ताणा दिट्ठिमनारि याना C कोनाध <sup>८</sup> M Fsb -°स्मि <sup>९</sup> M पुरक्ख<sup>१०</sup> <sup>११</sup> M नास्ति <sup>१२</sup> C, Fsb, -यनिच्छित्तान्ते <sup>१३</sup> M न सो, सो <sup>१४</sup> C मे <sup>१५</sup> तथैव N M न हिमन्ति निच्चा, Fsb न हि सन्तानिच्चा

<sup>१६</sup> C M पहिद्वयि <sup>१७</sup> M ममय, ममाय मय <sup>१८</sup> M, N एत <sup>१९</sup> M Fsb पमताय <sup>२०</sup> M नमय <sup>२१</sup> M नगत <sup>२२</sup> C जरापित <sup>२३</sup> M नाम यदा°, एवावस्सयति, एव तावत्तिस्सति <sup>२४</sup> M एतस्स

साक्परिदेवमच्छर, न जहन्नि गिद्धा ममायिते ।  
 तस्मा मुनया परिगृह्य हित्वा अचरिषु<sup>१</sup> खमन्स्मिना ॥६॥  
 पत्तिलीनचरस्स<sup>२</sup> भिक्षुनो, भजमानस्स विवित्तमासन<sup>३</sup> ।  
 मामगियमाहु नस्म त यो<sup>४</sup> अत्तान भवन न दस्सथ ॥७॥  
 मव्यत्य मुनि<sup>५</sup> जनिस्सितो न पिय कुब्बनि नो पि जप्पिय ।  
 तस्म परिदघमच्छर पण्णे वारि यथा न लिप्पति<sup>६</sup> ॥८॥  
 उन्धदु यथाजपि पोत्तवरे, पदुमे वारि यथा न लिप्पति<sup>६</sup> ।  
 एव मुनि नोपलिप्पनि<sup>६</sup> यदिद दिट्ठसुत्त<sup>७</sup> मुत्तमु वा ॥९॥  
 धोता न हि तेन मज्जति, यदिद दिट्ठसुत्त मुत्तमु वा ।  
 न जज्जेन<sup>८</sup> विमुद्धिमिच्छति, न हि सो रज्जनि नो विरज्जति ॥१०॥  
 जरासुत्त निट्ठित ।

( ४५—तिस्समेत्तेय्य-सुत्त ४।७ )

मयुनमनुपुत्तस्स ( इच्छायम्मा तिस्रो<sup>१०</sup> मत्तय्यो ) विघात ब्रूहि भारित ।  
 सुत्वान तय सामन तिवज्ज सिक्खिम्मासाम<sup>११</sup> ॥१॥  
 मयुनमनुपुत्तस्स ( भेत्तय्याति भगवा ) मुत्तनवापि गामन ।  
 मिच्छा च पटिपज्जति एव तस्म अनारिय ॥२॥  
 एको पुब्ब चरितवान् मयुन यो निसेवति ।  
 यानं भन्त<sup>१२</sup> च ॥ एते हीनमाहु पुपुज्जन ॥३॥  
 यसो विनि<sup>१३</sup> न या पुब्ब हायनेज्जापि<sup>१४</sup> तस्स सा ।  
 एतज्जि त्तिवा मिकपथ मयुन विप्पहातन ॥४॥  
 मरुप्पेदि परेतो मा<sup>१५</sup> वण्णो विद्य शायनि ।  
 सुत्वा परेम निग्घोग मकु होनि नधाविषो ॥५॥

<sup>१</sup> M अचरिषु अचरियंषु अचरियिषु    <sup>२</sup> M पटि°    <sup>३</sup> M  
 विवित्तमानसं, C चित्तमानसं, N विवित्तमासन    <sup>४</sup> M सा  
<sup>५</sup> Fsb—मुनी    <sup>६</sup> M, N लिप्पनि    <sup>७</sup> M दिट्ठ    <sup>८</sup> M दिट्ठ°  
<sup>९</sup> M, Fsb—नाज्जेन    <sup>१०</sup> M तिस्रमेत्तेय्यो    <sup>११</sup> M, Fsb—सिक्खि  
 सामसे    <sup>१२</sup> C विनि Isb, N विन्ती    <sup>१३</sup> C हायने चापि  
<sup>१४</sup> Fsb यो

१५ तथानि पुरत परवान्ति गतिना ।  
 एव तस्मा भूतगता मोक्षत्रयं गमयति ॥२॥  
 पतिनो नि गमयन्ता १ एतस्मिन् गतिनो ।  
 अयापि मधुन कृता मन्त्रा परिक्लिप्ता ॥३॥  
 एतन्मन्त्रिनं ज्ञाया मुनि पुष्पापर म्थे ।  
 एतस्मिन् नृप वदित २ त निवच मथनं ॥८॥  
 त्विन यत्र गिराय एतस्मिन् यानमुत्तम ।  
 तन ३ शब्दा न ४ मञ्जरीय त ५ त्रिशतगन्धिर ॥९॥  
 त्रिस्त ६ मनिनो वरतो नामनु जायति ७ ।  
 आपनिष्कम्भ विहयन्ति वामसु गविता ८ तानि ॥१०॥

निस्तप्तस्यमुत्त निष्ठितं ।

( ४६—पमूर सुत्त ४।८ )

मधुन मुद्धि १ त्रि वादियन्ति २ भाञ्जसु ३ धम्मेसु विमुद्धिमाट् ।  
 म निस्सिता तत्त सुम ४ वाना पञ्चनग चमु पुपू निविट्ठा ॥१॥  
 त भाञ्जामा परिम विगम्भ ना दहन्ति ५ मिथु अञ्जमञ्ज ।  
 वन्ति ६ त अञ्जसिता वथोज पमसत्तामा कुमला वाना ॥२॥  
 मुत्ता वयाप ७ परिगाय मज्ज पमसमिच्छ विनिपाति ८ त्रि ।  
 अपाहन्तिस्म पन मट्ट होनि, निगाय सो कुण्णि रपमयी ॥ ॥  
 यमस्स वादं परिहीनमाहु अपाहत् पञ्चवामसत्ताम ९ ।  
 परिववति १० सावनि हीनयाणे उपच्चवा मन्ति अनुत्थुमानि ११ ॥४॥

१ M पसञ्जातो २ M वदिताय, वरिषाय ३ M एकवरिया  
 ४ मुत्तम ५ M न तेन सेट्ठो ६ C त्रिस्त ७ M गधिता  
 ८ Fsb C मुद्धि (इ० ४९२a) M वादयति ९ M मञ्जरीसु  
 १० N सुमा ११ M हस्ति १२ M, N वदति १३ C ०म  
 १४ M Fsb C पञ्चवि C Fsb ०तकाय १५ Fsb ०ती  
 १६ C M Fsb ०नाति

एते विद्यायां भगवन्तु नाना, एतमु उग्राणि<sup>१</sup> निघानि<sup>२</sup> हानि ।  
 एत वि<sup>३</sup> त्स्वा विरमे वयोज्ज, न हृज्जदत्थत्य पससत्तामा ॥५॥  
 पसमितो वा पन तस्य होनि, अक्याय वाद परिभाय मज्ज ।  
 गो ह्मसति<sup>४</sup> उण्णमनिच्च<sup>५</sup> तेन पणुय्य त<sup>६</sup> मत्थ<sup>७</sup> यधामना अटु<sup>८</sup> ॥६॥  
 या उण्णनि माज्जस<sup>९</sup> विघानभूमि मागानिमान वदन पनेमो ।  
 एतवि त्स्वा न विवात्येष, न हि तन मुट्ठि<sup>१०</sup> बुसला वन्ति ॥७॥  
 मूरा यथा राजस्तान्य पुटठा<sup>११</sup>, जमिगजामति पटिमूरमिच्छ ।  
 यनत्र मा तन पत्तेहि<sup>१२</sup> मूर<sup>१३</sup> पुज्जज्व नत्थि यदिश् युधाय ॥८॥  
 ये त्ठिमुग्याय विद्यान्यिनि<sup>१४</sup> इन्मव सच्च<sup>१५</sup> नि च वादियन्ति ।  
 त य घन्मु<sup>१६</sup> न हि ते<sup>१७</sup> जत्थि वान्हि जात पटिमनिक्ता ॥९॥  
 विगेनिरत्ता पन ये चरन्ति<sup>१८</sup> त्ठिजीहि दिट्ठि अवित्त्यमाना ।  
 तमुत्त कि<sup>१९</sup> लभ्यो<sup>२०</sup> पमूर<sup>२१</sup>, यमीध नथि<sup>२२</sup> परमु<sup>२३</sup> गहीत ॥१०॥  
 अथ न पवित<sup>२४</sup> तन्मागमा मनसा त्ठिगितानि चिन्तयन्ता ।  
 धोन्न युग ममागमा, न त्ति त्ति मग्घसि<sup>२५</sup> मपयातवे नि ॥११॥

पसुरसुत निटिठत ।

### ( ४७—मागन्धिय सुत ४।६ )

त्स्वान् तत्त अरति<sup>१</sup> त्ता च नाहासि छत्ता अपि मधुनास्म ।  
 किमरिद सुतवरीसपुण्ण पादाऽपि न मपुसिनु न च्छ ॥१॥  
 एतादिस चे रता न इच्छसि, नारि त्रिहि त्ठि पथित ।  
 त्ठिगन<sup>२</sup> सीत्तवतानुजीवितं भवुपपत्ति च वन्ति वादिम ॥२॥

१ M °टि २ C एव ३ Fsb °ती, M हसति ४ M  
 °ती च, ५ Fsb त अत्थं M तमत्थ ६ R °ह ७ Fsb °ती  
 ८ M सास, तस्य ९ M मुट्ठि १० M पुट्ठो ११ M पलेति  
 १२ M मूर, पुर १३ M विधादयन्ति १४ M वरत्सु १५ M °च  
 १६ M यवति १७ M विर १८ M लभ्ये १९ M समुद् २० Fsb  
 नत्थी २१ M परम २२ M सवितर २३ C पग्घसि M  
 अग्घमि, N सग्घसि २४ M अरति च रागं, N अरति च राग  
 २५ Fsb दिट्ठो



यहि विवित्तो विचरेय्य लाजे, न तानि उगम्ह वयेय्य नागो ।  
एब्बुज पट्ट<sup>१</sup> बारिज यया, जलेन पनेन चानूपलित ।  
एव मुनी सन्तिवान्ने अगिद्धो, कामे च ओव च अनूपलितो ॥११॥  
न वेण्णू निट्ठिया<sup>२</sup> न भुतिया, स मानमनि न हि तम्मयो सा ।  
न यम्मना नौज्जि सुत्तन नेय्या, अनूपनीतो सो निवेसतगु ॥१२॥  
सज्जाविरत्तस्स न सन्ति गथा, पज्जाविमुत्तस्स न सन्ति मोहा ।  
सज्ज च निट्ठि च ये अगट्ठगु त घट्टयन्ता<sup>३</sup> विचरन्ति लोके ॥१३॥  
भागद्वियमुत्त निट्ठिन ।

( ४८—पुराभेद-सुत्त ४।१० )

कथदस्मी कथमीतो उपसन्तांति बुञ्चति ।  
त मे मोनम पत्रूहि पुञ्छिता उन्नम नर ॥१॥  
धीततण्हो पुरा भेण (जति भगवा) पुत्रमन्तमनिस्सितो  
धेमज्जे नूप<sup>४</sup> सवय्यो तस्म नत्थि पुरेक्कन<sup>५</sup> ॥२॥  
अक्कोधनी अमन्तामी अविवत्थी अपुक्कुचो<sup>६</sup> ।  
मन्नभाणी अनुद्धतो म वे वाचायता मुनि ॥३॥  
निगसत्ति<sup>७</sup> अनागते असीत नासोचनि ।  
विवेक्कस्सी फस्सेमु निट्ठीमु च न निव्वन्ति ॥४॥  
पनि नीनो अपुट्ठको अपिहानु अमञ्जरी ।  
अप्पगम्भो अज्जेगुच्छो पेसुण्ये च नो युता<sup>८</sup> ॥५॥  
सात्थियमु अनस्मावी अनिमाने च नो युता ।  
सण्हो च पटिमानवा न सद्धो न विरज्जति ॥६॥  
लाभवम्म्या<sup>९</sup> न सिक्खसति अग्गम न च<sup>१०</sup> कुप्पनि ।  
अविरुद्धो च तण्णाय रस<sup>११</sup> च<sup>१२</sup> नानुगिज्जाति ॥७॥  
उपक्कवो<sup>१३</sup> सत्ता सतो न गग मज्जने मम ।  
न विमयी न नीचेय्यो तस्म न सन्ति उस्सन् ॥८॥

<sup>१</sup> M कण्डक <sup>२</sup> M दिट्ठियाको, M, B दिट्ठिपायको <sup>३</sup> M  
घट्टमाना घरमाना <sup>४</sup> M नूप<sup>०</sup>, न प <sup>५</sup> M पुरेक्कत <sup>६</sup> M °च्चो  
<sup>७</sup> C, M °सत्ति Bsb °त्ती - M पटि° <sup>८</sup> M युतो <sup>९</sup> M  
लोभ°, °क्कप्पा <sup>१०</sup> M च न <sup>११</sup> M, B रसेसु <sup>१२</sup> R उपेक्कको



यथा विद्यायाः तानि तानि धर्मं विनिश्चिताः ।  
 भवाथ विमलाय सा तानि योगा न विनाति ॥१०॥  
 न तून्मि उपमन्ताः तानि तानि धर्मं विनिश्चिताः ।  
 गथा तन्मि न विनिश्चिताः ज्ञानिः सा विनिश्चिता ॥ १० ॥  
 न तन्मि पुता पाता साः गथा वान् न विनिश्चिताः ।  
 ज्ञानं वाञ्छति विद्याः सा न तानि उपमन्ति ॥११॥  
 यत्नं न वान् न तानि तानि तानि गमनायाः ।  
 न तन्मि ज्ञानं तानि तानि तानि तानि ॥१२॥  
 योनिगणो ज्ञानं तानि तानि तानि तानि ।  
 न तानि तानि तानि तानि तानि तानि ॥१३॥  
 गता गता गता गता गता गता गता ।  
 तानि तानि तानि तानि तानि तानि ॥ १४ ॥  
 पुराभद्रमुत्त निश्चितं ।

( ४८—कलहनिपाय सूक्त ४।११ )

पूना पूना वृत्त विराज्य परिभ्रमारा सह मञ्जरा ॥  
मानानिमाना सह पमुणा ॥ तुतो पूना ते तन्निद्रप वृष्टि ॥१॥  
रियः पूना<sup>१२</sup> वृत्त विराज्य, परिभ्रमारा सह मञ्जरा ॥  
मानानिमाना सह पमुणा ॥ मन्त्रिगयत्ता वृत्त विराज्य ॥  
विराज्यत्रासु ॥ पमुणानि ॥२॥  
विना मु तारस्मि कृतानिना ॥ य नापि जामा विचरन्ति शेर ॥  
जामा च निद्रा ॥ कृतानिना ॥ य मयरायाय नरस्य होनि ॥ ॥  
जामेनिनानि विमानि ॥ ते, य नापि जामा विचरन्ति शेर ॥  
जामा च निद्रा ॥ कृतानिना ॥ य मयरायाय नरस्य होनि ॥ ॥

\* M, B निम्नतया    \* M अनुपेक्ष्यत    तनुपेक्षत    अनुपेक्षितं  
 \* M अनरि, अतरी    \* M, Γsb -रय-यो    \* M वतयु च, C  
 नास्ति न    \* M अत्ता अत्व    \* M निरत्य    M उपनिवति  
 \* C, B व M, N Γsb नास्ति    \* M, N वज्रं    \* M  
 पुअर°    \* M पिप्यप्यहता

छन्दो नु त्रीर्ऋषिं ब्रुतोनिदानो, विनिच्छया वाऽपि ब्रुता पठता ।  
 ऋषो मांसज्ज च वयवथा न, ये वापि धम्मा समणेन वत्ता ॥५॥  
 सात असात<sup>१</sup>ति यमाहु लोके, तमूपनिस्साय पहाति छन्दा ।  
 एष मुदिस्सा विभव भव च विनिच्छय पुप्फे जन्तु लोके ॥६॥  
 रोषो भोगवजा च वधकथा च एतेऽपि धम्मा द्वयमेव सन्त ।  
 वयवथी आणपयाय सिकये, जत्वा पवुत्ता समणेन धम्मा ॥७॥  
 सात असात च कुतादिदाना, विंस्मि असन्ते न भवन्ति हेत ।  
 विभव भव चापि यमतमत्यं, एत म पबूहि यतोदिदान ॥८॥  
 फस्मनिगान<sup>२</sup> सातमसान, फम्मा असन्ते न भवन्ति हेते ।  
 विभव भव चापि यमोमत्यं, एत ते पबूहि इतोनिगान ॥९॥  
 फम्पो नु त्रीर्ऋषिं ब्रुतोनिदाना परिगग्रा चापि<sup>३</sup> ब्रुतो पठता ।  
 विंस्मि असन्त न भवन्तिमत्यं, विंस्मि विभूत न फुसन्ति पस्सा ॥१०॥  
 नाम च एष च पटिच्च फस्सा इच्छानिगानानि परिगगानि ।  
 इच्छा<sup>४</sup> न सन्त्या<sup>५</sup>न ममत्तमत्यं एष विभूते न फुमन्ति पस्सा ॥११॥  
 वय समतस्स विभोति एष, मुख दुग वाऽपि वय विभोति ।  
 एत मे ब्रूहि यथा विभोति, त जानियाम<sup>६</sup> इति मे मनो जहु ॥१२॥  
 न सज्जसज्जी न विसज्जसज्जी, नापि असज्जी न विभूतसज्जी ।  
 एव समेतस्स विभाति एष, सज्जानिदाना हि पपञ्चसखा ॥१३॥  
 य ए अपुच्छिम्ह<sup>७</sup> अवित्तयी ना अज्ज त पुच्छाम तन्दिध ब्रूहि ।  
 एतायतग ना उदन्ति हेते, यवत्तस्स सुत्ति इध पण्डितान ।  
 उदाहु अज्ज पि वदन्ति एता ॥१४॥  
 एतायतग पि वदन्ति हेते, यत्तस्स सुद्धि इध पण्डितान ।  
 तेस पुनेवे समय वदन्ति, अनुपात्तिमे कुमरा यत्तान ॥१५॥  
 एते च ज्ञावा उपनिस्मितानि जत्वा मुनी<sup>८</sup> निस्सय सा वियमी ।  
 जत्वा तिमत्तो न विवात्तमि भवामवाय न समन्ति धीगेज्जि ॥१६॥

बृहद्विवादसुत निदिष्ठत ।

<sup>१</sup> N फस्स निदान

<sup>२</sup> वाऽपि

<sup>३-४</sup> M, N इच्छायसत्त्या

<sup>५</sup> M जानिस्साम

<sup>६</sup> M अकित्तिय

<sup>७</sup> M मुनि

## ( ५०—सूत्रविशेष-मुक्त २।१० )

यत्तु न हि विद्वान्निष्कृतम्, विद्वान् नाना कुमारा यन्ति ।  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥३॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥४॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥५॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥६॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥७॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥८॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥९॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१०॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥११॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१२॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१३॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१४॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१५॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१६॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१७॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१८॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥१९॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२०॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२१॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२२॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२३॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२४॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२५॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२६॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२७॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२८॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥२९॥  
 यत्तु नाना विद्वान् नाना कुमारा यन्ति । ॥३०॥

१ M जे

२ N मको

३ M धीवद्वाना

४ Fsb दिवडी

५ R बाहमेत

६ विषादयति

७ R गु तानि

८ N एतेषु

९ N पदसमानो

१० N अक्षुसलो

११ N तदेव पायव

१२ N

अतिसार विद्वया

१३ N मुहो

अञ्ज इतो याभिबदन्ति धम्म, अपरद्धा सुद्धिमकेवलीनो<sup>१</sup> ।  
 एव हि तिथ्या पुयुसो वदन्ति, सदिट्ठि रागेन हि तेऽभिरत्ता<sup>२</sup> ॥१४॥  
 इषव सुद्धि इति वादियन्ति<sup>३</sup>, नाञ्जोसु धम्मोसु विमुद्धिमाहु ।  
 एवऽपि तिथ्या पुयुसो निविट्ठा, सकायने तत्थ दळ्ह वदाना ॥१५॥  
 सकायने चापि दळ्ह वदानो, वमेत्थ<sup>४</sup> बालोऽति पर दहेय्य ।  
 समयेव<sup>५</sup> सो मेघव<sup>६</sup> आवहेय्य, पर वद बालमसुद्धधम्म<sup>७</sup> ॥१६॥  
 विनिच्छय ठत्वा सय पमाय, उद्ध सो लोक्खिं विवादमेति ।  
 हितवान सम्मानि विनिच्छयानि, न मेघक कुत्ते<sup>८</sup> जतु लोके ति ॥१७॥  
 चूळविपूहसुत्त\* निट्ठित ।

### ( ४१—महाविपूह-सुत्त ४।१३ )

ये कच्चिमे दिट्ठिपरिब्वसाना, इदमेव सच्च ति विवादियन्ति ।  
 सम्बेऽय ते निन्दमवानयन्ति अथो पसंस<sup>१</sup>पि लभन्ति तत्थ ॥१॥  
 अप्प हि एत न अल समाय, दुवे विवादस्स फलानि वूमि ।  
 एव पि दिस्वा न विवादियेय<sup>२</sup>, खेमाभिपस्स अविवादभूमि ॥२॥  
 या काचिस्मा सम्मुतियो पुयुग्गा, सम्बाऽव एता न उपेति विट्ठा ।  
 अनूपयो सो उपय किमेय्य, ण्ढि सुते खन्तिमकुब्बमानो ॥३॥  
 सीलुत्तमा नयमनाहु सुद्धिं, वत समादाय उपट्ठितास ।  
 इधेव सिक्खेम अयस्स सुद्धिं, भवूपनीता कुसला वदाना ॥४॥  
 स वे च्चुतो सीलवतातो<sup>५</sup> होति, स<sup>६</sup> वेधति वम्म विरापयित्वा ।  
 स जप्पति पत्थयतीय<sup>७</sup> सुद्धिं, सत्थाऽव<sup>८</sup> हीनो पवस घरम्हा ॥५॥  
 सीलव्वतं वाऽपि पहाय सम्ब, वम्म च सावज्जनवज्जमेनं ।  
 सुद्धिं असुद्धिंऽति अपत्थयानो, विरतो चरे सन्तिमनुग्गहाय ॥६॥  
 तपूपनिस्साय<sup>९</sup> जिगुच्छिन्न वा, अय वाऽपि दिट्ठऽव सुत्त भुत्तं वा ।  
 उद्धसरा सुद्धमनुत्पुनन्ति, अवीततण्हासे भवाभवेसु ॥७॥

<sup>१</sup> N सुद्धिमकेवली ते

<sup>२</sup> N त्थाभिरत्ता

<sup>३</sup> N वादयन्ति

<sup>४</sup> N कं तत्थ

<sup>५</sup> N समयऽव सो मे घव

<sup>६</sup> R. बालमसुद्धि धम्मं

<sup>७</sup> N न मेघपं कुम्बति \* M चूळविपूहसुत्त

<sup>८</sup> एत पि दिस्वा न विवादियेय

<sup>९</sup> N सीलवत्ततो

<sup>१०</sup> M पवेदति, N पवेधति

<sup>११</sup> N पजप्पति

पत्थपनिच्च

<sup>१२</sup> M सत्था विहीनो

<sup>१३</sup> M तपूपनिस्साय

पथयमानस्म हि जप्तिनानि, मरेन्ति चापि<sup>१</sup> परमिनमु ।  
 चतुःपाना इष यस्म नचि स वन वधय्य बुद्धि चि<sup>२</sup> अण ॥८॥  
 यमाहु धम्म परमनि एव तमेव हीनानि वनाहु अञ्ज ।  
 गन्धा नु यादो वनमो इमेग सन्धव हीम कुसला वदाना ॥९॥  
 सव हि धम्म परिपुण्णमाहु अञ्जस्म धम्म पा हीनमाहु ।  
 एवऽपि तिमग्गह विवात्थिनि<sup>३</sup> , सारमव सम्मुनिमाहु गन्ध ॥१०॥  
 परस्म च वधयितेन हीनो न बोचि धम्मेमु विगति अस्त ।  
 पुयू हि अञ्जस्म वन्ति धम्म निहीनतो सन्धि दट्टह यन्ना ॥११॥  
 सद्धम्मपूजा<sup>४</sup> च पना तथव यथा पससन्ति शरायनानि ।  
 मव्य पक्काना तथिवा भवय्यु मुद्धि हि तम पन्चनमेव ॥१२॥  
 न ब्राह्मणस्म परनय्यमचि, धम्मेमु निच्छय्य समुगहीत ।  
 तस्मा विधानाणि उपातिवत्तो न हि मेदु सो पस्मनि धम्ममञ्ज ॥१३॥  
 जानामि पस्मानि तथव एत, निट्ठिया एव पन्चन्ति मुद्धि ।  
 अहविण्य चे कि हि तुमस्स सो अनिमिवा जञ्जेन वन्ति मुद्धि ॥१४॥  
 परस्म नरो दनिलति नामरूप निम्बान वा आस्मनि<sup>५</sup> तानिमय ।  
 काम बहु परसु अप्पक वा, न हि तेन मुद्धि कुसला वन्ति ॥ १५॥  
 निविस्सवाणे न हि मुद्धिनाया<sup>६</sup> पक्कपित<sup>७</sup> निट्ठि पुरेक्कपत्तना ।  
 य निस्सिगो तत्त्व मुम वदानो मुद्धिवलो तत्त्व तथहमा सो ॥१६॥  
 न ब्राह्मणा वणमुपेति सख न हि दिट्ठिमारी नपि जाणवधु ।  
 आत्वा च सो सम्मुनियो पुयुग्गा उपववन्ति उग्गहणन्तमञ्जे<sup>८</sup> ॥१७॥  
 विसग्ग गच्छाणि मुनाध लोक विवादवानेसु न वग्गसारी ।  
 सन्तो असन्तमु उपेक्खको सो, अनुगहो उग्गहणन्त<sup>९</sup> मञ्जे ॥१८॥  
 पुत्वासव हित्वा नव अकुव न छन्दयू नोऽपि निविस्सवादो ।  
 स विप्पमत्तो निट्ठिगतहि धीरो न लिप्पति<sup>१०</sup> लोक अनत्तगरही<sup>११</sup> ॥१९॥

<sup>१</sup> N ववेधित वाचि<sup>२</sup> R कुहि च<sup>३</sup> N विवादयन्ति<sup>४</sup> C सधम्मपूजा<sup>५</sup> N आयति<sup>६</sup> M, N मुञ्चिनाया B

मुञ्चिनयो

<sup>७</sup> N पक्कपिता दिट्ठि

N मुद्धिवदो

<sup>८</sup> उग्गहणन्ति

मञ्जे

<sup>९</sup> M उग्गहणन्तिमञ्जे<sup>१०</sup> N लिप्पति<sup>११</sup> N

अनत्तगरही

स सवधम्मेषु विनेनिमूनो, य वि चि दिट्ठ व सुत मुत वा ।  
 स पभभारो मुनि विप्पयुत्तो<sup>१</sup> ,  
 न वणियो नूपरतो न पत्तियोज्झति (भगवाज्झति) ॥२०॥  
 महावियूहसुत्त<sup>२</sup> निट्ठत्त ।

( ४२—शुवट्टम-सुत ४।१४ )

पुच्छामि स आदिच्चवधु विवेक सन्निपद च महेहि<sup>३</sup> ।  
 कथं दिस्वा निब्बानि भिक्खु अनुपादियानो लोकास्मि किञ्चि ॥१॥  
 भूल पपञ्चसत्ताया (ति भगवा), मन्ना अरमीनि सव्वमुपर<sup>४</sup> ।  
 या काञ्चि तण्हा अज्झत्त । तास विनया सत्ता सत्तो सिक्ख ॥२॥  
 य किञ्चि धम्ममभिजज्झा अज्झत्त अय वाज्झि वहिद्धा ।  
 न तेन मान<sup>५</sup> बुद्धय, न हि सा निब्बुत्ति सत वुत्ता ॥३॥<sup>६</sup>  
 मय्यो न तेन मज्झम्य, नीचेय्या अय वाज्झि सरिक्खो ।  
 पुट्ठो<sup>७</sup> अनेकरूपेहि, नातुमान विक्खय तिट्ठे ॥४॥  
 अज्झत्तमव उपसम, नाज्झानो भिक्खु सन्तिमेसम्य ।  
 अज्झत्त उपसलस्म, नरिय अत्त<sup>८</sup> कुनो निरत्त<sup>९</sup> वा ॥५॥  
 मज्जे यया समुद्दस्म, ऊमि नो जायति ठितो हाति ।  
 एव ठितो अनज्जस्स, उस्सद भिक्खु न वरेय्य कुहि चि ॥६॥  
 अकित्तयि विवट्ठकसु, सक्खिधम्म परिस्सयवितय ।  
 पटिपद धदेहि भद्दे, पातिमोक्ख अय वाज्झि समाधि ॥७॥  
 चक्खूहि नेव लोलस्स गामकयाय जावरय सोत ।  
 रम च तानुगिज्झम्य, न च ममायध किञ्चि ओक्खि ॥८॥  
 फस्सेन यदा पुट्ठस्स, परिदेव भिक्खु न वरेय्य कुहि चि ।  
 भव च नाभिजप्पेय्य भेरवेसु च न सपवेधेय्य ॥९॥  
 अन्नानमयो पानान खादनीयानमथापि वर्यान ।  
 रुद्धा न सनिधि वयिरा न च परित्तमे तानि अज्झमानो ॥१०॥

<sup>१</sup> N विप्पमुत्ता      <sup>२</sup> M महायूह<sup>०</sup>      <sup>३</sup> N महेत्ती      <sup>४</sup> M  
<sup>०</sup> पट्ठे      <sup>५</sup> N पामं      <sup>६</sup> C पुट्ठो      <sup>७</sup> N अत्ता      N  
 गिरत्ता

शायं न पादलोऽयम् , विरमे कुशुब्धः<sup>१</sup> नृणामञ्जये ।  
 यत् आगोमु सयनमु , अणसद्गु भिक्षु विहरस्य ॥११॥  
 तद् न बटुतास्य<sup>२</sup> , जागरियं भ्रमस्य आतापी ।  
 तन् मायं हरस्य गिरि , मेयुः विण्महं सविभूतं ॥१२॥  
 आयञ्चनं मुनिन एतत्तं , नो विहं अया वि तत्तत्तं ।  
 विरत<sup>३</sup> च गम्भारणं तित्तिच्छं मायता त सवस्य ॥१३॥  
 निनाय तणवधस्य त उलामस्य सममिनो भिक्षुः ।  
 लाभ सह मच्छरिया , कोष पनुनियं त पनुदस्य ॥१४॥  
 कय विरतयं त तिट्ठस्य , उतरार भिक्षु त करस्य मुहिं ति ।  
 गामे च नाभिमज्जस्य , लाभस्यया जा न एतरेस्य ॥१५॥  
 न च वसियता तिया भिक्षु , न च धानं पयुत्तं<sup>४</sup> मानस्य ।  
 पागम्भियं त मित्थेस्य कथं विणाहिं न वयवेस्य ॥१६॥  
 मोमवन्ने त निम्मेय , मयत्तानो सत्तति त वयिरा ।  
 अय जावितेन पञ्जाय , ताण्यत्तान माञ्जममिमञ्जे ॥१७॥  
 मुवा रमितो<sup>५</sup> बटुं याच , गमणानं पुपुञ्चनानं ।  
 पट्टमन ते म पतिवज्जा , न हि सन्नो पट्टिमिनागतं<sup>६</sup> ॥१८॥  
 एत च धम्ममञ्जाय विरिनं भिक्षु गन्ता साा सिक्खे ।  
 सन्तावि निनुतिं आत्वा , सागने गेतमसस नयमञ्जस्य ॥१९॥  
 अभिभू हि गो अनभिभूतो , सक्किवधम्मं अनीतिहमन्सी<sup>७</sup> ।  
 तस्मा हि तस्स भगवतो  
 सात्तने अप्पमत्ता गन्ता नमस्समनु मिकनेइति ( भयवा नि ) ॥२०॥

तुवट्टसुत्तं निदिट्ठतं ।

( ५३—अस्तदण्ड सुत्त ४।१५ )

अस्तदण्डा भय जाति जन पम्माय मेघक ।

सवंग वित्तविसमाप्ति यथा सविजिनं<sup>८</sup> यथा ॥१॥

<sup>१</sup> C कुशकुब्ज

<sup>२</sup> M बटुल न करेय्य

<sup>३</sup> N विषदं

<sup>४</sup> M पयुत्त

<sup>५</sup> N इतितो बटुवाच

<sup>६</sup> N पट्टिसेति०

<sup>७</sup> N<sup>०</sup>

महसि

<sup>८</sup> N M मेघप

<sup>९</sup> C मविदित

पदमां पजं दिस्वा मच्छे अप्पोदने यया ।  
 अञ्जामञ्जोहि व्याकृते दिस्वा म भयगाविसि ॥२॥  
 समतमसरो<sup>१</sup> स्रोतो दिसा सत्रा मनेरिता ।  
 इच्छ भवनमरानो नादसामि<sup>२</sup> अनासित ॥३॥  
 आगाने त्वेय व्याकृते दिस्वा मे अग्नि अहु ।  
 अयेत्य सल्लमद्विग्य दुदमं हृदयनिस्सित<sup>३</sup> ॥४॥  
 यन सल्लेण ओनिण्णो दिसा सत्ता विघायणि ।  
 तमेव मल्लं अभ्युह न पावति तिसीणि<sup>४</sup> ॥५॥  
 तत्थ मिक्खानुगीयन्ति (यानि लोके गयितानि) न तेमु पमुतो मिया ।  
 निग्गिज्ज सत्तसो वामे सिक्खे निग्गणमत्तनो ॥६॥  
 मच्चो सिया अणगम्भो अमायो रित्तपेसुणो ।  
 अवरोधनो एमपाप वेविच्छ वितरे मुनि ॥७॥  
 निह तन्दि सह धोन पमादेन न सयसे ।  
 अनिमान न तिद्वेस्य निग्गणमनसा नरो ॥८॥  
 मोमवज्जे न निय्यथ रूपे स्नेह न कुब्बये ।  
 मान च परिजानेय्य साहसा विरतो चरे ॥९॥  
 पुराण नाभिनदय्य नवे सन्ति<sup>५</sup> न कुब्बये ।  
 हीयमाने<sup>६</sup> न सोचेय्य आचम न सितो सिया ॥१०॥  
 गेध भूमि महोपो ति आजव<sup>७</sup> भूमि जप्पन ।  
 आरम्मण पक्कप्पन कामपेको दुरच्चयो ॥११॥  
 सक्खा अवोक्कम्म मुनि थले तिद्वति ब्राह्मणो ।  
 मच्च सो पटिनिस्मज्ज स वे<sup>८</sup> सल्लो ति कुच्चनि ॥१२॥  
 स वे<sup>८</sup> विद्धा स वेग्गु ज्जत्वा धम्म अनिमित्तो ।  
 सम्मा सा लोके इरियानो न पिहेतीष कम्पसि ॥१३॥  
 योच्च वामे अच्चतरि सय लोके दुरच्चय ।  
 न सो सोचति नाज्जति छित्तसोतो अवघनो ॥१४॥  
 य पुब्बे त विसोसेहि पुच्छ ते माज्झ विज्जन ।  
 मज्जे व<sup>८</sup> नो गहेस्ससि उपसन्तो परिस्ससि ॥१५॥

<sup>१</sup> N, M समतमसरो      <sup>२</sup> N नादसामि      <sup>३</sup> N हृदय सित  
<sup>४</sup> N न सीदति      <sup>५</sup> N क्षतिमहुब्बये      <sup>६</sup> N हिम्पमाने  
<sup>७</sup> N आचम      <sup>८</sup> N अवोक्कम      <sup>८</sup> N वे



गच्छता तामस्यामि यम्य नचि ममायितं ।  
 अमता च त माचरि म व<sup>१</sup> ता<sup>२</sup> न त्रिप्यति ॥१६॥  
 यम्य नचि<sup>३</sup> मनि परमं वा रि विष्णु<sup>४</sup> ।  
 यमत्त मा अगशिद तस्य मनि न माचरि ॥१७॥  
 अनित्यो तानुविदो अत्रो मन्त्रपीनमा ।  
 तमादिमम वद्रूमि पुष्टिता अरिरामिन ॥१८॥  
 अत्रम त्रिज्ञानो तस्य वाचि निमगिरि ।  
 विरता मो विपारभा गम पस्तानि मन्त्रपा ॥१९॥  
 न मममु न ओमेमु त उत्तमु व<sup>५</sup> मुनि ।  
 तानो सो वीनमच्छरा नादनि त निरम्भतीनि (भगवानि) ॥२०॥  
 अतवण्डमुत्तं निरिच्छन ।

### ( ५४—सारिपुत्त-मुत्तं ४१६ )

न मे विद्वो इतो पुत्रे (इच्छावम्मा सारिपुत्तो) तम्भुतो<sup>१</sup> उ<sup>२</sup> मस्तानि ।  
 एव वग्गुवन्तो साया तुमिनो मणिमागतो ॥१॥  
 सत्थेयसस्य लोवस्त मया त्तिस्मिन्ति वरगुमा ।  
 तस्य तमं वितो<sup>३</sup>बा एतो वग्गि रमिम<sup>४</sup>अया ॥२॥  
 त बुद्ध अस्तिन ता<sup>५</sup> अकुह गणिमागतं ।  
 वटुअमिष वज्जान अचि प<sup>६</sup>हेत आगम ॥३॥  
 भित्तवन्तो विजिगुछतो भजतो रित्तमागतं ।  
 वग्गमूत्तं गुमानं वा पव्वानि गुहामु वा ॥४॥  
 उच्छावधमु सयनेसु वीवन्तो<sup>७</sup> तत्थ भेरवा ।  
 यहि मियसु न वधेय्य निग्घोमे सयनामने ॥५॥  
 कति परिस्सुया लाने मच्छता अमत<sup>८</sup> भि<sup>९</sup> ।  
 ये भिवन्तु अभिसमवे पन्नि<sup>१०</sup> छयनामन ॥६॥  
 मयास्म व्यप्यययो अस्सु मयाम्ममु<sup>११</sup> च गोचरा ।  
 वाणि सीउ<sup>१२</sup>अतानस्सु पडित्तस्म भिवन्तो ॥७॥

क्ं गो मिक्व ममादाय एकोदि<sup>१</sup> निपको सतो ।

क्म्मारो रजतस्सेव निज्जे मलमत्तनो ॥८॥

विजिगुच्छमानस्म यदि<sup>२</sup> फासु (साग्निपुत्ता ति भगवा ) ,

मया रितात्मन सवतो चे ॥

गयोधिवामस्य यथानुधम्म ,

■ ते पवक्खामि यथा पज्जान ॥९॥

पञ्चत्त<sup>३</sup> धीरो भयान न भाये, भिक्खु सतो सपरियन्तचारी ।

इगाधिसानान रिस्सिपान<sup>४</sup>, मनुस्सपस्मान चतुप्पज्जान ॥१०॥

पग्गम्मिकान न मत्तमय्य दिस्सार्हपि तेस बहुभरवानी ।

अथापरारि अभिममवेय्य, परिस्सयानि कुसलानुसी ॥११॥

आतप्पस्सन खुणाय फट्ठो, भीत अच्चुण्ह<sup>५</sup> अधिवासयय्य ।

सो तहि फट्ठा वट्ठा अनोरो, विरिय परवक्खम्म<sup>६</sup> दट्ठह करेय्य ॥१२॥

धय्य न करेय्य<sup>७</sup> न मुमा भणय्य, मत्ताय फस्स तसयावरानि ।

यन्निग्गत्त मनसो विजज्झा वण्हम्म पक्खानि विनात्तयय्य ॥१३॥

वोधातिमानस्स वस न गच्छ, मूलपि तम पक्खिज्ज निट्ठे ।

यथप्पिय वा पन अप्पिय वा, अट्ठा भवन्तो अभिसमवेय्य ॥१४॥

पज्ज पुरपक्खत्वा<sup>८</sup> कल्याणपीणि विक्खभये ताणि परिस्सयानि ।

अरति सट्ठे सयाम्हि पन्ते चतग सत्तय परिण्वधम्मे ॥१५॥

क्वि नु असिस्सामि कुव<sup>९</sup> वा असिस्स, दुस्स वत्ते तेत्थ<sup>१०</sup> कुवज्ज सस्स<sup>१०</sup> ।

एते विनक्के परिदेवनय्य, विनयय सेतो अनिक्कतसारी<sup>११</sup> ॥१६॥

अथ च लट्ठा थस्स च काले, मत्त स<sup>१२</sup> जज्झा च सोसनत्थ ।

मो तेसु गुणो यत्तचारि<sup>१३</sup> गामे रमितो<sup>१४</sup> नप वाच परग न वज्जा ॥१७॥

ओक्खि वक्खु न च पादणोरो ज्ञानानुपुत्तो बहुजापरस्म ।

उपेक्कमारम्भ समाहित्तो तवरासय कुवकुच्चयूप<sup>१५</sup> छि<sup>१६</sup> ॥१८॥

चुन्तिो वचोहि सतिमाभिनदे सप्रह्मचारीसु भिल पभिन्द ।

वाच पमुञ्चे कुसल नानिवे<sup>१७</sup> जनवाधम्ममाय न चनयय्य ॥१९॥

<sup>१</sup> M एकोधि

<sup>३</sup> N पञ्चन्न

<sup>४</sup> N सरीसिपान्

यतुण्ह

<sup>५</sup> N परवक्खम्म

<sup>६</sup> N करे

<sup>७</sup> N पुरस्सिज्ज

असिस्स <sup>८</sup> N कुव वा <sup>१०</sup> N वेत्त वक्खज्ज तेत्थं

<sup>११</sup> N सो <sup>१२</sup> N यनवारी

<sup>१३</sup> N १३२ दुग्गिज्ज

कुवकुच्च यूपछिदे

अथापर पञ्च रजानि स्तोत्रे, येषं तीसमा विनमाय विनते ।  
 स्तोत्रेषु सहेषु अथो रसेषु गन्धेषु फलेषु सहेषु राग ॥२०॥  
 एतेषु धर्मेषु विनेष्य छन्दं, भिक्षु सतीमा सुविमुत्तचित्तो ।  
 कात्रेण सो सम्मा धम्म परिवीमसमानो,  
 एवोन्मूतो विहने सम सोऽति (भगवान्नि) ॥२१॥  
 सारिपुत्तमुत्तं<sup>१</sup> निर्दिठत् ।

अट्टकण्ठो चतुत्थो

तस्मिन्—

आम शुद्धं दृष्टं अन्ता च शुद्धं दृष्टं परमा ज्ञाता ।  
 मोक्षार्थो च अन्तो च आराधितो पुराभोज्यः ॥  
 अन्तो येन च स्पृष्टानि पुनरेव तु वृष्टा ।  
 अन्तो दृष्टं येन तुल्यं धेरापञ्चेन सोत्तमः ।  
 आनि एवानि सुत्तानि सम्यक्कट्ठवग्निधानि ॥

## ५—पारायणयोगो

( ५५—कथुगाथा ५।१ )

बोसलानं पुरा रम्मा अयमा दक्षिणापर्यं ।  
 आविञ्चञ्जं पत्ययानो ब्राह्मणो भत्तपारग ॥१॥  
 मो अस्मवस्म यित्तये अट्ठवस्स<sup>१</sup> ममामने ।  
 वसी गोधावरी बूले उञ्छेन च पत्तेन च ॥२॥  
 तस्सव उपनिस्साय गामो च विपुलो अहु ।  
 ततो जातेन आयेन महायञ्ज अवप्पयि ॥३॥  
 महामञ्ज यजित्त्वान पुन पाविसि अस्सम ।  
 तस्मि परिपठिद्विह अञ्जो आगञ्छि<sup>२</sup> ब्राह्मणो ॥४॥  
 उग्गट्टपादो तसितो पकदन्तो रजस्सिरो ।  
 सो च न उपसवम्म सतानि पञ्च याचनि ॥५॥  
 तमेन यावरी दिस्वा आमनेन निमन्तयि ।  
 सुत्तं च कुसल पुञ्छि इद वचनमव्ववि<sup>३</sup> ॥६॥  
 य स्मा<sup>४</sup> मम देय्यघम्म सन्न विस्सज्जित मया ।  
 अनुजानाहि मे ब्रह्मे नत्थि पञ्च सतानि म ॥७॥  
 सत्ते मे याचमानस्स भव नानूपद<sup>५</sup>स्सति ।  
 सत्तम दिवमे तुप्प मुढा फल्लु सत्तधा ॥८॥  
 अभिसल्लरित्वा<sup>६</sup> कुह्वो भेरव सो अवित्तयि<sup>७</sup> ।  
 तस्स त वचन सुत्वा यावरी दुक्खितो अहु<sup>८</sup> ॥९॥  
 उस्सुस्सति बणाहारो सोवसल्लमप्यितो ।  
 अयोऽपि एव चित्तस्स ज्ञाने न रपती मनो ॥१०॥

<sup>१</sup> M मूळवस्स, मळहावस्स    <sup>२</sup> M आगञ्छि    <sup>३</sup> C अव्ववि    <sup>४</sup> M  
 चे मम    <sup>५</sup> M °दिस्सति, °देस्सति    <sup>६</sup> M सल्लारेत्वा    <sup>७</sup> M पवित्तयि  
<sup>८</sup> M अहु

उभयं नृनिस्त त्रिषा नृवता <sup>१</sup>अपतामिनी ।  
 नृवार्ता उगताम्भ इत्थं वचनमश्रया ॥११॥  
 न मां मुद्र <sup>२</sup>पञ्चानानि पुष्टा मा धनमिश्रो ।  
 मुद्राणि मद्र <sup>३</sup>पात या <sup>४</sup>आण तन्म <sup>५</sup>विज्जति ॥१२॥  
 भानी <sup>६</sup>तरि जातानि न म अक्याहि पुष्टिना ।  
 मुद्र मुद्राधिपान च त मुद्राम वचा तव ॥१३॥  
 अ <sup>७</sup>नृप न जातानि आण मद्र <sup>८</sup>न विज्जति ।  
 मद्र मुद्राधिपानो च जिनान <sup>९</sup>हन <sup>१०</sup>त्सग्नं ॥१४॥  
 अय पा <sup>११</sup>चरहि जानानि अस्म पुष्ट <sup>१२</sup>विमग्गत्त ।  
 मद्र मुद्रा <sup>१३</sup>धिपान च त वे अक्याहि दवन ॥१५॥  
 पुग त्रि <sup>१४</sup>पुष्टा निक्कानो लोकायको ।  
 अगच्छो नावनावरजस्म सक्कपुत्तो पभररो ॥१६॥  
 गा हि शास्त्रण मयुद्धो सत्तधम्मान पारणू ।  
 सत्तधम्मिज्जात्तत्तत्ता सत्तधम्मोसु चक्कमुमा ।  
 सत्तधम्मस्यव <sup>१५</sup>पत्तो विमुत्तो उपधिमंगये <sup>१६</sup>॥१७॥  
 मुद्रो गो भगवा लोक्क धम्म दमनि <sup>१७</sup>चाग्गुमा ।  
 त <sup>१८</sup>एत्थ मत्थान पुच्छस्सु मो तं त व्याकरिस्सति <sup>१९</sup>॥१८॥  
 मयुद्धोति चको मुद्रा उग्गा वावरी अद्दु ।  
 सोत्तम्म ननुवो जाति पीति <sup>२०</sup>विपुत्त लभि ॥१९॥  
 सो वावरी अत्तमनो उद्दगो त दवन पुच्छति चत्तजानो ।  
 चत्तमहि गाम निगमहि वा पुन चत्तमहि वा जत्तत्त लाक्कनाथा ।  
 यत्थ मत्त्वा तत्तस्सेमु <sup>२१</sup>मयुद्ध दि <sup>२२</sup>पुत्तम ॥२०॥  
 सावत्थिय धामत्तमन्निरे जिनो पत्तपत्तजो वरभूरिमेधमा ।  
 मा सत्तपुत्तो पिप्परो अनामवा मुद्राधिपानस्म विद्दु नरासभा ॥२१॥

<sup>१</sup> M अत्यशमिनी <sup>२</sup> M मुद्र <sup>३</sup> M मुद्राधिपाते <sup>४</sup> M च  
<sup>५</sup> M भोनि <sup>६</sup> M गुण अह एत <sup>७</sup> M एत्थ <sup>८</sup> M मुद्रनि  
 मुद्राधिपाते <sup>९</sup> C जनान <sup>१०</sup> M हृष्य, हेष्ट्य <sup>११</sup> हस्तलेखे-यो  
<sup>१२</sup> M पयवि <sup>१३</sup> M मुद्रानिपात <sup>१४</sup> M सत्तधम्मस्यव <sup>१५</sup> M  
 उपधिमंगये <sup>१६</sup> M देसेसि <sup>१७</sup> C त <sup>१८</sup> M व्याकरिस्सति  
<sup>१९</sup> M अमस्सेम <sup>२०</sup> M द्वि

ततो आमन्तयी<sup>१</sup> सिम्प ब्राह्मणे मन्तपारगे ।  
 एष माणव<sup>२</sup> अविगस्त मुणोश्च वधन मम ॥२२॥  
 यस्तमा<sup>३</sup> दुर्लभा लोव पातुभावो ऽभिण्दसो ।  
 स्वज्ज<sup>४</sup> लोवमिह उण्णो ससुद्धा इति विस्सुतो ।  
 पिप्प गत्वान सावत्थिं पस्सब्धो ण्पिदुत्तम ॥२३॥  
 यय चरहि जानेमु दिस्वा बुद्धोनि ब्राह्मण ।  
 अजानत ना पज्जहि यथा जानेमु त मय ॥२४॥  
 आगतानि हि मन्तेसु महापुरिसत्त्वरणा ।  
 द्वात<sup>५</sup>मा च व्याम्याता<sup>६</sup> समत्ता अनुपुब्बमो ॥२५॥  
 यस्मेत होणि गन्तु महापुरिसत्त्वरणा ।  
 द्वेस्व<sup>७</sup> तस्स गनियो तनिया हि न विज्जति ॥२६॥  
 मवे अगार अज्जा<sup>८</sup>वसति विज्जय्य पठवि इम ।  
 अदण्डन असत्थन घम्भेअमनुसासति ॥२७॥  
 सच्च च सो पब्बजति अगारा व्रनगारिय ।  
 विवत्त<sup>९</sup>च्छदा सयुद्धो अरहा भवति अनुत्तरो ॥२८॥  
 जानि गोत्त च ऊत्तण मन्ते सिस्म पुनापर ।  
 मुद्ध मुद्धाधिपात्त च मनसा भव पुच्छय ॥२९॥  
 अनावरणस्सामी यदि बुद्धो भविस्सति ।  
 मनसा पुच्छिअ पज्जह वाचाय निस्सज्जस्सति<sup>१०</sup> ॥३०॥  
 वावरिस्स वचो मुत्वा सिस्सा सोळम ब्राह्मणा ।  
 अजितो निस्समत्तय्यो पुण्णको अय मेत्तगू ॥३१॥  
 घानको उपसीवो च नदो च अथ हमको ।  
 तान्म्यक्कणा<sup>११</sup> दुभयो जातुकण्णी च पणितो ॥३२॥  
 भद्रावुधा<sup>१२</sup> उज्जा च पोमालो चापि ब्राह्मणो ।  
 मोथराजा च मेघावी पिगियो च महा इमि ॥३३॥  
 पच्चेवगणिनो सव्वे सव्वलोनस्स विस्सुता ।  
 मायी ज्ञानरता घोरा पुब्बवासनवासिना ॥३४॥

<sup>१</sup> M °वि <sup>२</sup> M एत माणव <sup>३</sup> M यस्त सो <sup>४</sup> M स्वाज्ज  
 M द्वीतसानि <sup>५</sup> Fsb विद्याध्याता <sup>६</sup> M द्वेष Fsb बुधे य  
<sup>७</sup> M, Fsb आवसति <sup>८</sup> M विवत्तच्छदो, C विवत्तच्छदो <sup>१०</sup> M  
 विसजिस्सति, विस्सज्जिस्सति <sup>११</sup> M °कण्य <sup>१२</sup> C भद्रायुधो

गवर्णि अभिवान्त्वा वत्वा च न पदस्मिणं ।  
 जटाजिनपरा सख्ये पञ्चामु उत्तरामुक्ता ॥३५॥  
 अल्लवस्त<sup>१</sup> पतिद्वान पुरिम<sup>२</sup> माहिस्ति<sup>३</sup> तदा ।  
 उज्जनि चापि गोतद्व<sup>४</sup> वेदिस वनम<sup>५</sup> ह्य ॥३६॥  
 कामा<sup>६</sup> चापि सावेत सावत्यि च पुरुत्तम ।  
 सनप कपिल<sup>७</sup> वयु कुसिनार च मंदिर ॥३७॥  
 पाव न भागनगर वमालि मागध पुर ।  
 पासाणक केनिय च रमणीय मनोरम ॥३८॥  
 तसिता बुन्व<sup>८</sup> माग महागमज<sup>९</sup> वाणिजो ।  
 छाव धम्माभिततो<sup>१०</sup> व तुरिता पठनमाह<sup>११</sup> ॥३९॥  
 भगवा च तमिह रागमे भिरनुमयपुरवत्तो ।  
 भिनव्वा धम्म देसेति सान्नेज<sup>१२</sup> नदनी बने ॥४०॥  
 अजितो अत्त<sup>१३</sup> सबुद्ध धी<sup>१४</sup> तग्मोज्ज भानुय<sup>१५</sup> ।  
 चत्त मया पन्न<sup>१६</sup> रमे पारिपु<sup>१७</sup> रि उपागत ॥४१॥  
 मयज्जत्त गत्त दिस्वान प<sup>१८</sup> रिपूर च व्यजन ।  
 एवमन्त डिो हट्टो मनोपन्हे अपुच्छ ॥४२॥  
 आदिस्स जम्म<sup>१९</sup> न बूहि गात्त बूहि सलक्कण ।  
 मत्तेसु पारमि बूहि कनि वाचेनि ब्राह्मणो ॥४३॥  
 बीस वत्तसत्त आयु सो च गोतेन आवरि ।  
 तीण<sup>२०</sup> स्स लक्कणा गत्ते तिण्ण वेदान पारयू ॥४४॥  
 लक्कणे इतिहास च सनिघण्डुसकेटु<sup>२१</sup> भ ।  
 पञ्च सत्तानि वाचेनि सध<sup>२२</sup> म्मे पारमि गतो ॥४५॥  
 सक्कणान पविचय वावरिस्स नहतम ।  
 तण्हिच्छि<sup>२३</sup> पनासेहि मा नो कलामित अहू ॥४६॥

<sup>१</sup> M ब्रूतवस्त <sup>२</sup> M पुरि माहिस्ति <sup>३</sup> M गोदद  
<sup>४</sup> M कपिल <sup>५</sup> M व ओदक, C व <sup>६</sup> N महासाल <sup>७</sup> C  
<sup>८</sup> मावह, <sup>९</sup> मारहु B मावहि <sup>१०</sup> नदनि <sup>११</sup> M अह <sup>१२</sup> M  
 जिनरत्त, सनरत्ति Trenckner M बीनरत्ति ब्रह्मव्य Morris JPTS  
 1893 P 73 <sup>१३</sup> C पग्गरसे <sup>१४</sup> हस्तनेखे परि, M पारिपूर (1017<sup>b</sup>)  
<sup>१५</sup> M पारिपुण्ण च व्यञ्जन, परिपूर विद्यजन <sup>१६</sup> M जप्पन <sup>१७</sup> M तीणि  
 ज्जत्त <sup>१८</sup> M केन्ध <sup>१९</sup> M सद्धम्मे <sup>२०</sup> M त कलच्छिन्न ? ? कलच्छिन्न

मुरं विष्ठाप छादति उष्णरात भमुज्जतरे ।  
 नीमोहिर्न वत्सुगुहं एव जातहि माणव ॥४७॥  
 पुच्छे हि वि<sup>१</sup>ञ्चि अतुलतो मुखा पञ्हे विमाषने ।  
 विनिन्नेति जनो मन्वा वेज्जागो वज<sup>२</sup>ञ्चति ॥४८॥  
 को तु दबो व<sup>३</sup> प्रह्ला वा दबो वा<sup>४</sup>पि सुज<sup>५</sup>नि ।  
 मनगा पुच्छिने पञ्हे वनेन पटिभामनि ॥४९॥  
 मुदं<sup>६</sup> मुदापिपान व वावरी परिपुच्छति ।  
 त ध्यातरोहि भगवा वंत्वं पिय मो दस ॥५०॥  
 अविज्जा मुदापि जानाहि<sup>७</sup> विज्जा मुदापिपानिनी ।  
 सदागतिसमाधीहि छन्विपरियेन सयुता ॥५१॥  
 सतो वेनेन महता सयमित्या<sup>८</sup> भाणवो ।  
 एकस अजिन बत्वा पादेसु सिरसा पति ॥५२॥  
 वावरी ब्राह्मणो भोनो सह सिस्साहि मारिस ।  
 उदगचित्तो सुमनो पादे व<sup>९</sup>पि वरगुम<sup>१०</sup> ॥५३॥  
 मुमितो वावरी होतु सह सिस्सेहि ब्राह्मणो ।  
 त्थ वा<sup>११</sup>पि सुसिता होहि निर जीवाहि माणव ॥५४॥  
 वावरिस्स व तुम्ह वा<sup>१२</sup> सब्बेस सब्बगसय ।  
 वत्ताववासा पुच्छन्हो य निञ्चि मनसिच्छय ॥५५॥  
 संबुद्धेन वत्तोवासी निसीदित्यान पञ्ज<sup>१३</sup>लि ।  
 अजितो पठम पञ्ह तत्थ पुच्छि तथागतं ॥५६॥

वत्सुगाथा<sup>१४</sup> निदिठता ।

<sup>१</sup> M ॥ च, तं, Fsb—कञ्चि (इ० ८००)      <sup>२</sup> C °ली  
<sup>३</sup> C च, Fsb, M वा      <sup>४</sup> C चापि      <sup>५</sup> C °ली      <sup>६</sup> C  
 मुदा      <sup>७</sup> M °विज्जानाहि      <sup>८</sup> C सत्यमिहत्त्वान, ०—सयंभेत्यान      <sup>९</sup> C,  
 M, Fsb वत्सुगा      <sup>१०</sup> M वापि      <sup>११</sup> सु० वि० (सिंहल)—१५५७ वावरि  
 यस्स च तुम्ह वा      <sup>१२</sup> C, M °ली      <sup>१३</sup> M °कया निदिठता,  
 °कयं निदिठतं



## ( ५६—अज्ञितमाणवपुच्छा ५१२ (१) )

वाग्नु विवृता लोका (इच्छायस्मा अज्ञिता) वनसु च्छवामा ।  
 विस्माभिः<sup>१</sup>कैषं यूमि किं सु मम मरुभवे ॥१॥  
 अविस्त्राय विवृता लोको (अज्ञिता निगवा) वदिस्य<sup>२</sup>पमा<sup>३</sup> नपा<sup>४</sup>रुति ।  
 ज्ञप्ताभिः<sup>५</sup>यमं यूमि दुर्वा अमं मरुभवे ॥२॥  
 मवन्ति मव्यपी गाना (इच्छायस्मा अज्ञिता) सापान किं निवारण ।  
 मोतान मवरं द्रुति वा सापान विविस्त्र<sup>६</sup> ॥३॥  
 धाति सापानि गार्गमि (अज्ञिता निगवा) मति नम निवारण ।  
 मोतान मवरं यूमि पञ्चाना<sup>७</sup> विविस्त्र ॥४॥  
 पञ्चाना भव मती<sup>८</sup> ॥५॥ (इच्छायस्मा अज्ञिता) नामरूप च मारिम ।  
 एन<sup>९</sup> म पुच्छा पञ्चानि तथं उपरुज्जानि ॥६॥  
 म एन पञ्च अगुच्छि अज्ञिता तं यनामि त ।  
 यय नाम च रूप च जगत् उपरुज्जानि ।  
 रिज्जानम निराधत्त ययन उपरुज्जानि ॥७॥  
 ये न मरु<sup>१०</sup>तधम्माम य च ममा पुषु इध ।  
 तमं मे निरुत्ता हरिय पुच्छो पञ्चानि मारिम ॥८॥  
 वामसु नाभिगिज्जानप्य मात्ताज्जाविग्ग गिया ।  
 पुग्गता मव्यधम्माम सतो भिन्नसु परिस्सज्जनि ॥९॥

अज्ञितमाणवपुच्छा निट्ठिता ।

## ( ५७—तिस्समत्तयमाणवपुच्छा ५१४ (२) )

को<sup>१</sup>ध सत्तुमिना लोके (इच्छायस्मा तस्सो मतथो )  
 वस्स नो मन्ति दञ्जिता ।  
 वा उभत्त<sup>२</sup>मभिज्ज्जाय मज्जा मत्ता न पिप्पनि<sup>३</sup> ।  
 वं यूमि महापुरिमो<sup>४</sup>नि को इध मित्र<sup>५</sup>निमज्ज<sup>६</sup>गा ॥१॥

<sup>१</sup> C विस्माभिसेचन    <sup>२</sup> M C विविच्छा, वेवच्छा    <sup>३</sup> M  
 विविस्त्र    <sup>४</sup> M सति    <sup>५</sup> M य च Fsb मतेन-वेव, N चापि  
<sup>६</sup> M एव N एत    <sup>७</sup> N B सत्तातधम्मामे    M तिससमे  
 तेव्यो    <sup>८</sup> Fsb उभत्त<sup>९</sup>    <sup>१०</sup> M लिप्पति    <sup>११</sup> M लिप्पनि<sup>१२</sup> सिप्पनि<sup>१३</sup>  
<sup>१४</sup> M म-मत्ता

कामेसु ब्रह्मचरियवा (मेतेष्याति भगवा) धीततण्हो सदा सती ।

ममाय निव्वुतो भिक्खु तस्म नो सन्ति इञ्जिता ॥२॥

सो उभन्नमभिञ्जाय मज्जे मन्ता न णिप्पति ।

त ब्रूमि महापुरितो नि सो इध सिब्बनिमक्खगाग्नि ॥३॥

तिस्समेसेव्यमाणवपुच्छा निट्ठता ।

( ५८—पुण्यवमाणवपुच्छा ५।४ (४) )

अनज<sup>१</sup> मूलस्सावि (इच्चायस्मा पुण्यका) अत्थि पञ्हेन<sup>२</sup> आगम<sup>३</sup> ।

विनिस्सिता इसयो<sup>४</sup> मनुजा स्वतिया ब्राह्मणा<sup>५</sup> दवन्नान

यज्जमक्<sup>६</sup> अप्यिस्सु पुयू इध लोके ।

पुच्छामि त भगवा ब्रूहि मे त ॥१॥

ये क्वचिस्मे इसयो मनुजा (पुण्यकाति भगवा) स्वतिया ब्राह्मणा

दवन्नान यज्जमक्<sup>७</sup> अप्यिस्सु पुयू इध लोके ।

आमिसमाना पुण्यव इत्थभाव<sup>८</sup> जर सिता यज्जमक्<sup>९</sup> अप्यिस्सु ॥२॥

<sup>१०</sup> यं क्वचिस्मे इसयो मनुजा (इच्चायस्मा पुण्यको)

स्वतिया ये० इध लोके ।<sup>११</sup>

क्वच्चि<sup>१२</sup> सु ते भगवा यज्जापय<sup>१३</sup> अप्यमत्ता

अतार<sup>१४</sup> जातिं च जर च मारिस् ।

पुच्छामि त भगवा ब्रूहि मे त ॥३॥

आसिंसन्ति धीमयन्ति अभिजप्पन्ति<sup>१५</sup> जुहन्ति<sup>१६</sup> (पुण्यकाति भगवा)

कामाभिजप्पन्ति पटिच्च लाभ<sup>१७</sup> ।

ते याज<sup>१८</sup> योमा भवरागरस्ता नातरिमु जातिजरज्जति ब्रूमि ॥४॥

<sup>१</sup> M अनज <sup>२</sup> M पञ्हेन आगम <sup>३</sup> M आगमि, आगमि

<sup>४</sup> Fsb [इसयो मनुजा] [पुयू इध लोके] <sup>५</sup> Fsb adds च <sup>६</sup> M

अक्<sup>७</sup> अप्यिस्सु <sup>८</sup> M इत्थत्त <sup>९</sup> M नास्ति <sup>१०</sup> M किचि, किच्चि,

क्वच्चि <sup>११</sup> Fsb [यज्जापये] किंतु cf 1058<sup>d</sup> <sup>१२</sup> M अतर् <sup>१३</sup> Fsb

[अभिजप्पति] <sup>१४</sup> C M जुहति see (N देन्ति) <sup>१५</sup> C लोभ

but see N <sup>१६</sup> M याज<sup>१७</sup> but see N and B

ते च तानिगु यात्र<sup>१</sup>मोषा (इष्वावरमा मुनयो),  
 यज्ज<sup>२</sup>हि जात्रि च जरे च मारिम ।  
 अयं यो चरहि इवागुम लाह, अतारि जात्रि च जरे च मारिम ।  
 पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि म न ॥१॥  
 गताय लोचस्मि परोरता<sup>३</sup>नि (पुन्यवात्रि भगवा),  
 मस्मि<sup>४</sup>ज्जि<sup>५</sup>न<sup>६</sup>चि ब्रूहिभि तोरे ।  
 गतो विगुमो अनिपो निगमा अतारि मा जात्रिजरे<sup>७</sup>नि ब्रूमीत्रि ॥२॥  
 पुच्छामागवपुच्छा निगिदता ।

( ५६—भक्तगुमाणकपुच्छा ५।४ (४) )

पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे<sup>१</sup> (इष्वावरमा भक्तगु),  
 यज्ज<sup>२</sup>मि तं वेदपुं भाविततं ।  
 मुनो नु दुक्का ममु<sup>३</sup>दागता इम य वचि लोचस्मि<sup>४</sup> अनेवग्गा ॥१॥  
 दुवपस्ता वे<sup>५</sup> तं पमयं अपुच्छामि, (भक्तगुनि भगवा) ।  
 तं त पयग्गामि यथा पजानं ।  
 उपाणिनागा पमवनि दुक्का य वेरि लोचस्मि अनेवग्गा ॥२॥  
 यो व अविदा उपाधि करोनि पुाणुनं दुक्कामुवेति भवो ।  
 तस्मा हि जान उपाधि न वरिदा, दुक्करम जातिप्पमयापुपत्ती ॥३॥  
 यं त अपुच्छिहम अजित्तया नो यज्ज<sup>६</sup> तं<sup>७</sup> पुच्छामि<sup>८</sup> तदिप ब्रूहि ।  
 वयं नु धीरा विवरन्ति ओष जात्रिज<sup>९</sup> सोरपरिद्वं<sup>१०</sup> च ।  
 तं मे मुनी<sup>११</sup> साधु विगावरोहि तथा<sup>१२</sup> हि ते विदिनो एत धम्मो ॥४॥  
 कित्तमिरस्ता<sup>१३</sup>मि ते धम्म (भक्तगुनि भगवा) जिद्व<sup>१४</sup> धम्मे अनीतिह<sup>१५</sup> ।  
 यं विदित्वा सगो चरं तरे लोने विसत्तिव<sup>१६</sup> ॥५॥

<sup>१</sup> M याव<sup>०</sup> <sup>२</sup> C य हि, M यज्जो हि <sup>३</sup> M परोपरानि  
<sup>४</sup> C यस्त जितं, M यस्तज्जित <sup>५</sup> N समुपागता C Fsb-दुक्का  
 य सदा गता ( १ c दुक्का [य] स [मु] दागता ) <sup>६</sup> M, Fsb-लोचस्मि  
<sup>७</sup> M चे - B M पजानं <sup>८</sup> M नास्ति <sup>९</sup> N, M पुच्छाम  
<sup>१०</sup> M पस्तिव <sup>११</sup> C M मुनि <sup>१२</sup> C यथा <sup>१३</sup> M कित्तमि  
 त्ताम <sup>१४</sup> M adds च

तं चाहं अभिनन्मामि महमी<sup>१</sup> धम्ममुत्तमं ।

यं विट्तिवा सतो चरं सरं सा<sup>२</sup> विसत्ति<sup>३</sup> ॥६॥

यं<sup>४</sup> विट्ठि मज्जा<sup>५</sup>मामि (मत्तगूणि भगवा),

उदं अधो निरियं चा<sup>६</sup>णि मज्जे ।

एनेसु न<sup>७</sup>दिं च निवेमनं च, पणुज्ज विज्जाण भवे ण तिट्ठे ॥७॥

एव विट्ठो सतो अप्पमत्तो, भिक्खु चरं हित्वा ममापित्तानि ।

जातिजरं मोक्खपरिहृतं च इधेव विट्ठा पजहेय्य दुग्घ ॥८॥

एताभिनन्मामि वधो महेसिनो, मु<sup>८</sup>वित्तिनं गोतमज्जू<sup>९</sup>पधीनं ।

अट्ठा हि भगवा पहासि तुवल तथा हि ते विदितो णस धम्मो ॥९॥

ते णापि नून पजहेय्य<sup>१०</sup> दुक्खं, ये ह्य मुनि<sup>११</sup> अ<sup>१२</sup>द्वित ओषदेय्य ।

त तं नमस्सा<sup>१३</sup>मि समेज्ज<sup>१४</sup> नाग,

अप्पव म भगवा<sup>१५</sup> अट्ठित ओवण्य्य ॥१०॥

यं ब्राह्मण वदगु आभिजज्जा<sup>१६</sup> अविज्जनं वामभवे असत्त ।

अट्ठा हि सो ओषमिम अतारि<sup>१७</sup> निण्णो च<sup>१८</sup> पारअत्थिला अक्खो ॥११॥

विट्ठा च<sup>१९</sup> मो<sup>२०</sup> वेदगू<sup>२१</sup> नरो इध, भवामवे सगमिम विसज्जा ।

सो धीततण्हो अनियो निरासो, अतारि सा जातिजरज्जि भूमानि ॥१२॥

भेत्तगुमाणवपुच्छा मिदिट्ठा ।

( ६०—घोतरुमाणवपुच्छा ५।६ (५) )

पुच्छामि तं भगवा बूहि मे त (इच्चायस्मा घोतवा),

वाचाभिकवामि महेसि तुग्घ ।

तव सुत्तवान निग्घोस सिक्ख निब्बाणमत्तनो ॥१॥

तेन हात्तप्प करोहि (घोतरुणि भगवा) इधेव निपक्को सतो ।

इतो सुत्तवान निग्घोस सिक्ख निब्बाणमत्तनो ॥२॥

<sup>१</sup> C ०स्ति <sup>२</sup> M नय विट्ठि <sup>३</sup> M सज्जानासि <sup>४</sup> M  
 घाजि <sup>५</sup> M निद <sup>६</sup> C सुक्तिस्तक <sup>७</sup> Fsb गोतम नूपधीकं  
<sup>८</sup> C M पजहेय्य <sup>९</sup> Fsb मुनी <sup>१०</sup> M अत्थित, अट्ठिक  
<sup>११-१२</sup> M नमस्सामनुसमज्ज <sup>१३</sup> Fsb [भगवा] cf 1045 1079  
<sup>१४</sup> C आभिजज्ज <sup>१५</sup> M, B, N अभिजज्जा, Fsb अभिजज्जो  
<sup>१६</sup> C आतारि, M अतरि <sup>१७</sup> C, M च <sup>१८</sup> M यो <sup>१९</sup> C गु

परमागहं देवमनुस्मरान्ते, अविच्छन्नं ब्राह्मण इन्द्रियमानः ।  
 त तं नमस्त्वामि ममन्तरात्तु<sup>१</sup>, पमुञ्च म मवरु उच्यथाहि ॥१॥  
 ना<sup>२</sup>ह गमिस्ता<sup>३</sup>मि पमोचाम, व<sup>४</sup>र्धवाथ धानक व<sup>५</sup>न्वि लो<sup>६</sup> ।  
 धम्म ध ममं जातामाता, एवं तुय ओषमिम तरमि ॥४॥  
 अनुसास ध<sup>७</sup>हो वरुणायमानो, विदवधम्म यमहं विजञ्ज ।  
 यथाह आरामा<sup>८</sup>अ अयापञ्जमानो इधेव सत्ता अमिता<sup>९</sup>वरैय्य ॥५॥  
 वित्तदिस्सामि त मन्निं (धोनवाति भगवा) ण्ठि<sup>१०</sup> धम्म अनीनिह  
 य<sup>११</sup> विन्त्तिा मनो चर तरे रा<sup>१२</sup> विमत्तिव ॥६॥  
 तं चान्न<sup>१३</sup> अभिवन्तामि महेसि मन्निमुत्तमं ।  
 य विदिवा मनो चर त<sup>१४</sup> ला<sup>१५</sup> विमत्तिव<sup>१६</sup> ॥७॥  
 य विञ्चि गंपजानासि (धोनवाति भगवा), उट्ठं अथा निरिय चा<sup>१७</sup>पि म<sup>१८</sup>चे ।  
 ए<sup>१९</sup>मं विन्त्तिा<sup>२०</sup> रानोअनि ला<sup>२१</sup>के, भवाभवाय भाज्जासि तण्ठंति ॥८॥  
 धोतवमाणवपुच्छा निन्दिता ।

( ६१—उपसीक्माणवपुच्छा ५।७ (६) )

एको अ<sup>१</sup> सत्त<sup>२</sup> महल्लमोष (इच्छायस्मा उपगीवो),  
 अनिस्सितो नो विसहामि तारिषु ।  
 आरम्भण कूहि समन्तवक्कु य निस्सितो ओषमिय तरेय्य<sup>३</sup> ॥१॥  
 आविञ्चञ्ज देक्खमानो सतीमा (उपगीवानि भगवा)  
 नत्थीनि निस्साय तरत्सु ओष ।  
 वाम पहाय विरतो वयाहि, तण्ठस्सय रत्तमहा<sup>४</sup>भिपस्स ॥२॥

<sup>१</sup> C °बलं <sup>२</sup> M नोह <sup>३</sup> M सहिस्सामि, N समीहामि <sup>४</sup> C  
 M °वयी <sup>५</sup> M किचि <sup>६</sup> C अह <sup>७</sup> M अव्या<sup>८</sup>, M B  
 °पज्ज<sup>९</sup>, for °पज<sup>१०</sup> <sup>११</sup> C M °य्य <sup>१२</sup> Mss Add व <sup>१३</sup> C  
 स<sup>१४</sup> <sup>१५</sup> C वाट्ट <sup>१६</sup> C वाट्ठि <sup>१७</sup> M एते <sup>१८</sup> C, Fsb-  
 विदित्ताम <sup>१९</sup> N तरेय्य <sup>२०</sup> R B नत्तमहाभिपस्स, C नत्तमहाभि  
 तपस्स M N (म)—रत्तमहाभिपस्स, (VI °यस्स) B (M)—तण्ठस्सय  
 रत्तमह विपस्स

गन्धु पापेभ्यो यो वीतरागो (इच्छायाग्भा उपगीवा)

आविच्छन्नं निस्सिन्धो निश्चिन्मज्ज ।

गच्छाविमोक्षो परमे विमुक्तो

निष्ठे<sup>१</sup> नू सा<sup>२</sup> नत्थ अनानुयायी<sup>३</sup> ॥३॥

सम्भु<sup>४</sup> पापेभ्यो यो वीतरागो (उपगीवाति भगवा),

आविच्छन्नं निस्सिन्धो निश्चिन्मज्ज<sup>५</sup>

गच्छाविमोक्षं परम विमुक्तो, निष्ठेय्य सो तत्थ अनानुयायी ॥४॥

निष्ठे<sup>६</sup> च सो नत्थ अनानुयायी, पूर्णंअपि धम्मा<sup>७</sup> समन्तवपु<sup>८</sup> ।

तत्थय सो गीणि गिया विमुक्तो भवेय<sup>९</sup> विच्छाण तथाविधस्त ॥५॥

अच्चो<sup>१०</sup> यका वानवगेन तित्तो<sup>११</sup> (उपसीधाति भगवा),

अत्थ प<sup>१२</sup> लन्ति न उपति गत्त ।

एव मुनी नामरात्रा विमुक्तो<sup>१३</sup>, अत्थ पलन्ति न उपति गत्त ॥६॥

अत्थं गत्ता सो उवा सा नत्थ उदाहु वे तस्सत्तिया अरापो ।

त मे मुनि माधु वियावणेहि, तथा हि ते विदितो एस धम्मो ॥७॥

अत्थ गतस्स १ पमाण<sup>१४</sup> मत्थि (उपसीधाति भगवा)

येन न वज्जु<sup>१५</sup> त तस्स नत्थि ।

सच्चु धम्मेसु समूहतसु समूहता धान्प<sup>१६</sup> याअपि मब्बेअणि ॥८॥

उपसीवमाणवपुच्छा निष्ठित्ता ।

( ६२—नन्माशुपुच्छा १।८ (७) )

मन्नि लोके मुनयो<sup>१७</sup> (इच्छायाग्भा नन्दो) जना वन्ति त<sup>१८</sup> यिद वप सु<sup>१९</sup> ।

आणूपपन्न मो<sup>२०</sup> मु<sup>२१</sup> नि वन्ति उदाहु वे<sup>२२</sup> जीवितेनूयन ॥९॥

न दिट्ठिमा न सुत्तिमा न आणेन<sup>२३</sup>, मुनीध नद कुसला वदन्ति ।

विमेनिवत्था अनिया निरासा च<sup>२४</sup> रन्ति ये ते मुनयोअणि बूमि ॥१०॥

१ C M हित्वा अज्जं २ M ०यिमुखे, ०विमोक्षे ३ M N ०विमुक्तो ४—M निष्ठेय्य सो ५ M ०धायि, ०धायि, ०तयि ६ ० नास्ति गत्ता ७ C तिष्ठेय्य ८ M नास्ति ९ M वस्तति, B पूगानि वस्तान १० M, N चवेय ११ M अक्खि १२ M, N खित्ता १३ C फलेनि १४ M ०विमुक्तो १५ C ०मेति १६ M वज्जुं १७ M ०मया, ०यत्था १८ M Adds ति (छद क्रमेणा) १९ M कस्सिदं, ययि २० C, M सु २१ M मुनि मो २२ ० ते २३ M adds सोलव्यतेनापि वदन्ति सुद्धि २४ M वन्ति

ये वचिमे सम<sup>१</sup>जगत्ताग (इच्छायस्मान्ता),

चिद्वे<sup>२</sup> मुनेनापि वचिनि मुदि<sup>३</sup> ।

गीर्णनापि वचिनि मुदि आचरुन रचिनि मुदि<sup>४</sup> ।

वचिगु ते भगवा<sup>५</sup> नत्य यथा<sup>६</sup> चरन्ता आचर जाति च जर च मारि।

पुच्छामि त भगवा ब्रूहि म त ॥३॥

य वचिमे समज वात्ताग (तापि भगवा) चिद्वे मुनेनापि वचिनि मुदि ।

गीर्णनापि वचिनि मुदि आचरुन वचिनि मुदि ।

चिद्वचिनि त तथ यथा चरन्ति<sup>७</sup>, नार्तिगु जातिररनि वृमि ॥४॥

य वचिमे समज वात्ताग (इच्छायस्मान्ता), चिद्वे मुनेनापि वचिनि मुदि ।

सीर्णनेनापि वचिनि मुदि, अनवन्ते वचिनि मुदि<sup>८</sup> ।

म<sup>९</sup>ने मुनि वृमि आपनिष्ठा, जय वा चरहि देवमनुस्मताते ।

अनारि चानि त जर च मारिम पुच्छामि त भगवा ब्रूहि म त ॥५॥

ताह तन्व समज वात्ताग (तापि भगवा) जातिवराय<sup>१०</sup> निवृत्तापि वृमि ।

देगीष<sup>११</sup> चिद्वे मुने मुन वा, साचरुन चानि वृत्ताय नच ।

अनेरन्तेपि पृथग् रात्र, तर्ह परिच्छाय जनासावा<sup>१२</sup>त ।

त वे तय जोषनिष्ठाति वृमि ॥६॥

एतामिनदापि यथा महेगिनो सुचिर्ति गोमजूपधी ।

ये सीष चिद्वेन दे० [१०८२] जनासावा ।

अहर्णि ते आपनिष्ठाति वृमाति ॥७॥

मन्त्रमाणवपुच्छा निदिठता ।

( ६३—हेमन्माणवपुच्छा ५।६ (८) )

ये मे पुष्य विषावगु (इच्छायस्मा हम्बो)

हुर गोतमसागना<sup>१३</sup> इच्छामि इमि भविस्सति ।

सन्ध ॥ इतिहीनिह । सन्ध त तक्कवड्डन ॥१॥

<sup>१</sup> M समणा० <sup>२</sup> Fsb-विद्वेन N दिद्वेमुनेनापि (M १०८०  
b विद्वेन) <sup>३</sup> M मुदि <sup>४</sup> Fsb [भगवा] <sup>५</sup> R यथा <sup>६</sup> M वदति

<sup>७</sup> M तथे ते च <sup>८</sup> C, M समणा० <sup>९</sup> Fsb-जाती० <sup>१०</sup> S  
य विष, येऽपि <sup>११</sup> C ०वे <sup>१२</sup> C ०न, Fsb (हुर गोतमसागना)

नाह तत्थ अभिरमि<sup>१</sup>

त्व च मे धम्ममक्खाहि सण्हानिग्घातन<sup>२</sup> मुनि ।

य विदित्वा सतो चरं तरे लोके विसत्तिव<sup>३</sup> ॥२॥

इय विट्ठमुत्तमुनविञ्जानेसु<sup>४</sup> पियस्सेसु ह्रमव<sup>५</sup> ।

छन्दराग विनोदन विट्ठाणपदमञ्जुत ॥३॥

एतदञ्जाय ये सना<sup>६</sup> दिट्ठधम्माभिनिञ्चुता ।

उपसन्ना च ते सदा<sup>७</sup> निण्णा लोके तिसत्तिक ॥४॥

हेमकमाणवपुच्छा निट्ठिता ।

( ६४—तोदेय्यमाणवपुच्छा ५।१० (६) )

यस्मिं कामा न वसन्ति<sup>१</sup> (इच्चायस्मा ताण्य्यो) तण्हा यस्म न विज्जति ।

कथक्खा च यो निण्णो विमोक्खो तस्म कीदिमो ॥१॥

यस्मिं कामा न वसन्ति (तोण्य्यानि भगवा) तण्हा यस्म न विज्जति ।

कथक्खा च यो निण्णो विमोक्खो तस्म नापरो ॥२॥

निरासमो<sup>२</sup> मा उद आमसानो<sup>३</sup> पञ्जाणवा सो उ पञ्जाक्खी ।

मुनि अह सक्क यथा विज्ज, त मे विपाचिकव समन्तवक्कु ॥३॥

निरासमो मा न मो आमसानो, पञ्जाणवा सो न प पञ्जाक्खी ।

एवंपि तोण्य्य मुनि विजान अविञ्घा तामभर असत्तज्जि ॥४॥

तोदेय्यमाणवपुच्छा निट्ठिता ।

( ६५—कप्पमाणवपुच्छा ५।११ (१०) )

मज्झ सरस्मि<sup>१</sup> निट्ठुत (इच्चायस्मा कप्पो) ओघे<sup>२</sup> जाते महभय ।

जरामक्कुपरेतान दीप पञ्जुहि मारिण ।

एव<sup>३</sup> च मे दीपमक्काहि<sup>४</sup> ययपिद<sup>५</sup> नापर मिया ॥१॥

<sup>१</sup> Mss नि Fsb (नाह तत्थ अभिरमि) <sup>२</sup> C तण्हाय नि०, M °निघाननं <sup>३</sup> C विट्ठमुत्त मुन वि°, M दिट्ठ मुत्त वि°, Fsb-  
°मुत्त (विट्ठजानेसु) <sup>४</sup> M सित्ता <sup>५</sup> N (सदा=सद्यदा) C ते वसा,  
M ये सना <sup>६</sup> M सवति <sup>७</sup> C M Fsb-निरासतो, (cf  
369c) N निरासतो (1091) - M आमसानो <sup>८</sup> M °स्मि  
१° M ओघजाते <sup>२</sup> M n <sup>३</sup> C M नितम० <sup>४</sup> तिहहम्त०  
Fsb-यथा विदे



मम गराग्नं निद्रुतं (वग्नाणि भगवा) आपे जान महम्मप ।  
 जरामञ्जुपरतां दार्पं पत्रुमि वण्यं च ॥२॥  
 अत्रिचने यगाग्नं एत दीपं जनापरे ।  
 निराणं इति नं वूमि जरामञ्जुपरिणयं ॥३॥  
 एतं च ज्ञाय य सता निद्रुचम्मामिनिद्रुता ।  
 न ते मारयगानुता न न मारस्य पञ्जुगि<sup>१</sup> ॥४॥  
 वण्यमाचवपुच्छा निद्रिता ।

( ६६—अतुरणिमाणपुच्छा ५।१२ (११) )

शुत्वान्द्रु बीरमरामनामि<sup>१</sup> (इच्छायस्मा अतुरणी<sup>२</sup>),  
 आपानिने पुत्रुमनाममागमं ।  
 सन्ति<sup>३</sup>प<sup>४</sup> वूटि सहाज<sup>५</sup>तत  
 ययानच्छं भगवा वूहि म तं ॥१॥  
 भगवा हि नामे अभिमुध्य हरियनि, आच्छिचो<sup>६</sup>न पठवि तनि<sup>७</sup> तेजसा<sup>८</sup> ।  
 परितपञ्जस्य मे भूरिपञ्ज, आविक्कं घम्मं यमहं विजञ्जो ।  
 जानिजराय<sup>९</sup> इय विण्हानं ॥२॥  
 नामेमु विनय<sup>१०</sup> गयं (जतुवणीनि भगवा) नक्कम्मं दट्ठु<sup>११</sup> सेमनो ।  
 उगाहीतं निरस्य वा भा ते विज्जित्त<sup>१२</sup> निञ्चनं ॥३॥  
 य पृथ्वे त विमा<sup>१३</sup>सहि पच्छा ते माञ्जु विञ्चनं ।  
 मम वे नो गहेम्ममि उपसन्ता चरिस्तसि ॥४॥  
 सयनो नामपसिम बीरगयस्तं ब्राह्मण ।  
 आमवात्स<sup>१४</sup> न विज्जन्ति येहि मच्चुवम वजेति ॥५॥  
 अतुरणिमाणपुच्छा निद्रिता ।

<sup>१</sup> C येतं <sup>२</sup> C पण्डु, M पठु N (C, M) पट्टु  
<sup>३</sup> C M बीर अत्रामनामि <sup>४</sup> C M ०णि <sup>५</sup> Fsb-भतो <sup>६</sup> C  
 M सहजं <sup>७</sup> C तेजवि Fsb (आविच्छो तेजसा)  
<sup>८</sup> Fsb-भतो <sup>९</sup> C विनेय, Fsb (ध्यात्वा) ०नेय्य <sup>१०</sup> M दट्ठु  
<sup>११</sup> M विज्जि, C विज्जं <sup>१२</sup> M विमा <sup>१३</sup> M आसवत्स

( ६७—भद्रावुधमाणवपुच्छा ५।१३ (१२) )

ओकं<sup>१</sup>जह तण्ह<sup>२</sup>च्छिदं अनेजं (इच्चायस्मा भद्रावुधो) ,

नदिजह<sup>३</sup> ओधनिण्ण विमुत्त ।

कप्पजह अभियाचे सुमेध ,

मुत्तवान नागस्स अपनमिस्सन्ति<sup>४</sup> इतो ॥१॥

नाना जना जनपणेहि संगता , सव धीर<sup>५</sup> वात्थं अभिक्खमाना ।

तेस सुध सायु वियाकराहि , तथा हि ते विदितो एस घम्मो ॥२॥

आदाननण्ह विनयय सब्ब (भद्रावुधाति भगवा) ,

उद्ध अघो तिरिय चापि<sup>६</sup> मज्झे ।

य य हि लोक्किस्मि<sup>७</sup> उपादियन्ति

तेोव मारो अवेनि जन्तु ॥३॥

तस्मा पजान न उपादियेय , भिक्खु सतो किञ्चन सब्बलोके ।

जादानसते इति पेक्खमानो , पज इम मच्चुधेय्ये विसत्तज्जि ॥४॥

भद्रावुधमाणवपुच्छा निठिठ्ठा ।

( ६८—उदयमाणवपुच्छा ५।१४ (१३) )

क्षायि विरजमासीन (इच्चायस्मा उदयो) वतकिच्चं अनासवं ।

पारागु सत्त्वधम्मान अत्थि पण्हेन आगम ।

अञ्जा<sup>१</sup>विमोयल पनूहि अविज्जाय पमेदन ॥१॥

पहान कामच्छदान<sup>२</sup> (उदयानि भगवा) दोमनस्सान धूभयं ।

धीनस्स च<sup>३</sup> पनूदन<sup>४</sup> बुत्तकुच्चान निवारणं ॥२॥

उपेक्खा<sup>५</sup> सतिसमुद्धं घम्मतक्खपुरेजवं ।

अञ्जाविमोयल पनूमि अविज्जाय पमेदन ॥३॥

किं<sup>६</sup> सु सयोजनो लोको किं सु तस्स विचारणं<sup>७</sup> ।

स्मिस्स विण्णानेन निव्वाण इति बुज्जति ॥४॥

<sup>१</sup> M ओपं <sup>२</sup> C कण्हं <sup>३</sup> M नदिज्जहं, कप्पज्जहं

<sup>४</sup> M अपनमिस्सन्ति <sup>५</sup> M धीर <sup>६</sup> C M वात्थं <sup>७</sup> M °स्मि

<sup>८</sup> M °धेय्य <sup>९</sup> M अञ्जविमोयल, अञ्जं <sup>१०</sup> M कामच्छदानं <sup>११</sup> C,

M नास्ति <sup>१२</sup> M, Fsb-पनूदनं <sup>१३</sup> C उपेक्खां <sup>१४</sup> M किं

तस्याधिकं मनुजं पेक्षामाणा (विगिष्यामि भगवा),

मन्त्राय जातं जरमा परेते ।

तस्मा तुव विगिष्या अण्मत्तो,

जहन्सु नष्टं अपुत्रमन्त्रायामि ॥४॥

विगिष्यामणवपुच्छा निडिठता ।

( ७२—पारायणसूक्त ५।१८ )

इमंयाव मया मयधेसु विहन्तो पामागन्ते चेतिमे, परिवारक<sup>१</sup> सोऽयान  
ब्राह्मणानि जन्विहो पुद्गो<sup>२</sup> पुद्गो<sup>३</sup> पन्हे व्यावामि<sup>४</sup> । एवमवस्तव<sup>५</sup>  
पन्हेम अतथ अज्जाय धम्म<sup>६</sup> अज्जाय<sup>७</sup> धम्मामनुधम्म पन्निज्जेय गच्छम्येव  
जरामरणस्म पार । पारममनीया इमं धम्मामि तस्मा इमस्म धम्मपरिवापस्म  
पारायण स्वव अरिवत्तनं ।

अजिता तिस्रसप्तम्यो पुण्णवो अथ मत्तम् ।

घानवो उपसीवो च नत्ता च मय हेमवो ॥१॥

सोऽय्येवणा दुभया जातुरण्णो च पण्डितो ।

भद्रादुधो उर्यो च पात्तागो चरि ब्राह्मणो ।

मोषराजा च मघावी विगिया च मन्त्र इमि ॥२॥

एत बुद्ध उपागच्छ<sup>८</sup> मपन्नवरणे इमि ।

पुच्छता निपुण पन्हे बुद्धमद्द उपागम् ॥३॥

तैस बुद्धो व्यावामि<sup>९</sup> पन्हे पुन्धो ययातय ।

पन्हान वेम्यावरणन तातेसि ब्राह्मणे मुनि ॥४॥

त तामिता चकगुमता बुद्धेगाच्चिवधुना ।

ब्रह्मचरियमचरिमु<sup>१०</sup> वरपन्जस्स सन्तिरे ॥५॥

एवमवस्तव पन्हेम यया बुद्धन देमित ।

तया या पन्निज्जेय गच्छे पार अपारतो ॥६॥

अपारा पार गच्छम्य भावेन्ता मय्यमुत्तम ।

मग्गो सो<sup>११</sup> पा मनाय<sup>१२</sup> तस्मा पारायण इमि ॥७॥

<sup>१</sup>C Fsb-<sup>०</sup>वारक<sup>०</sup> <sup>२</sup>M नास्ति <sup>३</sup>M पन्हे व्यावामि <sup>४</sup>M  
नास्ति <sup>५</sup>M नास्ति <sup>६</sup>M <sup>०</sup>गच्छ <sup>७</sup>M व्या<sup>०</sup>Fsb-विद्याकाति <sup>८</sup>Fsb-  
वेम्याकरणे <sup>९</sup>M अजा<sup>०</sup> <sup>१०</sup>C Isb (सो) <sup>११</sup>C पारम<sup>०</sup>

पारायणमनुगायिस्तं (इच्छायस्मा विगियो )

यथा<sup>१</sup> अद्विगं तत्र अवयामि<sup>२</sup> विमलो भूरिमेघतो ।

निस्सामो<sup>३</sup> निम्बनो<sup>४</sup> तायो<sup>५</sup> त्रिस्त हतु मुखा<sup>६</sup> भजे ॥८॥

पहीनमलमोहस्तं गानमकल्पप्रायिनो ।

हृन्दाहं चित्तयिग्यामि गिरं यण्णूपमहितं ॥९॥

तमोनुदो बुद्धो समन्तचक्षुः, लोचन्तगू सम्भवनियतो ।

अनासयो सम्बदुषतप्यहीनो, मन्त्रहृयो ब्रह्म<sup>७</sup> उपासितो मे ॥१०॥

दिवा यथा कुम्भनक पहाय, बहृष्क<sup>८</sup> वाननं आवसेय्य ।

एवमहं अप्यन्ते<sup>९</sup> पहाय, महादाधं रितरिवज्जपतो<sup>१०</sup> ॥११॥

य ज्ञे पुनरे प्रियायसु दुरं गोतमसासना 'इच्छासि, इति भविस्सति' ।

सद्य त इतिहीनिहं सद्य त तक्कयण्डन ॥१२॥

एवो<sup>११</sup> तमनुदासो<sup>१२</sup> नो जातिमा<sup>१३</sup> सा पभकरो ।

गोतमो भूरिपञ्चाणा<sup>१४</sup> गोतमो भूरिमेघतो ॥१३॥

यो मे धम्ममदेसेसि<sup>१५</sup> सन्दिट्ठिमकालिक ।

तण्हक्खयमनीतिकं यस्म नत्थि उपमा ववचि ॥१४॥

किं नु<sup>१६</sup> तम्हा विप्पवससि<sup>१७</sup> भुहुत्तमपि पिगिम<sup>१८</sup> ।

गोतमा भूरिपञ्चाणा<sup>१९</sup> गोतमा भूरिमेघता<sup>२०</sup> ॥१५॥

यो ते धम्ममदेसेसि सन्दिट्ठिमकालिक ।

तण्हक्खयमनीतिकं यस्म नत्थि उपमा ववचि ॥१६॥

माह तम्हा विप्पवसामि भुहुत्तमपि ब्राह्मण ।

गोतमा भूरिपञ्चाणा गोतमा भूरिमेघता ॥१७॥

यो मे धम्ममदेसेसि सन्दिट्ठिमकालिक ।

तण्हक्खयमनीतिकं यस्म नत्थि उपमा ववचि ॥१८॥

पस्सामि न भनसा चक्खुनाञ्च<sup>२१</sup> रत्तिदिव ब्राह्मण अप्पमत्तो ।

नभस्समानो विवसमि रत्ति, तेनेव<sup>२२</sup> मज्झामि अविप्पवात्<sup>२३</sup> ॥१९॥

<sup>१</sup> M तथा <sup>२</sup> M यथादक्खितयावलासि Fsb-(यथा अवलासि)

<sup>३</sup> B निक्कमो निवलासो <sup>४</sup> M निप्पुनो, निम्बनो <sup>५</sup> M, N तायो

<sup>६</sup> C, M नास्ति <sup>७</sup> C, M Fsb ब्रह्म <sup>८</sup> M °दसे <sup>९</sup> M हसो

रिवज्जपतो <sup>१०</sup> C एतो <sup>११</sup> C °नुवोसीनो <sup>१२</sup> M जुतिमा <sup>१३</sup> C

धम्म देसेसि <sup>१४</sup> M न <sup>१५</sup> C °यस्सी, M °वसति <sup>१६</sup> C पुजये,

°यो <sup>१७</sup> M °णो <sup>१८</sup> C, M °सो <sup>१९</sup> M °व <sup>२०</sup> C

येनेव <sup>२१</sup> M °वासि

तदा च पात्री च माता मनी च, तांति<sup>१</sup> मे मातामातामहमा ।  
 य य न्ति वरति मूर्तिपञ्चो, य तन तेन उता-दुर्मणि ॥२०॥  
 जिगम्य म कु-र-भाभरत, ताव वायो न पन्ति<sup>२</sup> तत्र ।  
 मत्पराय<sup>३</sup> वामि तिष्ठ, मात दि म वाप्यन ता मुता ॥२१॥  
 पं गयानो<sup>४</sup> पन्ति-माता माता दानं उद्वि<sup>५</sup> ।  
 अप-ह्माणि मरुद अपतिगमपत्त<sup>६</sup> ॥२२॥  
 मया अ वानि मुत्तमदी

भद्रागुपा आश्रितानमा च ।

एवमय<sup>७</sup> त्वेति पमुच्चस्तु तद  
 गमिगमि<sup>८</sup> २<sup>९</sup> निमिम-पुप्यवार<sup>१०</sup> ॥२३॥  
 एत भिष्या पतागमि गु-रान मुनिनो ययो ।  
 विनतच्छद्वा<sup>११</sup> मबुडा अतिग पटिभावा<sup>१२</sup> ॥२४॥  
 अपिञ्च अमिञ्चाम सत्र वेति परावर ।  
 पञ्चानन्तारा सत्या पवानं पटिजा<sup>१३</sup> ॥२५॥  
 भतहीरं असदृष्य यस्म त्रिप उयमा ववचि ।  
 अदा गमिस्तामि न मज्ज्य वता,  
 एवं मं पारेदि<sup>१४</sup> अधिमुत्तित<sup>१५</sup> ॥२६॥

पारायणवगो निटिठतो ।

निटिठतो शुद्धनिपातो

अदठभणिवारपरिमाणाय माळिया ।

<sup>१</sup> C तापेत्, M नामे [Fsb-नामेन्ति <sup>२</sup> B मरेति, पलेति  
<sup>३</sup> C M °यताय <sup>४</sup> Fsb-(सयानो) <sup>५</sup> M उपत्तीव, C उपत्तीव  
<sup>६</sup> तथा Fsb-नास्ति °तिग <sup>७</sup> एव त्व <sup>८</sup> M पमुच्चस्तु, C Fsb-  
 पमुच्चस्तु <sup>९</sup> Fsb-(त्व) <sup>१०</sup> M मञ्चुप्यस्त पार <sup>११</sup> M विवट्ट<sup>१२</sup>  
<sup>१३</sup> C, M °भाणवा <sup>१४</sup> C परिजानक <sup>१५</sup> M Fsb-पधारेहि  
 नास्ति-म, C पारेहि नास्ति-म <sup>१६</sup> C Fsb-अवित्तवित्त

